Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अखिल भारतीय साहित्य परिषद्

साहित्य परिक्रमा

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास का साहित्यिक उपक्रम

चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ : ५११६
अप्रैल-मई-जून २०१४
वर्ष : १५ अंक : १

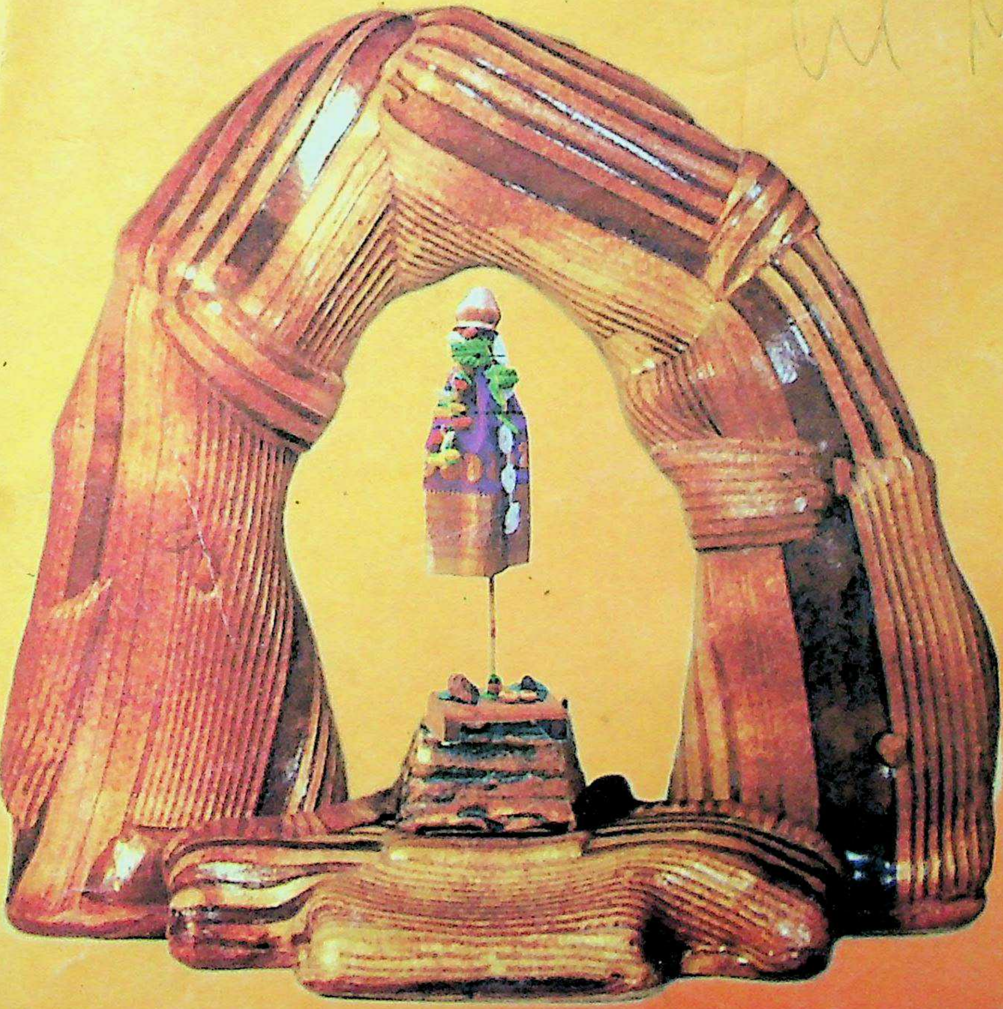

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।।ॐ साँई राम।।

जय माता दी

JAI MATA DEE SCOOTERS

सभी प्रकार के टू व्हीलर्स एसेसरीज़ एवं पार्ट्स के थोक विक्रेता

HONDA Hero BAJAJ STUDDS Castrol TVS fiem TOP

D-8, Israni Market, Hamidia Road, Bhopal

Ph : 0755-2749282,4233282

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आरएनआई डीईएल-एचआईएन २०००/३०६१

साहित्यपरिक्रमा ५७

चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ : ५११६
अप्रैल-मई-जून २०१४
वर्ष : १५ अंक : १

संरक्षक

डॉ. बलवन्त जानी

डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

ऋषि कुमार मिश्र

●

प्रबंध सम्पादक

जीत सिंह 'जीत'

●

सम्पादक

श्रीमती क्रांति कनाटे

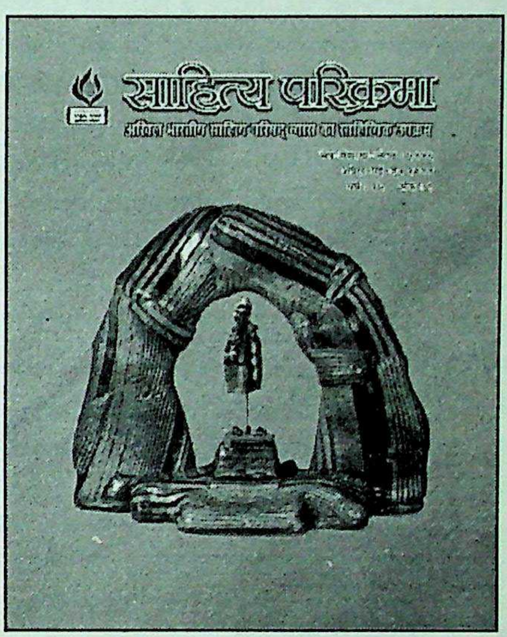

: संपर्क सूत्र :

राष्ट्रोत्थान भवन, माधव महाविद्यालय के सामने, नई सड़क, ग्वालियर - ४७४००१,
श्रीधर पराडकर, मोबाइल - ०९४२५४०७४७१, Email : shridhargovind@gmail.com

मूल्य : साधारण अंक रु. १५, दो वर्ष रु. १००, आजीवन रु. ५०० (व्यक्तिगत सदस्यता)
दस वर्षीय रु. १००० (संस्थागत सदस्यता)
शुल्क नकद/मनी ऑर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा ग्वालियर के पते पर भेजें।
बैंक ड्राफ्ट 'अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास' दिल्ली के नाम पर बनायें।

College of Education Bantalab Jammu
4471
16.12.2023

आवश्यक सूचना :

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- सभी विवाद दिल्ली न्यायालय में अवधार्य।
- सभी पद अवैतनिक, अव्यावसायिक प्रकाशन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्यपरिक्रमा ५७

चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ : ५११६
अप्रैल-मई-जून २०१४
वर्ष : १५ अंक : १

आरएनआई डीईएल-एचआईएन २०००/३०६१

पृष्ठ क्र. रचना एवं रचनाकार

: ०३ : संपादकीय

- आलेख

: ०५ : शिव-शक्ति-राम-हनुमान के संबंध और अन्तर्सम्बन्ध......डॉ. श्रीराम परिहार (डी.लिट्)

: ०९ : समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक भगवान श्रीराम......श्रीमती सुरेखा शर्मा

: १३ : जब एक भाषा मरती है तब उसके साथ उसकी संस्कृति भी लुप्त हो जाती है......विश्वमोहन तिवारी, एयर वाइस मार्शल (से.नि.)

: १६ : साहित्य विफल हो रहा जन-जागरण में......गोपीनाथ कालभोर

: १९ : हिन्दी कथा साहित्य के गत ५० वर्ष......जगदीश तोमर

: २२ : गणेशशंकर विद्यार्थी की शहादत......स्व. प्रा. भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़'

- स्वागत

: २४ : सुनीता माहेश्वरी

: २५ : अखिलेश मिश्रा

- देशाटन

: ३० : ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी......जयश्री जोशी

: ३३ : संवाद : शब्दब्रह्म के साथ......निर्झरी मेहता

- दोहे/कविताएँ/गजलें

प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे, कुलभूषण कालड़ा (३६) डॉ. सीताराम गुप्ता 'दिनेश' (३७) कृपाशंकर शर्मा 'अचूक', कुलतार कौर कक्कर (३८) केशव शरण, डॉ. 'दरवेश' भारती (३९), साहिल, डॉ. जगदीश चन्द्र वर्मा 'अनंत' (४०) डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त (४१)

- लघुकथाएँ/कहानियाँ

: ४२ : जन्म दिन, कैसे-कैसे लोग......लेखराम मृदुल

: ४३ : रिटायरमेंट......अतुल मोहन प्रसाद

: ४३ : बैक डोर......मंजुला गुप्ता

: ४५ : बुआ......बलविन्दर 'बालम'

: ४८ : अंतिम संस्कार......लोकेन्द्र सिंह

: ५२ : अधूरा सपना......रश्मिशील

- स्थायी स्तंभ

पुस्तक परिचय

: ५५ : क्रांति-गाथा......नीलमेंदु सागर

: ५७ : राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य......आनन्द प्रकाश 'आर्टिस्ट'

: ६० : साहित्य समाचार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द अक्षत, शब्द कुंकुम

हमारे यहाँ पूर्वकाल से वर्ष को जिन छः ऋतुओं में बाँटा गया है वह अनुपम भी है, अद्भुत भी और इन ऋतुओं के अनुरूप मनाए जाने वाले हमारे त्यौहारों का तो क्या कहना जिनका महत्व जानने-समझने के लिए तथा इन खुशियों का एक हिस्सा बनने के लिए आजकल विदेशी भी हमारे यहाँ इन अवसरों पर बहुतायत से आने लगे हैं क्योंकि हमारे यहाँ त्यौहार हमारी जीवन पद्धति का प्रतिबिंब हैं। प्रकृति की छटा के अनुरूप वर्षारम्भ से वर्षांत तक निर्धारित किए गए ये त्यौहार मात्र एक उत्सव या आयोजन न होकर हमारे पूरे जीवन-दर्शन का प्रतीक हैं। ये त्यौहार प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान का भी परिचायक हैं और उसके प्रति हमारी कृतज्ञता का भी। वसंत का आगमन हुआ, रंगों की बौछार लेकर आया फाग, सारे मतभेदों को भुलाने का अवसर दिया होली ने। ठिठुराती ठंड से मुक्ति मिली और हम भी अपने शब्द अक्षत, शब्द कुंकुम से नव-वर्ष के स्वागत हेतु उत्कंठित हैं।

झाँसी में १०-१२ जनवरी को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ हमारा त्रिदिवसीय चतुर्दश राष्ट्रीय अधिवेशन भी किसी उत्सव से कम नहीं था जिसे झाँसी वालों के स्नेहभरे आतिथ्य ने सदा के लिए विशिष्ट तथा स्मरणीय बना दिया। इस आनंद को द्विगुणित करता हुआ एक शुभ समाचार यह भी है कि आगामी वर्ष परिषद की स्थापना का स्वर्णजयंती वर्ष है। स्वर्णजयंती की स्वर्णिम भोर हमारी प्रतीक्षा कर रही है। हम भी अपनी लेखनी से सर्वत्र नेहरश्मियाँ बिखेरने को तत्पर हैं। इस वर्ष गत पाँच दशकों में हमने किए हुए कार्य का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाएगा, हमारी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जाएगा परंतु इन सबसे बढ़कर होगा हमारा यह संकल्प कि हम कभी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करेंगे, अन्याय के सामने हमारी लेखनी न कभी रुकेगी न ही कभी झुकेगी। यह वर्ष परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ.फतहसिंह का जन्मजयंती वर्ष है, इस अवसर पर उनके भव्य व्यक्तित्व तथा व्यापक कृतित्व पर केन्द्रित विशेषांक हेतु सभी के मूर्त सहयोग की अपेक्षा है।

इस अंक के साथ आपकी अपनी पत्रिका 'साहित्य परिक्रमा' भी पंद्रहवें वर्ष में प्रवेश कर रही है अत: इस प्रवेशांक को हमने भी समयानुरूप कुछ नवीन करने का प्रयास किया है जिसके अंतर्गत श्रीराम नवमी (८ अप्रैल) के विशेष अवसर पर डॉ. श्रीराम परिहार ने अपने आलेख 'शिव-शक्ति-राम-हनुमान के संबंध और अंतर्संबंध' में श्रीराम के अलौकिक रूप की चर्चा की है , तो प्रा. सुरेखा शर्मा ने 'समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक भगवान राम' में उनके लौकिक रूप की। २१ फरवरी को सर्वत्र 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' मनाया गया। श्री ए.वी.एम. विश्वमोहन तिवारी का लेख किसी भाषा के मरने से उस संस्कृति के मरने की चेतावनी दे रहा है। मातृभाषा के संरक्षण को यदि हमने प्राथमिकता नहीं दी तो परिणाम घातक होंगे। पिछले अंक में तथा झाँसी- अधिवेशन में प्रकाशित पुस्तक में हमने 'राष्ट्रीय अस्मिता तथा वर्तमान साहित्य' की भरपूर चर्चा की उसी परिप्रेक्ष्य में गोपीनाथ कालभोर का लेख बता रहा है कि आज साहित्य जनजागरण में विफल क्यों हो रहा है। प्रस्तुत है गत पाँच दशकों में लिखे गए उल्लेखनीय हिंदी कथा साहित्य पर जगदीश तोमर की सार्थक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चर्चा। १ मई महाराष्ट्र तथा गुजरात का स्थापना दिवस है, दोनों ही राज्यों में यह दिन किसी उत्सव-सा मनाया जाता है। 'महाराष्ट्र दिवस' तथा 'गुजरात दिन' पर विशेष सामग्री के रूप में एक ओर जयश्री जोशी मराठी के आदिकवि संत ज्ञानेश्वर प्रणीत 'ज्ञानेश्वरी' पर प्रकाश डाल रही हैं तो निर्झरी मेहता गुजराती के सशक्त आधुनिक कवि मनोज खंडेरिया की ग़ज़लों के वैशिष्ट्य की चर्चा कर रही हैं। विश्वास है कविताओं तथा कहानियों में भी इस बार जो नयापन है उसका आप स्वागत करेंगे। पुस्तक परिचय में है वरिष्ठ कवि गोविंद प्रसाद शर्मा की ऐतिहासिक मूल्य की ऐतिहासिक महाकाव्यात्मक कृति 'क्रान्ति-गाथा' (जिसमें १८५७-१९४७ के मध्य हुए क्रांतिकारियों की यशोगाथा का छंदबद्ध विवरण है) का परिचय।

नवीन वर्ष में प्रकृति के परिवर्तित स्वरूप के साथ-साथ हमारे आसपास का परिदृश्य भी प्रतिदिन परिवर्तित हो रहा है। मनुष्य अपने लक्ष्य की ओर हर दिन कितना अग्रसर हो रहा है इसका सचमुच कोई मापदंड हमारे पास नहीं है, न ही इसका हमें सही-सही अनुमान है परंतु यह तो निश्चित है कि हममें से बहुतांश एक भीड़ का, एक दौड़ का हिस्सा बनकर रह गए हैं। कभी-कभी लगता है हम जैसे चलते-चलते भटक गए हैं याकि हम भूल ही गए हैं कि चलने और भटकने में बहुत अंतर है। रुककर सोचना होगा हम गतिमान तो हैं परंतु यह गति हमें अंततः किस ओर अग्रसर कर रही है। इन दिनों मैं सागर वि.वि. से एम. टेक. की उपाधि प्राप्त कर तेईस वर्ष की आयु में दीक्षा लेने वाले मुनिश्री क्षमासागर का काव्य-संग्रह 'अपना घर' पढ़ रही हूँ और जीवन के तथा कविताओं के एक भिन्न आयाम से मेरा परिचय हो रहा है बल्कि सही अर्थ में इन कविताओं के माध्यम से अपने भीतर झाँकने का प्रयास भी हो रहा है और एक नई दृष्टि से सामना भी। इन कविताओं को पढ़कर थोड़ा रुकने को मन होता है, सोचने - ठहरने का मन होता है क्योंकि जीवन की आपाधापी में सब तो है हमारे पास बस अपने अलावा किसी के लिए स्पेस नहीं है। जीना भी अनचाहा है परंतु मरना भी कौन चाहता है। 'हम जिंदगी-भर/ जीते हैं/ कुछ इस तरह/ कि जैसे /जीना नहीं चाहते/ जीना पड़ रहा है/ और मरते वक्त/ मरते हैं/ कुछ इस तरह/ कि जैसे मरना नहीं चाहते/ पर मरना पड़ रहा है/ शायद इसीलिए/ बारंबार हमें जीवन/ दुहराना पड़ रहा है।' चलिये इस बहाने थोड़ा रुकते हैं, सोचते हैं कि अपने परिजनों को, मित्रों को, समाज को हम निरंतर कुछ दे तो रहे हैं परंतु इस देने में लेने वालों का 'चाहा हुआ कुछ' है भी या नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि दूसरों को कुछ देकर हम अपनी इच्छापूर्ति कर रहे हैं न कि लेने वाले की इच्छा-आवश्यकता पूर्ति। हम सामने वाले को यदि उसका इच्छित कुछ दे भी रहे हैं तो हमें उसका अभिमान न हो क्योंकि हर बार न तो देने वाला बड़ा होता है और न ही लेने वाला छोटा। कभी ऐसा भी होता है- 'कभी ऐसा हो/ कि देने का मन हो / और लेने वाला/ कोई करीब न हो,/ कभी हम कुछ कहना चाहें/ और सुनने वाला / कोई करीब न हो/ तब अहसास होता है/ कि देने और/ सुनाने वाले से/ लेने और सुनने वाला/ ज्यादा कीमती है।' ('अपना घर' से)।

नवीन वर्ष सभी के लिए सुखदायी-शुभदायी-मंगलकारी हो!

क्रांति कनाटे

मोबा. ०९९०४२३६४३०

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिव-शक्ति-राम-हनुमान के संबंध और अन्तर्सम्बन्ध

डॉ. श्रीराम परिहार (डी.लिट्)

श्रीराम नवमी (८ अप्रैल) पर विशेष

यह सृष्टि बहुत सुन्दर और मोहक है। अवनि-अम्बर के बीच का दृश्यमान जगत सच्चा-सच्चा वास्तविक-सा अनुभव होता है। स्वर्णिम विहान की वेला में आँखों का प्रकाश जहाँ तक फैलता है, अभिलाषाएँ नृत्य करती-सी लगती हैं। कल्पना की आँखें और दूर तक जाती हैं, बहुत दूर तक देखती हैं, सौ-सौ स्वप्न जाग उठते हैं। हमारे देखने की और स्वप्न- बुनने की भी एक सीमा है। उस सीमा के पार भी देखने लायक और जानने लायक बहुत कुछ शेष है। जिसे ब्रह्मांड कहा जाता है, वह कितना विराट किन्तु कितना अद्‌भुत है। सूर्य, चंद्र, सविता, सोम, ग्रह, नक्षत्र भरा ब्रह्मांड बड़ा रहस्यमय है। धरती और धरती के गर्भ का विस्तार-गहराई को ही ठीक-ठीक कहाँ जाना समझा जा सका है। अग्नि-सोम अहोरात्र जहाँ सृजन-यज्ञ में रत होकर ऋत् को उत्पन्न कर रहे हैं और ऋत् में अवस्थित भी हो रहे हैं। उसी ऋत् में खगोल-भूगोल भी अपने उजले-काले दिन-रात के साथ जागते-सोते गतिमान हैं। असंख्य जीव-सृष्टि कहाँ से आकर कहाँ चली जा रही है। निखिल सृष्टि में ही स्थित हमारी पृथिवी भी है। सुन्दर संतरे के समान रसभरी हमारी पृथिवी।

बुद्धि अकुलाहट से भरा प्रश्न करती है- इन दु:खों और संघर्षों से भरी सृष्टि के निर्माण के कारण-कार्य का वास्तव क्या है? जिसमें 'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध' की स्थिति पैदा होती रहती है। हृदय करुणा-कलित अधीर होकर पूछता है- यह किसकी करुणा कण-कण में पत्र-पत्र पर ज्योतित हो रही है? वह कौन 'मात: दशभुजा, विश्व-ज्योति' दसों दिशाओं में स्थित उपस्थित हो रही है? बुद्धि और हृदय दोनों सम आसन पर बैठकर संचित त्रिकुटी पर ध्यानस्थ होकर स्मितिहास के साथ प्रश्नाकुल होते हैं- यह किसका आनन्दमय लीलाभाव अखिल सृष्टि में क्षण-क्षण गतिमान हो रहा है? आनन्द का स्रोत कौन है? कौन अपने आनन्द के लिए स्वयं का आनन्दमय विस्तार करता है? प्रज्ञा के पंख नभ की नीलिमा में विलीन हो जाना चाहते हैं। वह खोजना चाहती है-नाद से उत्पन्न बिन्दु को वह जानना चाहती है- अक्षर महेश्वर को। वह समझना चाहती है- तम के पार भास्वर सत्य को। वह पाना चाहती है-

'सत्य, सच्चिदानन्द रूप, विश्राम धाम को।'

क्या सम्बोधन दे उसे? ऊँ, प्रणव, ब्रह्म, शिव आदि-आदि कह देने से भी मन नहीं भरता। ऊँ से शिव तक चिद् शक्ति का विलास है या शिव ही अनादि है। ऊँ से भी पहले और परे यह चिद् शक्ति किस रूप-स्वरूप में रहती है, बिनु अनभै के कैसे-कुछ ठोस कहा जा सकता है? 'न सन्न चासच्छिव एव केवल:'। इस वेदवाक्य का अर्थ है कि सृष्टि के पूर्व न सत् ही था और न असत्। केवल शिव था। ब्रह्म का वर्णन करते हुए वेद कहता है- 'ये भूत जिससे पैदा होते हैं, जन्म पाकर जिसके कारण जीवित रहते हैं, नष्ट होकर जिसमें प्रविष्ट हो जाते हैं, वही जिज्ञासा के योग्य है और वही ब्रह्म है।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व, तद् ब्रह्म।

श्रुति कहती है कि सृष्टि के पूर्व काल में सत् और असत् दोनों ही नहीं थे, केवल शिव था। सत् चेतन वस्तु को कहते हैं और असत् जड़ वस्तु को कहते हैं। इस संसार में दो ही तरह की वस्तुएँ हैं- चेतन और अचेतन। ये दोनों अस्तित्व में नहीं थे, तब शिव ही था। अस्तु सद्-असद् की उत्पत्ति के पूर्व शिव था। तब शिव ही जगत की उत्पत्ति का कारण होना चाहिए। सत् उसको कहते हैं, जो सदा एकरूप रहता है। असत् उसको कहते हैं, जो परिणाम के कारण नाना कालों में नाना रूप धारण करता है। चेतन अपरिणामी होने से सदा एक रूप है। वह सत् कहलाता है। अचेतन परिणामी होने से नाना रूप है। वह असत् कहा जाता है। जिस समय ये दोनों नहीं होते, वही सृष्टि-पूर्व का काल है। उस समय जो सत्ता रहती है, वही सृष्टि का कारण है। 'न सन्न चासत्'। इस काल में केवल शिव की सत्ता ही रहती है। अतः वही सृष्टि का कारण है। वेदान्त ब्रह्म को जगत का कारण बताते हैं। 'शिव' शब्द शुभतम या श्रेयस्कर वस्तु का वाचक है। ब्रह्म सर्व शुभकारी या सर्व श्रेयस्कारी है। अत: 'शिव' शब्द ब्रह्मवाचक भी है। ब्रह्म ही शिव है। इस तरह शिव को सृष्टि की उत्पत्ति का कारक मानने वाली मान्यता की संगति हो जाती है।

अनादि-अनन्त- अज-अक्षर ब्रह्म के तीन रूप माने गये हैं-'एका मूर्तिस्त्रयो देवा ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः'। ब्रह्मा, विष्णु और शिव एक ही हैं। एक ही अक्षर पुरुष के तीन स्वरूप हैं। एक ही शक्ति के तीन रूपान्तरण हैं। एक ही बिन्दु पर तीनों शक्तियाँ रहती हैं, किन्तु कार्यवश स्वरूप भेद और स्थान भेद होता रहता है। चेतन जगत में इन शक्तियों का स्थान भेद स्पष्ट है। चेतन प्राणियों में प्रतिष्ठा बल मध्य में, गति बल नीचे और अगति बल ऊपर रहते हैं। यथा- मनुष्य शरीर के अन्तर्गत हृदय-कमल में ब्रह्मा का, नाभि में विष्णु का और मस्तक पर शिव का आसन या वास माना गया है। मनुष्य शरीर पार्थिव है। पृथिवी से जो प्राण मानव शरीर में आता है, वह शरीर के अधोभाग से ही आता है। अतः आदान शक्ति के अधिष्ठाता विष्णु की स्थिति नाभि में ही कही गयी है। उत्क्रमण उससे विपरीत अर्थात् ऊर्ध्व दिशा में होना सिद्ध है। महेश्वर की स्थिति शरीर के शिरोभाग में मानी जाती है। सम्पूर्ण शरीर की प्रतिष्ठा और अस्तित्व हृदय से है। हृदय में ही एक प्रकार की स्फुरणशील तिलमात्र ज्योति अवस्थित रहती है। वहीं से सम्पूर्ण शरीर को चेतना मिलती है। अतः ब्रह्मा का आसन-स्थान हृदय है। सन्ध्योपासना में इन्हीं स्थानों में इन तीनों देवताओं का ध्यान होता है। 'राम की शक्तिपूजा' में युद्ध से लौटकर वानर-भालू वीर 'संध्या-वंदन विधान' करने सरोवर तट पर जाते हैं। शिव की स्थिति मस्तक पर है। यह श्री दुर्गा की त्वरित उदित छवि में 'निराला' संकेत करते हैं-

हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रण-रंग-राग,
मस्तक पर शंकर, पद पद्मों पर श्रद्धा भर
श्रीराघव हुए प्रणत मन्द-स्तर-वन्दन कर।

शतपथब्राह्मण (५,६/३/१/१०) में अग्नि को रुद्र कहा गया है- 'अग्निर्वै रुद्रः।' अग्नि का रुद्र है। इसके दो रुप हैं- एक घोर दूसरा शिव। अग्नि का जो रुप उपद्रावक, रोगप्रद, विध्वंसक है, उसे 'घोररुद्र' कहते हैं और जो लाभप्रद, रोगनिवारक, रक्षक है- वह 'शिव' रूप है। 'घोररुद्र' से दूर रहने, बचने की चेष्टा की जाती है। 'शिवरुद्र' की उपासना की जाती है। अग्नि में जितना 'सोम-सम्बन्ध' है, वह सर्जनशक्ति का कल्याक आधार है। रुद्र ग्यारह माने गये हैं। पार्थिव अग्नि द्युलोक वा स्वर्लोक अर्थात् सूर्यमण्डल तक व्याप्त है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उससे आगे ऊपर सोममण्डल है। अग्नि की गति ऊपर को और सोम की गति ऊपर से नीचे की ओर रहती है। अग्नि को 'शिव' और सोम को 'शक्ति' कहते हैं। 'सोम' शब्द उमा से ही बना है। 'उमया सहितः सोमः'। इसमें शक्ति 'उमा है।' शक्तिमान 'शिव' है। यह तत्व वृहद्जाबालोपनिषद्- ब्राह्मण २ में इस तरह आया है-

अग्निषोमात्मकं विश्वमित्यग्निराचक्षते।
रौद्री घोरा या तैजसी तनूः।
सोमः शक्त्यमृतमयः शक्तिकरी तनूः।

'इस चराचर जगत के आत्मा अग्नि और सोम हैं। घोर या तेजस रूप रुद्र का शरीर है। अमृतमय शक्तिदायक सोम शक्ति रूप हैं। अर्थात् 'घोरअग्नि' शिव रूप है। 'सोमअग्नि' शक्ति रूप है। विद्या-कला आदि में अमृतमय सोम रूप शक्ति ही विद्यमान रहती है। स्थूल-सूक्ष्म सर्वत्र सृष्टि में अमृतमय रस (सोम) और तेज (अग्नि) व्याप्त है। अग्नि ऊर्ध्वशक्तिमय होकर सोमरूप हो जाती है और सोम अद्यः शक्तिमय होकर अग्नि बन जाता है। इन दोनों के सम्पुट में यह विश्व अपनी संज्ञा पाता रहता है। ऊपर जाती हुई अग्नि अपनी आधार शक्ति सोम से पाती है और नीचे आता हुआ सोम शिव की ही शक्ति कहाता है। बिना शिव के आधार के वह भी नहीं रह सकता। शिव शक्तिमय है और शक्ति शिवमय। शिव और शक्ति जहाँ न हो, सृष्टि का ऐसा कोई कोना नहीं।

अग्नि से सोम और सोम से अग्नि ऊर्जस्वित होते हैं, अतः दोनों एक ही तत्व हैं। शिव और शक्ति अभेद हैं। अर्धनारीश्वर रूप शिव का यह प्रकट करता है कि शिव और पार्वती मिलकर एक अंग हैं। उमा शिव की अर्धांगिनी है। अग्नि पुरुष और सोम स्त्री माना गया है। लोकक्रम में सोम ऊपर रहता है, इससे शिव के वक्षःस्थल पर खड़ी हुई शक्ति की उपासना होती है। शिव ज्ञान स्वरूप और तेज स्वरूप हैं और शक्ति क्रिया या बल स्वरूप है। वह इच्छा का परिणाम है। क्रिया या बल ज्ञान या तेज के बल पर ही खड़ा रह सकता है। इसलिए भगवती शिव के वक्षस्थल पर चरण धारे हुए हैं। ज्ञान-इच्छा-कर्म की युति में ज्ञान की इच्छा तब ही सर्जनाकार धारण करती है, जब क्रिया की जाती है। बिना क्रिया के ज्ञान स्फूर्त नहीं हो सकता। वह 'शव' है। शक्ति की क्रियमाणता की 'शव' को शिव बनाती है। शिव विश्वरूप- विराटस्वरूप है। उस पर चिद्कलारूपा परमाप्रकृति शक्तिरूपा भगवती खड़ी है। शिव का 'विश्व' रूप 'ब्रह्म सत्य' कहता है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर का शरीर माना जाता है। मुण्डोपनिषद (२/१/४) कहती है- 'अग्नि जिसका मस्तक है। चन्द्रमा सूर्य दोनों नेत्र हैं। दिशाएँ स्तोत्र हैं। वेदवाणी है। विश्वव्यापी वायु प्राण रूप से हृदय में है। पृथ्वी पादरूप है। वह सब भूतों का अन्तरात्मा है।' 'निराला' कहते हैं-'अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर'।

राम विष्णु के अवतार हैं। वे धर्म रूप हैं। राम का रूप धर्म-विग्रह ही है। धर्म की स्थापना और मर्यादामय लीला के लिए विष्णु का रामावतार त्रेता युग में होता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव एक ही अक्षर-महेश्वर की भिन्न-भिन्न कला-संज्ञाएँ हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों अक्षर कलाओं की सृष्टि 'महेश्वर' ही है। उत्पत्ति, स्थिति और और लय की समष्टि-क्रियाएँ एक ही तत्व की तीन अलग-अलग नाम-रूप कलाएँ करती हैं। हैं ये तीनों एक और अभेद्य। परमशक्ति जब मायारूप से असीम को ससीम कर लेती है, तब अव्यय पुरुष का प्राकट्य होता है। अव्यय पुरुष की पाँच कोष-कलाएँ हैं-वाक् , प्राण, मन, विज्ञान और आनन्द 'विष्णु अपनी इच्छाशक्ति से इन पाँचों कोषों के साथ बारह कलाओं से युक्त होकर राम के रूप में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकट होते हैं और अपनी मर्यादा गाथा के माध्यम से 'नैसर्गिक ऋत्' को स्थापित करते हैं। अतः राम विष्णु के अंश हैं। विष्णु और शिव एक अखण्ड अव्यक्त सत्ता की ही पृथक-पृथक क्रियात्मक शक्तियाँ हैं। अतः प्रकारान्तर से राम और शिव भी एक ही अक्षर पुरुष के दो लीलावपु हैं। 'हरि' और 'हर' दोनों शब्द एक ही 'हृ' धातु से उत्पन्न हैं। अतः दोनों की मूल धातु (प्रकृति) एक है। केवल प्रत्यय अलग-अलग है। 'शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोस्तु हृदयं शिवः' दोनों एक-दूसरे के पूजक-पूज्य हैं। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं-

शिव बैरी मम दास कहावा, सो नर सपनेहुँ मोहि न भावा।

शंकर प्रिय, मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।

सो नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महुँ वास।।

❖❖❖❖

मंगल भवन अमंगलहारी,

उमा सहित जेहिं जपत पुरारी।

राम भानुकुल भूषण हैं। वे सूर्यवंश के वंशज हैं। सूर्य 'ऋत्' का देवता हैं। 'ऋत्' प्रकृति का अनुशासन भी है और धर्म भी है। ऋत् के अधीन जब मनुष्य और मनुष्य समाज आचरण करता है, तब वह 'धर्म' का स्वरूप ले लेता हैं। इस प्रकार 'राम' एक ओर 'नैसर्गिक ऋत्' से संपर्कित हैं और दूसरी ओर मानव समाज आचरित धर्म के संस्थापक भी हैं। राम एक ओर परात्पर ब्रह्म भी हैं और दशरथ-सुत भी हैं। 'सीता' आदि शक्ति जग-जननी भी हैं और वे जानकी तथा राम की भार्या भी हैं। 'जनक सुता जग जननि जानकी, अतिशय प्रिय करुणानिधान की।' 'राम की शक्तिपूजा में राम प्रिया सीता के उद्धार के लिए पुरुषार्थ करते हैं। राम का पुरुषार्थी और प्रिया उद्धारक मन कभी हारा नहीं। कभी थका नहीं। 'जानकी! हाय उद्धार प्रिया का न हो सका। वह एक और मन रहा राम का जो न थका। जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय, कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय।' शक्ति की 'मौलिक कल्पना' और 'आराधन का दृढ़ आराधन से उत्तर' देने का यह पुरुषार्थ का सात्विक रूप है। राम अपने सौन्दर्य और शील से शक्ति का आवाहन कर धर्म की सम्पूर्णता और मानव की मर्यादा की विभूति बन जाते हैं।

अंजनी-सुत हनुमान राम के परम भक्त हैं। पवनपुत्र का सत्संगी रूप बड़ा मनभावन है। वे कनक भूधराकार भी हैं। वे अतुलित बलधामं, हेमशैलाभदेहं, ज्ञानिनामं अग्रगण्यम् हैं। वे सकलगुण निधानं, वानरयूथं मुख्यम् हैं। रघुपति के प्रिय भक्त हैं। दो ध्रुवीय वह्नि धक-धक कर प्रकट होती है। परम पराक्रम और प्रशांत शांति एक ही जीवन-वपु में संचरित-समाहित है। रामभक्त हनुमान एकादश रुद्र माने जाते हैं। शिव से ही अग्नि और सोम की उत्पत्ति है। अग्नि ही रुद्र है। अग्नि की तीन अवस्थाएँ होती हैं- अग्नि, वायु और आदित्य। अग्नि के सहचर आठ वसु हैं। वायु के सहचर 'एकादश रुद्र' हैं। आदित्य के सहचर 'द्वादश आदित्य' हैं। अतः अग्नि आठ रूपों में, वायु ग्यारह रूपों में और आदित्य बारह रूपों में सृष्टि में व्याप्त है। 'सोम' की भी तीन अवस्थाएँ हैं- सूक्ष्म दशा में 'सोम', किंचित घन होने पर 'वायु' और अधिक घन होने पर 'अप्' कहा जाता है। सूर्य से ऊपर का परमेष्टिमण्डल 'अप्लोक' या 'सोमलोक' कहलाता है। अग्नि की अवस्था का वायु 'आग्नेयवायु' और सोम की अवस्था का वायु 'सोमवायु' कहा जाता है। पृथ्वी और सूर्य के मध्य में जो अन्तरिक्ष है, उसमें आग्नेय वायु प्रसरणशील रहता है। सूर्य से ऊपर परमेष्ठिमण्डल तक 'सौम्य वायु' का प्रसार है। यही आग्नेय वायु भौतिक वायु और भौतिक अग्नि को उत्पन्न करता है। श्रुति में कहा गया है- 'मरुतो रुद्रपुत्रासः'। मरुत रुद्र के पुत्र हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम शिव के आराध्य हैं। शिव निरंतर राम को जपते हैं। हनुमान एकादश रुद्र हैं। शिव से अग्नि, अग्नि से रुद्र, रुद्र से मरुत, मरुत से हनुमान का संबंध है। आग्नेय वायु या अग्निरुद्र या घोररुद्र का निवास अन्तरिक्ष में है। राम के नेत्रों से आँसू टपके और वे आँसू 'युग 'अस्ति-नास्ति' के एक रुप-गुण-गण अनिन्ध' युगल चरणों पर गिरे। उन्हें देख पवनपुत्र का 'आग्नेयवायु' रूप साकार हो उठा। शिव अपने आराध्य को संकट में नहीं पा सकते। मारुतसुत शिव का ही एकादश अंश हैं। वे अपने पिता पक्ष से उनचास पवन का सहचर पाकर रुद्र से रौद्र रुप में दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल सक्षम और समर्थ बढ़ते जाते हैं। 'वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश पहुँचा, एकादश रुद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।' शिवदेवी को मन्द स्वर में सचेत करते हैं। बात और खुलती है। वास्तव और साफ-साफ उजागर होता है कि यह वानर नहीं है, यह अपना ही तेज है। 'सम्वरो देवी, निज तेज, नहीं वानर यह।' देवी भगवती से शिव अद्भुत बात कहते हैं यह राम की अर्चना ही मूर्तिमान अक्षय-शरीर रुप महाकाश हो गयी हैं। शिव-शक्ति, राम-हनुमान ज्योर्तिमय महानिलय के मध्य शतशीर्षा, सहस्राक्ष, शतेषुधि रूप में स्थित हैं। शिव रघुनन्दन- कूजित महावीर के शत-वायु-वेग-बल को अनुमान कर वास्तविक मूल स्वरूप स्फुरित कर देते हैं-

चिर ब्रह्मचर्य-रत ये एकादश रुद्र, धन्य,
मर्यादा-पुरुषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य।

इतना कुछ कहने के बाद भी उस अक्षर महेश्वर के चारों रूपों-शिव-शक्ति, राम-हनुमान के रूप-गुण का वर्णन पार्थिव जिह्वा और मोह विजड़ित बुद्धि से कैसे दिया जा सकता है। जिसे वेदों ने 'नेति-नेति' गाया है, उसे 'वह ऐसा ही है,' 'वह ऐसा ही है,' यह कैसे कहा जा सकता है। अत: यही विनय है-

आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वर।।

✓ आजाद नगर
खण्डवा-४५०००१

❖❖❖

डॉ. फतहसिंह विशेषांक

वर्ष २०१४ परिषद के पूर्व अध्यक्ष, भाषाचिंतक तथा वैदिक वाङ्मय के भाष्यकार डॉ. फतहसिंह का जन्मशताब्दी वर्ष है एतद **'साहित्य परिक्रमा'** के **डॉ. फतहसिंह विशेषांक** हेतु उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विविध आयामों पर केन्द्रित लेख/आलेख (अधिकतम शब्द सीमा दो हजार, समय सीमा ३० मई) आमंत्रित हैं। कृपया मेल द्वारा टंकित लेख पीडीएफ में भेजें, स्केन द्वारा भेजे गए हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किए जाएँगे, हस्तलिखित लेख डाक द्वारा ही प्रेषित करें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक भगवान श्रीराम

•

श्रीमती सुरेखा शर्मा

श्रीराम नवमी पर विशेष

''सिया राममय सब जग जानी
करहूँ प्रणाम जोरि जुग पानी।''

आज तुलसीदास जी का रामचरित मानस घर-घर पहुँच चुका है। इस ग्रंथ के दोहे-चौपाइयाँ हर नर-नारी की वाणी पर विराजमान हो चुके हैं। दशरथनंदन राम भारतीय वाङ्मय के ऐतिहासिक चरित्र हैं। वे जनमानस की आत्मा हैं। वे जननायक ही नहीं, जन चेतना के केन्द्र बिंदु हैं। वे सुरनायक होते हुए भी, जन 'सुखदायक' हैं। अपनी प्रतिज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करने वाले 'प्रनतपाल' हैं।

महाकवि वाल्मीकि जी ने आदि-रामायण की रचना की। उन्होंने इस काव्य की रचना तीन प्रमुख कथाओं को लेकर संपूर्ण की। पहली कथा अयोध्या की, दूसरी रावण की और तीसरी कथा किष्किंधा के वानरों की जो निश्चय ही वहाँ की वन्य जातियों में परम्परित रही होगी। इस प्रकार से रामायण की रचना की।

लाखों वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम इस धरा पर अवतरित हुए थे। आज फिर भारत को वैसे ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की आवश्यकता है। आज पुनः आवश्यकता है हर भारतवासी एक बार फिर पूर्ण श्रद्धा से श्रीराम को हृदय में धारण करें। 'श्रीरामचरित मानस' ने अभूतपूर्व साहित्यिक रचना के साथ-साथ भारतीय जनमानस को इतना प्रभावित किया है, उतना किसी अन्य ग्रंथ ने नहीं किया। यदि आज का मानव उनके गुणों को अपनाकर चले तो वह एक सभ्य व सुंदर समाज का निर्माण कर सकता है। जहाँ कोई छोटा-बड़ा तथा ऊँच-नीच का भेद ना हो। इस प्रकार रामचरित्र आज वर्तमान युग की आवश्यकता है। यदि मानव रूप में ईश्वर अपने गुणों का बखान करे तो उस प्रभु का मानव रूप में अवतार क्या सार्थक हो जाएगा? इस प्रकार भगवान श्रीराम का चरित्र एक विशेष पद्धति का आधार है। जिसमें ईश्वरत्व की भावना के साथ एक सामाजिक व्यक्ति के चरित्र को यथार्थ में दिखाता है। जिसका उदाहरण है- श्रीराम का गंगा पार जाना। उन्होंने ईश्वरीय शक्ति का आश्रय नहीं लिया। क्या वे गंगा पार नहीं कर सकते थे। लेकिन वे केवट की बातें सुनते रहे। कवितावली में भी वर्णन मिलता है कि-

एहि घाट ते थौरिक दूर अहे,
कटि सौ जल थाह दिखाई हौ जू।

अर्थात् यदि आप अपने पाँव धुलाना नहीं चाहते हो तो इसका दूसरा उपाय भी है जहाँ कमर तक जल है, जहाँ से आप पैदल पार कर सकते हैं। श्री राम की यह मर्यादा प्रियता ही थी कि जब वे केवट से बात करते हैं तो एक ईश्वर या राजपुत्र के रूप में नहीं अपितु एक साधारण मानव के रूप में। उन्होंने निश्चय किया है कि गंगा पार करनी है, लेकिन उसी तरीके से जैसे साधारण मानव पार करता है इसलिए उन्हें केवट की बात को मानना ही पड़ेगा। केवट स्पष्ट रूप से कहता है कि अगर आपको गंगा पार करनी है तो चरण धुलवाने ही पड़ेंगे।

जो प्रभु पार अवसि गा चहहू
मोहिं पद पदुम पखारन कहहू।

श्रीराम कहते हैं

'बेगि आनि जल पाय पखारू
होत विलम्बु उतारहिं पारू।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केवट को श्रीराम के ईश्वर रूप में अहिल्या उद्धार की वजह से पूर्ण विश्वास था कि प्रभु उसकी बात अवश्य मान लेंगे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'मानस' में ईश्वर को आदर्श मानवीय चरित्र के रूप में प्रकट किया है ताकि समाज को उस मानवीय चरित्र को अपनाने में कोई कठिनाई न हो। राम के चरित्र में साधारण व्यक्ति के मन को द्रवित करने की जैसी क्षमता है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उनके जीवन में आदर्श और व्यवहार का ऐसा ऊँचा मानदंड कायम हुआ है कि देश तथा काल की सीमाओं को लांघकर वह सदैव मानव जाति को प्रेरणा देता रहेगा।

कलियुग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम ही पार लगाने वाला है। 'राम' नाम का महत्व भगवान राम से भी अधिक है। राम-नाम जपने वाला भक्त भगवान को अपने वश में कर लेता है। 'राम' दो अक्षर का होते हुए भी महामंत्र है। यदि इसका उच्चारण श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक किया जाए तो मानव का कल्याण हो जाता है। मानस में भी लिखा है कि राम के नामकरण के समय गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं- 'जो आनन्द सिन्धु सुखरासी सीकर ते नैलोक सुपास

जो सुख-धाम राम अस नामा,
अखिल लोक दायक विश्रामा'

राम सच्चिदानन्द पुरूष हैं जो विपत्ति में प्रकट होते हैं। वह मानवीय मर्यादाओं एवं आदर्शों के प्रतीक हैं। अतः उनके नाम में अनन्त प्रवाह है, जिसमें डूबना आनन्द का पान करना है। राम का नाम मानवता को सद्राह पर ले जाने का सरल व सीधा रास्ता है। राम के नाम की महिमा के साथ-साथ राम कथा श्रवण भी जीवन में लाभदायक है। गोस्वामी जी ने लिखा है-

राम-कथा शशि किरन समाना
संत चकोर करहिं जो पाना
राम-कथा सुनकर करतारी
संशय विहग उड़ावन हारी।

'राम' नाम के प्रताप से ही परम भक्त हनुमान जी को आठों सिद्धियाँ नव-निधि प्राप्त हुई थी। 'र' का अर्थ तत् (परमात्मा) 'म' का अर्थ त्वम् (जीवात्मा) है और 'आ' की मात्रा (ा) 'असि' का द्योतक है। राम-नाम की महिमा करते हुए तुलसी दास जी लिखते हैं- "राम-नाम मनि दीप धरूँ, जीह, देहरी द्वार

तुलसी भीतर बाहरेहुँ,
जो चाहसि उजियार।

राम-नाम के प्रताप से पत्थर तैरने लगे, राम-नाम के सहारे हनुमान पर्वत उठा लाए, राम-नाम से ही सीता जी अपना सतीत्व बचा सकी। अतः तुलसी जी के अनुसार कलिका मन धो डालने के लिए राम-नाम जपो। अतः भक्त वत्सल श्रीराम के नाम का स्मरण करने, कीर्तन करने, भक्ति में लीन होने से भक्तों में उनके गुण समाहित हो जाते है जैसे-

"उलटा नाम जपत जग जाना
वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।"

इसीलिए कहा है **"राम से बड़ा राम का नाम।"** रावण के संहारक श्रीराम आज भी प्रासंगिक हैं। देखा जाए तो उस काल से भी अधिक। आज भारत में फिर राम की आवश्यकता है अर्थात् उन्हीं गुणों व आदर्शों की आवश्यकता है। जिन्हें ग्रहण कर व्यक्ति संघर्षों का सामना कर मानवता के शत्रु का संहार कर सकता है। वह संसार में सूर्य के समान तेजस्वी होकर मानवता का ऊर्जास्रोत बनें। आज अन्याय, आतंक, अराजकता व अत्याचार का नाश करने के लिए बालि का वध करें। 'श्रीराम चरित मानस' ने भारतीय जनमानस को जितना प्रभावित किया है उतना किसी अन्य ग्रंथ ने नहीं। यदि हम रामचरितमानस का अनुकरण करें तो स्वस्थ एवं सुन्दर समाज का निर्माण कर सकते हैं। राम की अर्थनीति आज के इस अर्थप्रधान युग में अपनायी जाए तो समस्याएँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं।

आधुनिक समाज परिवार विघटन के श्राप से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रसित हो चुका है। संयुक्त परिवार अब देखने को नहीं मिलते। जबकि संयुक्त परिवार परम्परा सुरक्षा कवच के समान है। रामचरित्र संयुक्त परिवार परम्परा को पूर्ण रूप से महत्व प्रदान करता है। जैसे-जैसे आज हम राम को भूल रहे हैं समाज में उच्छृंखलता व्याप्त हो रही है। परिवार और समाज बिखर रहे हैं। एकता और सामंजस्यता समाप्त होती जा रही है। भाई-भाई का दुश्मन हो रहा है। ऐसी स्थिति में श्रीराम चरित्र ही लोकमंगल, लोकरक्षण, लोकरंजन व लोककल्याण की भावना उत्पन्न कर सकता है। श्रीराम के आदर्श समाज में परिवर्तन ला सकते हैं।

'राम' का अर्थ ये नहीं कि हम उन्हें आराध्य देव मानकर उनके सामने माथा टेक कर धूप-अगरबत्ती से उन्हें पूजते रहें बल्कि 'राम' का अर्थ है मानवता, मर्यादा, शौर्य, पराक्रम, त्याग, देशानुराग को अपनाना। राम का अर्थ है समग्र मानव जाति का 'हित-चिंतक'। मानस में एक प्रसंग आता है-

''अनुज वधू, भगिनी, सुत नारी
सुनु सठ कन्या सम ए चारि,
इन्हहिं कुदृष्टि, विलोकइ जोई
ताहि वधे कछु पाप न होई।''

लेकिन आज समाज में प्रतिदिन ऐसी घटनाएँ हो रही हैं लेकिन उनकी हत्या तो दूर उन्हें कोई दंड भी नहीं मिलता, जिसके कारण अनाचार, व्यभिचार बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए कल से भी कहीं अधिक 'श्री राम' की प्रासंगिकता आज है। राम समान चरित्र की आज के समाज के लिए अति आवश्यकता व सार्थकता है।

राम का व्यक्तित्व कई पक्षों में विभक्त होकर भी अद्वितीय नजर आता है। वे पुरुषोत्तम उच्च आदर्शों व मर्यादाओं के पालक हैं। आज राम सबके कंठहार हैं। घर-घर में मानस की चौपाई, दोहा, छंद का गायन हो रहा है। ये पर्व-उत्सव जहाँ हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं। वहीं इनके मूल में हमारी आस्थाएँ, परम्पराएँ भी जुड़ी हुई हैं। अधर्म पर धर्म की जीत का पर्व देश में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल दशमी तक आस्था, विश्वास व विभिन्न रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। इसी स्तुति के साथ-

''निसिचर विहीन करहुँ मही,
भुज उठाइ पन कीन्ह,
सकल मुनिन के आश्रमन्हि,
जाइ-जाइ सुख दीन्ह।''

अतः यह राष्ट्र का आह्वान है कि राम दुष्ट अत्याचारियों से भारत की रक्षा करने हेतु अपनी भुजा उठाकर प्रतिज्ञा करें। श्रीराम चरित्र एक सेतु की तरह है जो हमें ऐसा मार्ग दिखलाते हैं जिस पर चलकर हम महान उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

(हिंदी/संस्कृत विभाग)
६३९/१०-ए, सेक्टर-
गुड़गांव (हरि.) १२२००१
०९८१०७१५८७६

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब एक भाषा मरती है तब उसके साथ उसकी संस्कृति भी लुप्त हो जाती है

•

विश्वमोहन तिवारी, एयर वाइस मार्शल (से.नि.)

प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी कौरे बिन्स 'साइंटिफिक अमैरिकन माइंड' पत्रिका में लिखते हैं कि विश्व में लगभग ७००० भाषाएँ हैं- और प्रत्येक माह दो भाषाएँ मर रही है! और इनके साथ संततियों द्वारा निर्मित सांस्कृतिक ज्ञान भी लुप्त हो रहा है, और मन मस्तिष्क का वह रहस्य भी कि उसे शब्दों से प्यार क्यों है, जो कि दुबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता।

'लिविंग टंग्ज इंस्टिट्यूट फार एन्डेन्जर्ड लैन्गवेजेज' इन सैलम, ओरेगान के भाषा वैज्ञानिक डेविड हैरिसन तथा ग्रेग एन्डरसन कहते हैं कि 'जब लोग अपने समाज की भाषा में बात करना बन्द कर देते हैं, तब हमें मस्तिष्क के विभिन्न विधियों में कार्य कर सकने की अद्वितीय अंतर्दृष्टियों को भी खोना पड़ता है।' आगे एन्डरसन कहते हैं कि 'लोगों को अपनी भाषा में बात करते हुए उन्हें वास्तव में अपने इतिहास से पुन: सम्पर्क करते देखने में जो संतोष होता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।' यह निश्चित ही हमारे मस्तिष्क की कार्य विधि तथा मातृभाषा के बीच गहरे संबन्ध को तथा उसका हमारे जीवन पर पड़ रहे प्रभाव को दर्शाता है।

पिछले कुछ वर्षों में हुए अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि जब हम अपनी मातृभाषा सीखते हैं तब एक सोचने की विधि भी सीखते हैं जो हमारे अनुभवों को ढालती है।

मैन्चैस्टर विश्व विद्यालय के भाषा विज्ञान तथा संस्कृति स्कूल के अवैतनिक अनुसंधान फैलो गाई डायश्चैर ने एक पुस्तक लिखी है - ''भाषा- चश्मे से देखते हुए : अन्य भाषाओं में विश्व अलग क्यों दिखता है?'' वे प्रश्न करते हैं, क्या भाषा, सर्वप्रथम तथा सर्वोपरि, एक सांस्कृतिक निर्मिति है ?'' या कि यह मुख्यत: मानव के जैव विज्ञान द्वारा निर्धारित की जाती है?'' गाई डायश्चैर ने अपनी पहली पुस्तक ''द अनफोल्डिंग आफ लैन्वैजेज'' में दावा किया था कि भाषा एक सांस्कृतिक निर्मिति है। अपनी नई पुस्तक में वे जैव विज्ञान पर अधारित भाषा के सिद्धांतों पर और भी अविश्वास पैदा करते हैं।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक रोमन जैकब्सन ने भाषाओं में अन्तर समझाने के लिये एक जगमगाते हुए तथ्य की ओर इंगित किया है : ''भाषाओं में अनिवार्य अंतर इससे स्पष्ट होता है कि उन्हें अवश्य ही क्या अभिव्यक्त करना चाहिये न कि वे क्या अभिव्यक्त करती हैं।'' यह कथन मातृभाषा की सही शक्ति दर्शाता है। यदि हमें भिन्न भाषाएँ भिन्न विधियों से प्रभावित करती हैं, तब यह इसलिये नहीं है कि वह भाषा हमें क्या सोचने की अनुमति या सुविधा देती है, वरन यह कि वह हमें अधिकतर क्या सोचने के लिये बाध्य करती है।

यदि हमें कोई यह बतलाए कि वह आज शाम अपनी 'कजिन' के साथ शाम बिता रहा है; तब भारतीय (फ्रैन्च, जर्मन आदि भी) सोच सकता है कि यह कजिन पुरुष है या महिला, और वह चचेरी है या ममेरी या बुआ की तरफ से है। यदि आप उस अंग्रेज से पूछेंगे भी तब वह यह उत्तर भी दे सकता है इससे आपको कोई मतलब नहीं। इंग्लैण्ड में कोई भी ऐसे प्रश्न नहीं करेगा। वहां शायद वे इसे नितांत निजी व्यवहार मानेंगे, या अन्य के व्यवहार में अनावश्यक दखलंदाजी। हम सांस्कृतिक प्रभाव के कारण बहुत से व्यवहार सीख जाते हैं जो हमें स्वाभाविक लगते हैं और यह सब भाषा में दिखता है, उसके द्वारा आता है। भाषा तथा संस्कृति में अटूट तथा गहरा संबन्ध है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरी तरफ, अंग्रेजी भाषा वह कुछ बतलाने को बाध्य करती है जो शायद अन्य भाषाएँ न करें। यदि अपने पड़ोसी के साथ मैं 'डिनर' (ब्यालू) की बात बतलाना चाहता हूं, तब मैं अपने पड़ोसी का लिंग चाहे न बतलाऊं, किन्तु मुझे उसके समय के विषय में अवश्य ही कुछ बतलाना होगा। मुझे बतलाना होगा कि - we dined, have been dining, are dining, will be dinning इत्यादि। जब कि चीनी भाषा में उस कार्य के समय को बतलाने की कोई भी बाध्यता भाषा की तरफ से नहीं होती, क्योंकि वही क्रिया का रूप सभी कालों के लिये होता है। वह स्वतंत्र है चाहे तो समय की जानकारी भी दे सकता है, किन्तु अंग्रेजी में बतलाना ही होगा।

मैं एक घटना का इसी प्रसंग में वर्णन करना चाहता हूँ। बात उन्नीस सौ साठ के प्रारंभिक वर्षों की है। अमेरिकी उस समय भारत से मेंढकों के निर्यात का प्रयत्न कर रहे थे और उन्हें सभी प्रदेशों से ना ही मिल रही थी। तब उन्होंने (अपने शत्रु) केरल के मुख्य मंत्री नम्बूदरी पाद से बात की। वे समझ गए थे कि हिन्दू मुख्य मंत्री धार्मिक भावनाओं के कारण ऐसी अनुमति नहीं देंगे। और केरल के मुख्य मंत्री ने वह अनुमति दे दी। मुख्य मंत्री को मिलियन्स डालरों की आमदनी हुई, किन्तु उस चावल के कटोरे की फसल बरबाद हो गई। तब उन्हें शायद कुछ समझ में आया। हमारी संस्कृति में पारिस्थितिकी (एकोलोजी), पर्यावरण , प्रकृति संरक्षण, सर्वमंगल की भावना सदा ही निहित रहती है। देवताओं के वाहन चाहे वह लक्ष्मी का उल्लू हो, या सरस्वती का हंस, या गंगा जी का घड़ियाल या उनके अलंकरण हों - चाहे शंकर जी का साँप हो या कृष्ण जी का मकराकृति कुण्डल, सभी में प्रकृति संरक्षण का वैज्ञानिक संदेश है। एक और उदाहरण हिन्दी भाषा में निर्जीव वस्तुओं के लिंग का है जो निर्जीव वस्तुओं के साथ संवेदनशीलता सहित व्यवहार करने का संदेश देता है। तभी तो पृथ्वी हमारी माता है।

जब भाषा किसी को जानकारियों को एक विशिष्ट रूप में ही देने के लिये बाध्य करती है, तब वह उसे उन कुछ विवरणों के प्रति तथा कुछ अनुभवों के विशेष रूप से अवलोकन करने के लिये बाध्य करती है, जिन के लिये अन्य भाषा में वह विशेष अवलोकन आवश्यक न हो और यह भाषा की बाध्यता बचपन से ही कार्य करती है, ऐसा अवलोकन या भाषा उसका स्वभाव बन जाता है जो उसके अनुभवों, दृष्टिकोणों, भावनाओं, सहचारिताओं, स्मृतियों और यहाँ तक कि उसकी जीवन दृष्टि को प्रभावित करता है।

किन्तु क्या इस अवधारणा के लिये कोई प्रमाण हैं? ताजे प्रयोगों ने दर्शाया है कि व्याकरणीय लिंग के उपयोग करने वालों की वस्तुओं के प्रति अनुभूतियों और सहचारिताओं पर ऐसे उपयोग का प्रभाव पड़ता है। क्या दैनंदिन जीवन में वस्तुओं के प्रति लिंग की भाषा का उपयोग उनके संवेदनात्मक व्यवहारों को तुलनात्मक रूप से और ऊँचे धरातल पर ले जाता है क्या वह पसंद फैशन, आदतों और वरीयताओं पर प्रभाव डालता है ? इस समय इसका निर्धारण मनोवैज्ञानिक की प्रयोगशालाओं में नहीं किया जा सकता। किन्तु यदि ऐसा नहीं सिद्ध हुआ तो आश्चर्य तो होगा।

ताजे तथा मेधावी प्रयोगों की शृंखला ने यह दर्शाया है कि हम रंगों तक को अपनी मातृभाषा के लैंस के द्वारा देखते हैं। उदाहरण के लिये हरे और नीले रंगों के लिये हिन्दी में (कुछ अन्य में भी) नितांत अलग शब्द हैं, किन्तु कुछ भाषाओं में उन्हें एक ही रंग की भिन्न छवियाँ ही माना जाता है। और यह समझ में आया कि अपनी भाषा जिन रंगों को निश्चित ही अलग नाम देकर अलग रंग मानने के लिये बाध्य करती है, वह हमारी रंगों के प्रति संवेदनशीलता को सचमुच परिष्कृत करती है, और हमारे मस्तिष्क भिन्न छवियों की दूरियों को अत्यंत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

लगता है आने वाले समय में अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिक प्रत्यक्ष ज्ञान के सूक्ष्म क्षेत्रों पर भाषा के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रभाव पर प्रकाश डाल सकेंगे । उदाहरण के लिये, कुछ भाषाएँ, जैसी पेरु की मैत्सीज भाषा, अपने उपयोग करने वालों को जो तथ्य वे बतला रहे हैं, वे उन्हें कैसे प्राप्त हुए भी परिशुद्ध बतलाने के लिये बाध्य करें। आप मात्र यह नहीं कह सकते, ''एक गाय यहां से गई''। आपको, एक विशेष क्रियापद का उपयोग करते हुए, यह भी बतलाना पड़ेगा कि क्या आपने उसे जाते हुए देखा था, या आपने उसके पदचिन्ह देखकर निष्कर्ष निकाला या केवल अनुमान किया कि वह तो अक्सर यहां से जाती है, या किसी से सुना था। यदि कोई कथन दिया गया जिसका प्रमाण गलत निकला तब उसे झूठ कहकर निंदित किया जाता है। उदाहरण के लिये यदि आप मैत्सीज पुरुष से पूछेंगे कि उसकी कितनी पत्नियाँ हैं; तब जब तक कि वे पत्नियां उसे आँख के सामने नहीं दिख रही हैं, वह कुछ ऐसा उत्तर देगा, ''जब मैंने पिछली बार देखा था तब दो थीं।'' चूंकि उसकी पत्नियां उस समय वहां नहीं हैं, वह उनके विषय में बिल्कुल निश्चित तो नहीं हो सकता, अतएव वह इस तथ्य को वर्तमान काल में नहीं कह सकता। क्या हमेशा सत्य के विषय में सोचने की आवश्यकता उसकी जीवन दृष्टि में सत्य तथा कार्य -कारण संबन्ध का महत्व दर्शाती है ? ऐसे प्रश्नों के अनुभवसिद्ध उत्तर प्राप्त करने के लिये हमें प्रयोग करने के लिये सूक्ष्मतर उपकरणों की आवश्यकता है।

यह सोचना तो गलत ही है कि भिन्न संस्कृतियों के व्यक्ति मूलरूप से एक ही तरह से सोचते हैं। हम दैनंदिन जीवन में सारे निर्णय क्या निगमनात्मक (डिडक्टिव) तर्कों द्वारा लेते हैं ? या आंतरिक भावनाओं, अंतर्दृष्टियों, संवेदनाओं, मनोवेगों या व्यावहारिक कौशलों के द्वारा लेते हैं? हमारे मन का व्यवहार, जैसा कि उसे हमारी संस्कृति ने बचपन से ढाला है, हमारी जीवन - दृष्टि का, और वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति हमारी संवेदनात्मक प्रतिक्रियाओं का निर्माण करता है; उनका हमारे जीवन मूल्यों, विश्वासों तथा आदर्शों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अभी हम ऐसे प्रभावों को सीधी तरह नहीं नाप सकते या उनके द्वारा उत्पन्न सांस्कृतिक या राजनैतिक भ्रमों का आकलन भी नहीं कर सकते हैं। किन्तु भाषाओं की विविधता के रहते हुए, हम बेहतर आपसी समझ के लिये कम से कम इस विश्वास पर कि हम सभी एक ही तरह से सोचते हैं, एक गंभीर प्रश्न तो कर ही सकते हैं।

हम यह तो देख ही रहे हैं कि भाषा और संस्कृति गहन रूप से, जैविक रूप से, संबन्धित हैं। आज की हमारे देश की शिक्षा पद्धति में अंग्रेजी माध्यम को प्राथमिक शालाओं से लादने की प्रवृत्ति को देखते हुए यह दिख रहा है कि भारतीय भाषाएं और उनके साथ भारतीय संस्कृति भी मृतप्राय होने वाली है। क्या हम अपनी संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं ? यदि हां तो अपनी भाषाओं की रक्षा करें। हो सकता है कि कोई प्रश्न ही करे कि पश्चिम की सफल और उत्तम संस्कृति के रहते, भारतीय संस्कृति की रक्षा क्यों करना है? इस पर आगे विचार करेंगे।

☙ **बाल विकास भारती**
ई-१४३, सेक्टर २१, नोएडा
मो. ९९५८८६४४९९

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्य विफल हो रहा जन-जागरण में

•

गोपीनाथ कालभोर

साहित्य को अवश्य ही समाज का दर्पण कहा जाता है किन्तु जिस दर्पण को हमें जनता के समक्ष उपस्थित करना है वह दर्पण समाज के समक्ष पहुँच ही नहीं पा रहा है तब हम समाज की यथार्थ छवि लोगों तक कैसे पहुँचायेंगे। आज जब अच्छा साहित्य पाठकों तक पहुँच ही नहीं पा रहा तो फिर हम किसे और कैसे जगा पायेंगे। जो साहित्य मीडिया के प्रचलन के कारण बाजार में बिक नहीं रहा, समाज में दिख नहीं रहा और आम जनता की पहुँच के बाहर है तब हम यह कैसे मान लें कि हम देश के प्रति सजग हैं और जो कुछ लिखा जा रहा है वह उपयोगी तथा लाभ पहुँचाने वाला साहित्य है। जब साहित्य सहज और सरल रूप में सबको उपलब्ध नहीं हो पा रहा है तो यह कैसे कहा जा सकता है कि देश का नागरिक प्रेरक व चेतनापूर्ण साहित्य पढ़कर भ्रष्टाचार, अनाचार तथा घोर अन्याय के खिलाफ सड़क पर आ गया हो। हाँ, यह अवश्य हो रहा है कि साहित्य के लोगों तक न पहुँच पाने के कारण मीडिया ने वह यश लूटना प्रारंभ कर दिया है जो लेखक, कवि और रचनाकार नहीं कर सकता।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि लेखक कवि अवश्य दूरदृष्टा होता है किन्तु पास की चीजें उसे दिखाई नहीं देती। ऐसा इसलिए हुआ है कि आधुनिक समय में एक-दूसरे को धोखा देने में और एक-दूसरे की टाँग खींचने में साहित्यिक संघ व समूह लगे हुए हैं। जिनके हाथों में संगठन है, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन है और जो मीडिया से जुड़े लोग हैं वे सिर्फ अपनी ही विचारधारा के लोगों को छापते हैं, पुरस्कृत करते हैं और उन रचनाकारों को दूर रखते हैं जो राष्ट्रवाद या कि राष्ट्र-प्रेम की बात करते हैं। सच्चे देशभक्त बनकर आप शहीद भी हो जायें तो अब सरकार पर असर नहीं होता, परन्तु दो-चार आतंकवादी छोड़कर पड़ोसी दुश्मन को खुश रखकर यदि देश को शान्ति मिलती है तो सरकार इस तरह के काम अवश्य करती है। लेखक कवि ऐसे समय मौन रहता है और मीडिया समूचे देश को घटनाओं से अवगत कराता रहता है।

कैसा अजीबोगरीब परिवर्तन है कि गलती को अच्छा माना जा रहा और अच्छे को गलत बताया जा रहा। कुछ काला हो रहा उस पर सफेदी पोत दें तो वह सुधरा हुआ माना जाता है इस बात पर विज्ञापनों में तो फौरन कीचड़ में कूदे बच्चे की माँ कहती है कि धुलाई से कीचड़ छूट जायेगा। कीचड़ में कूदने को रोका जाना चाहिए कि गलती करने के बाद उसे सिर्फ सुधारने का प्रयास करने में वाशिंग पाउडर की धुलाई बतायी जानी चाहिए। किसी कपड़े पर दाग कैसे लगा यह कोई नहीं जानना चाहता बल्कि उस दाग को छुड़ाने का उपाय बताकर और प्रेरित किया जाता है कि अपने हाथ से दाग मिटाइए परन्तु डिटर्जेन्ट पावडर से। दाग लगने के कारणों पर किसी की नजर नहीं मानो, अवैध सम्बन्धों से उपजी पीड़ा को कोई समझना नहीं चाहता ना ही अवैध सन्तान को, किन्तु ऐसा करने के पश्चात भी दूसरों से संबंध बनाकर नारियाँ आज कल खुश रहती हैं। इन सारी बातों का हल अब Live Relationship के द्वारा किया जाने लगा है ताकि हारा थका इन्सान किसी से भी संबंध बनाकर उसके साथ सुखप्रद रात गुजार सकता है। है ना भारत भूमि पर विविध व्यवस्था के नये-नये उपाय।

उपरोक्त व्यवस्थाओं को देखते हुए हमें यह लग रहा है कि भारतीय मूल्यों का अवमूल्यन होता जा रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है और पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

साहित्य में इस तरह के परिवर्तन का यत्र तत्र उल्लेख मिलता भी है किन्तु पाठकों तक इसकी जानकारी नहीं पहुँच पाती है। देश के कुछ संगठन, साहित्यिक मंच, कवियों के समूह आदि मंचों से अपनी बात पहुँचाते हैं परन्तु मीडिया पर इनमें संशोधन हो जाता है। धर्म-निरपेक्षता व सर्व धर्म समभाव बनाये रखने की दृष्टि से कवियों की वे ही रचनाएँ प्रसारित की जाती हैं जो समन्वय बनाये रखने में सक्षम लगती हैं। कवि जो बात समाज के लिए कहना चाहता है उसे अनावश्यक समझ काटकर उसमें सुधार कर प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए रचना का जो असर है वह कमजोर हो जाता है। ऐसा उर्दू में नहीं होता क्योंकि उर्दू की रचनाओं का द्विअर्थी भाव शब्दों को निकाल देने या हटा देने के पक्ष में नहीं होता। दूसरी बात उर्दू के मुशायरे निरन्तर होते रहते हैं और उर्दू शायरी का खासतौर पर गजलों का द्विअर्थी भाव श्रोताओं को द्विअर्थी आनन्द प्रदान करना है, हिन्दी में ऐसा नहीं है। ईश्वरीय सत्ता और प्यार (माशूक) की सत्ता में भिन्नता है। फिर भी दैहिक प्यार का अर्थ भी ईश्वरीय प्यार का सम्बोध कराता है अतः उर्दू शायरी को श्रोता अनेक अर्थों में समझ लेते हैं।

हिन्दी के कवि सम्मेलनों से जागरण के गीतों या कविताओं का प्रसारण तो होता है परन्तु दस में से एक या दो कवि राष्ट्रीय जागरण की रचना सुनाते हैं तो अन्य आठ कवि हास्य, व्यंग्य, श्रृंगार तथा प्रेम की रचनाएँ। कहने का तात्पर्य यह है कि जो बात मंचों से कही जानी चाहिए और जिन घटनाओं का उल्लेख साहित्यकारों की रचनाओं में सीधा-सीधा होना चाहिए वह नहीं होता। हमारे रचनाकार प्रतीक और बिम्ब की भाषा में पाठकों को उलझाये रखते हैं, जिसका प्रभाव उतना जोरदार नहीं होता जितना होना चाहिए।

देश का साहित्यकार भी अनेक खेमों, वादों, विचारों, विचारधाराओं एवं राजनीतिक प्रभावों व दबावों में आकर लिख रहा है। कोई प्रगतिवादी है तो कोई मार्क्सवादी और कोई प्रगतिशील व समकालीन। जिसे जैसा समझ आ रहा वह पाठकों के लिए परोस रहा, अकादमियाँ अपनी तरह से एक बंधी बंधाई व्यवस्था में, विचारधारा में बह रही हैं। देश की विज्ञापन सुन्दरियों को जिस प्रकार कम्पनियाँ पैसा देकर उन्हें अपने मन माफिक अदाएँ दिखाने पर मजबूर करती हैं ठीक वैसे ही समाचार पत्रों में भी विचारधारा आधारित लेखकों को लिखने का अवसर पैसा देकर प्रदान किया जाता है। आज-कल तो समाचार पत्रों में साहित्य को दर किनार कर दिया गया है। बहुत हुआ तो एकाध कहानी और एकाध गजल छप जाती है, बाकी तो फिल्मों से ही पत्र भरे जा रहे हैं। कायदे की बात तो छपती ही नहीं।

इतना अवश्य हो रहा है कि समाचार पत्रों में जनता को जागरूक रखने के लिए ऐसे उदाहरण, ऐसी कहानियाँ और अनुभव छपते हैं जो भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के विपरीत जाते हैं। जब घर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक विपरीत क्रियाकलापों को ही सार्वजनिक-सहमति मिलती जा रही है तो फिर साहित्यकारों के यथार्थ लेखन को कौन महत्व दे जब कि माना यह जाता है कि साहित्यकार लोक-हित चिन्तक व लोक पथ प्रदर्शक होते हैं साथ ही लोक-कल्याण के लिए ही वे अपनी कलम का उपयोग करते हैं। हम मानते हैं कि साहित्यकार को मानवीय-मूल्यों की रक्षा हेतु अपनी लेखनी की क्षमता दिखाना चाहिए किन्तु जब पूरे देश में नैतिक व मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा हो तब साहित्यकार किस तरह लोगों को सही रास्ते पर लाने की प्रेरणा देगा। कहते हैं जब सारे मटके में ही भांग पड़ी हो तो आप स्वच्छ व पीने योग्य पानी कहाँ से लायेंगे जब जल नहीं होगा तो मजबूरन आप को भांग वाले मटके का भांग युक्त पानी ही पीना पड़ेगा।

हम देख रहे हैं कि चलचित्रों में नारियों का पहनावा सौ फीसदी पश्चिम की ओर चला गया है तब यदि हम आँचल साड़ी, घूँघट, बिन्दिया आदि की बात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करें तो नारियाँ झगड़ पड़ती हैं। उनका तो आरोप लग जाता है कि मेनका, उर्वशी जब ऐसे वस्त्र पहनती थी तो हमें क्यों रोका जाता है। इस तरह के अनेक प्रश्न समाज के सामने आजकल की नायिकायें रख रही हैं तब लेखक कवि और गीतकार भी समकालीनता का ध्यान रखकर उसी प्रकार के नाटक, फिल्म स्क्रिप्ट, संवाद और गीतों की रचना करते हैं। अब सौन्दर्य को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना शरीर की नग्नता को दिया जाता है। इसका मतलब शरीर ही आकर्षण का केन्द्र हो गया है सौन्दर्य नहीं।

साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, देश द्रोह और अराजकता पर हम अधिक ध्यान नहीं दे रहे, परन्तु हिंसा, बलात्कार, नारी उत्पीड़न, हत्या, आत्महत्या, अपहरण और मानव अधिकारों पर हमारा लेखन अधिक गंभीर होता जा रहा है। आतंकवाद राष्ट्रीय समस्या है तो बलात्कार तथा नारी उत्पीड़न सामाजिक चुनौती है। हमारा ध्यान आतंकवाद पर अधिक जाना चाहिए परन्तु हम बात कोयला व खदान घोटाले की करने लगते हैं। संसद में बात कोयला माफिया की चलती है तो दूसरे दल बिजली चोरी और आतंकवादियों की रिहाई की बात करने लगते हैं। निदान किस बात का होना चाहिए और चर्चा किस बात की होनी चाहिए यह ध्यान हमारे राजनेता तक जानते हुए भी नहीं करते।

लोकतंत्र के नाम पर धर्म और जातियाँ अपनी ढपली अपना राग गा रहे हैं और आतंकवाद को देश में ही प्रोत्साहित किया जा रहा है। हमारे नेता आतंकवादियों के पक्ष में ही वक्तव्य देते मिलते हैं। इतनी स्वतंत्रता तो हमें है कि हम स्वतंत्र रूप से लिख सकते हैं, फिर भी नेताओं का स्तर इतना नीचे गिर चुका है कि वे अपने खिलाफ लिखे किसी विरोध को सह नहीं सकते और पुलिस पर दबाव डलवाकर लिखने वाले के खिलाफ कार्रवाई करवा देते हैं। हमने देखा है हमारे देश के एक कार्टूनिस्ट को इसकी सजा भुगतनी पड़ी है। बाद में वह भले ही छोड़ दिये गये हों परन्तु पुलिस कार्यवाही में सताये गये।

जब उक्त प्रकार की कार्रवाई होती है तब लेखक भी अपने सिर पर लटकती तलवार का अहसास कर ऐसा कुछ नहीं लिखता जैसा उसकी लेखनी लिखवाना चाहती है। विरोध इतना प्रबल हो जाता है कि सरकार भी घुटने टेक देती है अत: लेखक कवि इन सब झंझटों से बचकर साहित्य सृजन में लगा रहता है जबकि उसे ऐसा न कर, यथार्थ लिखना चाहिए और राष्ट्रहित में काम करने का साहस जुटाकर लोगों को जागरूक बनाने का साहित्य रचना चाहिए।

वर्तमान समय दिखावा करने का समय है। हर वस्तु का प्रदर्शन आज की प्रमुख व्यावसायिक तथा व्यापारिक शैली है। प्रदर्शित माल को देखकर ही आजकल मोल भाव होता है। विज्ञापनों का जो तरीका है वह दिखावे का ही रूप है। इस दिखावे में हमारे मूल्यों का कोई अस्तित्व नहीं रह पाता। पैसा फेंको तमाशा देखो की तर्ज पर राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियाँ देशभर में चल रही हैं। साहित्यिक क्रियाकलापों को विशेषकर हिन्दी साहित्य की गतिविधियाँ सिमट कर रह गई हैं और साहित्यकार भी जैसे-तैसे अपनी रचनात्मक जीविका को चला रहे हैं क्योंकि मीडिया इन पर हावी है। यही कारण है कि वर्तमान का साहित्य जागरण का न होकर सिर्फ अलाप-विलाप तक सीमित हो चुका है।

शासकीय कन्या महाविद्यालय गेट (पूर्व)
के सामने, पड़ावा, खण्डवा
मो.-०७३३२२४३९७२

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी कथा साहित्य के गत 50 वर्ष

•

जगदीश तोमर

१९४७ से २०१३ तक फैले कालखण्ड को साहित्य में अब तक कोई सर्वस्वीकृत नाम प्राप्त नहीं हो सका है। किन्तु उसे द्वितीय विश्वयुद्ध से प्रारंभ आधुनिकता के द्रुतगामी कदमों का अभी तक का सबसे बड़ा पड़ाव तो कहा ही जा सकता है। अनेक साहित्य मनीषियों ने इसे 'स्वातंत्र्योत्तरी साहित्य' या साठोत्तरी साहित्य (१९६० के बाद का) कहकर अभिहित किया है।

इस कालखण्ड से पूर्व जिन महान साहित्यकारों, मुख्यत: कथाक्षेत्र के मूर्धन्य रचनाकारों ने साहित्य को अतुल समृद्धि प्रदान की उनमें मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, प्रभृति स्वनामधन्य उपन्यासकारों के नाम सर्वोपरि हैं। उनके बाद जिन दिग्गज रचनाकारों की कथाकृतियों ने साहित्य एवं समाज में हलचल पैदा की और जिनका प्रभाव कमोवेश अब तक अनुभव किया जा रहा है, उनमें यशपाल सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय', जैनेन्द्र कुमार, अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा, फणीश्वर नाथ, रेणु, वैद्य गुरुदत्त, आचार्य चतुरसेन, श्री लाल शुक्ल, निर्मल वर्मा, नरेन्द्र कोहली के नाम अत्यन्त विशिष्ट हैं।

हमारा आज का समय मुंशी प्रेमचन्द के जमाने से काफी कुछ बदला हुआ है। मुंशी ने अपनी लेखनी का उपयोग जिस अभावग्रस्त, शोषित, असहाय, उत्पीड़ित किसान, मजदूर, दलित एवं महिला वर्ग के लिए किया, उसका प्रभाव दो-तीन दशकों तक अविच्छिन्नत: कायम रहा। किन्तु बाद के उनके तथाकथित अनुगामी लेखकों ने उनकी धारा और ध्येय से पल्लू झाड़ लिया और वे भारतीय जन के विश्वासों-आस्थाओं, परंपराओं और मूल्यों को उद्ध्वस्त करने में संलग्न हो गए। हां, वे शोषितों के पक्षधर होने की घोषणा अवश्य करते रहे, भारतीय राजनीति में व्याप्त पाखण्ड भी उघाड़ते रहे और वर्ग-संघर्ष का नारा भी, प्रदर्शन बतौर ही सही, बुलन्द करते रहे। किन्तु कालान्तर में सर्वहारा के पक्ष में खड़ा साहित्यकारों का यह दल अनियंत्रित भोगवाद तथा स्वच्छंद यौन संबंधों की हिमायत में सन्नध हो गया। इन लेखकों को तत्कालीन 'धर्म निरपेक्ष' सरकारों का प्रश्रय भी प्राप्त था और वे अधिकांश विश्वविद्यालयों, साहित्य-संस्थानों एवं प्रसारण-केन्द्रों पर भी काबिज थे। इसलिए उनकी प्रसिद्धि एवं प्रभाव में थोड़े समय में ही पर्याप्त इजाफा हुआ और इसके साथ ही उनके झंडावरदारों की संख्या तेजी से बढ़ी, और फिर काफी लंबे समय तक बढ़ती रही।

उपर्युक्त साहित्यसेवियों के अभारतीय चिंतन-सृजन से देश के अनेक समाजशास्त्री एवं राष्ट्रवादी विचारक एकबारगी हैरान रह गए। किन्तु देश के सृजनधर्मी साहित्यकार अपने राष्ट्रसापेक्ष कर्म में सनिष्ठा संलग्न रहे। उन्होंने राष्ट्रीय हितों, जीवन-मूल्यों एवं सनातन परंपराओं के क्षरण को रोकने के लिए, राष्ट्र एवं राष्ट्रजन को अपनी रचना के केन्द्र में रखा और 'क्या बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' का स्मरण कर अपने राष्ट्र के मूल स्वरूप को विद्रूपित न होने देने के लिए अपनी लेखनी को संकल्पबद्ध किया। इस राष्ट्रवादी साहित्य धारा को अनेकानेक साहित्यकारों ने सुसमृद्ध किया। इस दिशा में वैद्य गुरुदत्त, आचार्य चतुरसेन जैसे सिद्ध रचनाकार पूर्व में ही अपनी लेखकीय सक्रियता प्रकट कर चुके थे।

गत सदी के छठवें दशक में अमृत लाल नागर के अनेक उपन्यास चर्चित हुए। उनके बाद के उपन्यास 'नाच्यो गोपाल', 'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' राष्ट्रीय सरोकारों को दृष्टि में रखकर लिखे गए प्रतीत होते हैं। उनके बाद के उपन्यास क्रमश: तुलसीदास एवं सूरदास की औपन्यासिक जीवनियां हैं। उनमें इन कवियों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राष्ट्रीय चिंताएँ प्रस्तुत हुई हैं। 'नाच्यो गोपाल' में अंत्यज समाज को नई एवं सम्माननीय पहचान देने का प्रयास हुआ है। उसमें एक बड़ा तथ्य उद्घाटित हुआ है और वह यह कि भारतीय समाज में अस्पृश्य वर्ग कभी था ही नहीं। हिन्दू समाज के तथाकथित अस्पृश्य मूलत: राजवंशों से जुड़े थे। जब वे यवन आक्रांताओं से पराजित हुए तब उन पर इस्लाम स्वीकार करने का दबाव बनाया गया, किन्तु उन्होंने तमाम अपमानों-उत्पीड़नों के बाद भी अपना धर्म नहीं छोड़ा। इस पर उन्हें विजेताओं का मलमूत्र साफ करने के लिए विवश किया गया और इस प्रकार वे अंत्यज हो गए। श्री नागर का यह उपन्यास सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकात्मता के भावों को सहज पुख्ता करता है।

गत पचास वर्षों में ऐसे अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए जिन्होंने भारतीय मानस को एक नवीन आत्मविश्वास, शक्ति एवं स्फूर्ति से अनुप्राणित किया। इन कृतियों के रचनाकारों में डॉ. नरेन्द्र कोहली शीर्षस्थ हैं। उन्होंने रामकथा को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा और भगवान राम को मानव रूप में चित्रित कर पूरे कथ्य को, प्रबुद्ध एवं तर्कशील जनों के लिए सहज ग्राह्य एवं विश्वसनीय बनाया। उनके द्वारा रूपायित रामकथा कई खंडों में प्रकाशित हुई और उसने लोकप्रियता के नव-नव क्षितिजों को संस्पर्शित किया। इससे यही प्रकट हुआ कि देश की बहुसंख्या अपनी संस्कृति पर, विपरीत प्रचार के बावजूद, गर्व एवं गौरव अनुभव करती है। उनकी एक और औपन्यासिक कृति स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर केंद्रित है। वह असंख्य पाठकों में एक अपूर्व आत्मगौरव एवं चेतना भर रही है।

गत पचास वर्षों के दो कृतिकारों का उल्लेख भी अत्यन्त आवश्यक है। वे वामपंथ के दिग्गज कथाकार एवं चिंतक रहे। वामपंथी समीक्षकों ने उन्हें प्रगतिशीलता का पुरोधा बताया। वे शोषितों, उत्पीड़ितों के पक्षधर भी रहे। पर इस सबके साथ, वे हिन्दू चिंतन एवं परंपराओं को ध्वस्त करने में सबसे आगे रहे। दुनिया के और मतपंथों में वे कोई दोष नहीं खोज पाए। या, यह भी हो सकता है कि तथाकथित धर्मनिरपेक्षी राजनेताओं की तरह वे भी हिन्दूतर धर्मों-मजहबों के दोष प्रकट करने का साहस ही नहीं जुटा पाए।

श्री राजेन्द्र यादव का उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' १९५६ में प्रकाशित हुआ। उसमें भारतीय राजनेताओं की सत्तालोलुपता तथा भ्रष्ट आचरण रेखांकित हुए हैं। किन्तु इसके साथ ही उसमें हिन्दू विवाह परंपरा की व्यर्थता भी प्रतिपादित हुई है। इसी प्रकार श्री कमलेश्वर ने सन् २००० में प्रकाशित अपने उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में अयोध्या के रामलला मंदिर तथा काशी विश्वनाथ मंदिर के विध्वंस के लिए मुगल आक्रांताओं, क्रमश: बाबर एवं औरंगजेब को दोषमुक्त करने का 'भगीरथ' प्रयास किया है। इसके साथ ही उपन्यास के प्रमुख पात्र जनाब आलीजाह विवाह इतर यौन संबंधों का लाभ लेते हुए भी चित्रित हुए हैं।

इन 'महान' लेखकों के लेखन का प्रभाव देश के तमाम नवलेखकों पर पड़ा। फलत: उनके लेखन में नैतिक मर्यादाओं एवं मूल्यों की अर्थहीनता का निरूपण बड़ी प्रमुखता से हुआ।

इस वर्ग में कुछेक महिला कथाकार भी नव-नव ऊँचाइयों का आरोहण करते प्रकट हुए। उन्होंने निर्भीक लेखन (बोल्ड लेखन) की नींव रखी। इस संदर्भ में मृदुला गर्ग का 'चित्रकोबरा' बहुचर्चित हुआ। उसमें एक विदेशी द्वारा अपनी भारतीय प्रेमिका का वक्षपान सविस्तार वर्णित हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा इस दिशा की संभवत: सर्वाधिक चर्चित लेखिका हैं। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में नारी को अपनी देह का यथाइच्छा उपयोग करने की स्वतंत्रता का समर्थन तो रहता ही है, ऐसे चित्रों का बाहुल्य भी रहता है, जिनका, वयस्कों के लिए निर्मित फिल्मों में भी दर्शन नहीं होता। ऐसी कृतियां व्यक्ति एवं समाज की आंतरिक दुर्बलताओं-विकारों का परिमार्जन कतई नहीं करती। प्रत्युत वे समाज को अनियंत्रित, असंयत भोगवाद की ओर धकेलती प्रतीत होती हैं।

परन्तु पिछले एक-डेढ़ दशक से देश का साहित्यिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिदृश्य तेजी से बदलता लग रहा है। नारी विमर्श के नाम पर मुक्त यौन संबंधों के पैरोकार लेखकों से भिन्न, राष्ट्र सापेक्ष लेखन के प्रति समर्पित अनेक समर्थ रचनाकार साहित्य क्षेत्र में बड़ी सक्रियता के साथ आ उपस्थित हुए हैं। ऐसे लेखकों की कृतियों ने साहित्य एवं समाज को एक नई दृष्टि एवं ऊर्जा प्रदान की है। ऐसे कथा लेखकों में डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद (पटना), डॉ. मृदुला सिन्हा (दिल्ली), डॉ. सीतेश आलोक (दिल्ली), डॉ. क्षमा कौल (जम्मू) एवं डॉ. नीरजा माधव (वाराणसी) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'सिद्धियों के खंडहर' में इस सत्य को बड़ी दृढ़ता से स्थापित किया है कि यदि कोई देश बहुत शान्तिप्रिय, उदार एवं सहिष्णु है और इन आदर्शों के व्यवहार में अतिरेकी भी है तो उसका अस्तित्व निश्चित ही असुरक्षित है। वह इस सत्य को, गौरवशाली मगध राज्य की पतन-कथा के माध्यम से हमारे वर्तमान के सम्मुख प्रस्तुत कर हमें आसन्न चुनौतियों के प्रति सावधान-सतर्क करते हैं।

डॉ. क्षमा कौल ने अपने उपन्यास 'दर्दपुर' में कश्मीरी पंडितों के विस्थापन की पीड़ा को अत्यन्त मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। साथ ही यह भी व्यक्त किया है कि उनके उत्पीड़न का मुख्य कारण उनका हिन्दू होना तथा उनकी पीड़ा में शेष भारत के हिन्दू समाज का उनसे दूर बने रहना है। पूरा उपन्यास कश्मीर के हिन्दू समाज के संहार की त्रासद कथा है। किन्तु उनकी मर्मभेदी व्यथा के मध्य लेखिका, उपन्यास की मुख्य पात्र सुधा के माध्यम से एक अद्भुत भविष्य वाणी भी उच्चारित करती है। सुधा कहती है- ''हिन्दुस्तान पर एक बहुत बड़ी कालरात्रि छाने वाली है। .... वह उन्नीस जनवरी १९९० की, कश्मीर में उत्पन्न कालरात्रि का बृहत्तर उत्तर होगी।'' तात्पर्य यह कि लेखिका को विश्वास है और वह अपने विश्वास को समूचे भारतवर्ष में बिखेर देना चाहती है कि कश्मीर में जो रक्तपात हुआ और कश्मीरी पंडितों का जो महानिष्कासन हुआ, उसका आगत कालरात्रि में अवश्य उत्तर दिया जायेगा। सुधा की इस भविष्यवाणी में प्रत्येक राष्ट्रवादी भारतीय को सावधान एवं सन्नध होने का संदेश भी सन्निहित है।

डॉ. नीरजा माधव कृत 'तेभ्यः स्वधा' इसी धारा का उपन्यास है। उसमें राजौरी (जम्मू-कश्मीर) की पहाड़ियों में बसे हजारों हिन्दू शरणार्थियों के कत्लेआम और हिन्दू ललनाओं के अपहरण एवं बलात्कार की हृदय विदीर्ण कर देने वाली व्यथा-कथा अंकित है। इन अमानवीय नृशंसताओं के बीच मीना जीवित बच कर एक दुर्दम्य कबायली साफीखान के चंगुल में फँसकर एक नारकीय जीवन जीने के लिए विवश होती है। किन्तु मीना से अमीना बनाए जाने के बाद भी वह हिन्दू संस्कार को नहीं भूलती, अपने बेटे अजीज हुसैन को अजीत शुक्ल के रूप में ही बड़ा करती है और फिर भारत आकर गया मैं राजौरी की पहाड़ियों में कत्ल किए पुरूष, महिलाओं, बच्चों के तर्पण की विधि संपन्न कराती है। यह उपन्यास भारतीय जनमानस को, उसी प्रकार झकझोरता प्रतीत होता है, जैसा कभी बंकिम बाबू के उपन्यास आनन्दमठ ने देश के आजादी के दीवानों को झकझोरा था।

इन कृतियों और इन जैसी अनेकानेक कृतियों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि हिन्दी का साम्प्रतिक लेखन एक बार फिर एक सार्थक दिशा ग्रहण कर रहा है। उससे साहित्य-प्रांगण में एकत्रित प्रदूषण अवश्य बुहरेगा और देश एक नये चैतन्य से उद्भाषित होगा।

डी-एच. २५, दीनदयालनगर
ग्वालियर-४७४०२०
चलवाणी-९४२५७११७८४

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गणेशशंकर विद्यार्थी की शहादत

साहित्य में व्याप्त दलगत राजनीति से सदा दूर रहकर, अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन के बावजूद प्रा. भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़' आजीवन हिंदी साहित्य सृजन में लीन रहे। यहाँ साभार प्रस्तुत है उनकी संस्मरणात्मक पुस्तक 'अतीत की झलकियाँ' (२००२) से एक दुर्लभ स्मृति चित्र। ■ संपादक

२२ मार्च १९३१। प्रतिदिन की भांति मैं उस दिन भी प्रात: ९ बजे स्कूल चला गया। उन दिनों मैं डी.ए.वी. हाईस्कूल, कानपुर में पाँचवीं कक्षा का छात्र था और परेड मोहल्ले में रहता था। स्कूल मेरे घर से लगभग एक मील दूर था। परेड पर ही जहाँ इक्के तांगे वालों का अड्डा था एक बड़ा हाता था जिसे चंद्रशेखर मिश्र का हाता कहते थे। उसके बड़े फाटक के दायीं ओर यू.पी. मिनरल आयल कम्पनी के नाम से एक पारसी की दुकान थी और दूसरी ओर कुछ कतारबद्ध दुकानें। दुकानों के बाद कुछ रिहाइशी दो मंजिले मकान थे। इन्हीं मकानों में सबसे आखिर वाले मकान की ऊपरी मंजिल पर मैं अपनी माँ के साथ रहता था।

मेरी माँ म्युनिसिपल बोर्ड कानपुर की एक कन्याशाला में प्रधानाध्यापिका थीं। मेरा मकान परेड से मूलगंज होकर स्टेशन जाने वाली सड़क पर स्थित था। मकान के बगल से दाहिनी ओर एक दूसरी सड़क फूटती थी जो कुली बाजार बूचड़खाने को जाती थी।

मैं जिस दिन का जिक्र कर रहा हूँ उस दिन भी हमेशा की तरह मैं अपने वहीं रहने वाले दो सहपाठियों के साथ किताबों का बस्ता कंधे से लटकाये बातें करते हुए म्योर मिल के सामने वाली सड़क से चला जा रहा था। एकाएक अंग्रेज सिपाहियों से भरी एक ट्रक तेजी से निकल गयी। हम डरकर किनारे हो गए। सब के हाथ में बंदूकें थीं और वे अंग्रेजी में बातें कर रहे थे। फिर इक्के-दुक्के लोग साइकिलों, मोटर साइकिलों और कारों पर तेजी से भागते दिखायी दिए। हम लोगों की उत्सुकता बढ़ी। मिल की ओर जाने वाले मजदूरों से पूछा कि क्या बात है, पर किसी ने उत्तर न दिया। हाँ, आपस में वे अवश्य बातें कर रहे थे कि पिछली रात को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर सेन्ट्रल जेल में फाँसी दे दी गयी। इससे जनता में रोष है। सुबह ८.०० बजे ही फूलबाग के निकट किसी ने एक गोरे साहब और एक मेम को अलग-अलग जगहों पर मार डाला है। अत: तनाव और सनसनी है। इतने में हिन्दुस्तानी सिपाहियों से भरी एक दूसरी ट्रक निकली। तब तक हम लोग अपने स्कूल के निकट पहुँच चुके थे। डर तो नहीं पर उत्सुकता पराकाष्ठा पर थी। हम लोग यह जानना चाहते थे कि बात क्या है और शहर में क्या हो रहा है? दस बजे स्कूल के कम्पाउण्ड में सदैव की भाँति वैदिक प्रार्थना हुई। पंडित सूर्यदेव शर्मा ने पढ़े हुए वेद मंत्रों का अर्थ समझाया। हेडमास्टर बाबू विष्णुस्वरूप ने छात्रों को संबोधित करते हुए अपनी रोबीली भाषा में कहा कि हम लोग सीधे अपनी कक्षाओं में जाएँ और इधर-उधर बाहर न घूमें। हम लोग कक्षा में बैठे ही थे कि एक चपरासी कागज लेकर आया और हमारे अंग्रेजी शिक्षक बाबू रामनारायण वर्मा को देकर चला गया। थोड़ी देर बाद हमने खिड़की से देखा कि हेडमास्टर साहब तेजी से स्कूल का राउण्ड ले रहे थे यह देखने के लिए कि सब ठीकठाक है या नहीं। इतने में मेरी बगल की सीट पर बैठे हुए मित्र ने जो पानी पीने के बहाने बाहर गया था आकर चुपचाप बताया कि शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया है।

बात सच निकली। आधे घंटे बाद हमारी छुट्टी कर दी गयी और आदेश हुआ कि हम सीधे अपने घर जायें।

यद्यपि मेरा मकान एक ओर हिन्दुओं और दूसरी ओर मुसलमानों से घिरा हुआ था, पर वहाँ रहने वालों को कभी किसी भय की अनुभूति नहीं हुई। सभी लोग आपस में मेलजोल से रहते थे। स्कूल में भी नसीर मेरे अच्छे मित्रों में से था। यह हमारे स्कूल की फुटबाल टीम का कैप्टन था और जब भी हलीम मुस्लिम हाईस्कूल से हमारा फाइनल मैच होता था तो जीतने के लिए अपनी जान लगा देता था। उसके बड़े भाई हमीद खाँ कानपुर कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी थे। नसीर यह बात हमें बड़ी शान से बतलाता था। हम लोग बहुधा गाँधी जी, नेहरू जी और भगत सिंह आदि की बातें किया करते थे। ग्यारह बजते-बजते जैसे ही मैं अपने मकान के करीब पहुँचा, देखा कि नयी चौक की ओर से पच्चीस नवयुवकों का एक दल लाठियाँ घुमाते और 'जय हनुमान' और 'हर-हर महादेव' का नारा लगाते हुए निकला और मुख्य सड़क पर कुछ दूर चलकर दूसरी गली से शंकर जी के मंदिर की ओर मुड़ गया। पलक मारते बूचड़खाना की ओर से अल्लाह-ओ-अक़बर की आवाज़ें सुनायी देने लगीं। पास की मस्जिद में मुसलमान जमा होने लगे। मेरी माँ घबरायी हुई छज्जे से मेरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रास्ता देख रही थीं। मैं ज्यों ही करीब आया उन्होंने जोर से दरवाजा खोलकर मेरा हाथ खींचा। साथ मेरे दोनों साथी श्याम सुन्दर और बिहारीलाल भी थे। वे परेड में लॉ जनरल प्रेस के पास रहते थे जो मेरे घर से दो फर्लांग की दूरी पर था। उनको भी अंदर घसीट कर माँ ने दरवाज़ा बंद कर लिया। ऊपर आने पर कमरे का दरवाजा बंद करते हुए उन्होंने हमें कसकर डाँटा और बतलाया कि चारों तरफ मार-काट मची हुई है। धीरे-धीरे रात हो गयी। मकान के नीचे रहने वाला बनिया मुन्नीलाल अपनी परचून की दुकान बन्द कर दोपहर से ही ऊपर चला आया था। मेरे दोनों साथी भी डरे हुए थे। दंगे से और उससे भी अधिक अपने पिताओं से। लगभग आठ बजे नीचे किसी ने दरवाजा खटखटाया। माँ ने सशंकित छज्जे का दरवाजा खोलकर नीचे झांका। बिहारीलाल के पिता अपने दो साथियों के साथ खड़े थे। उन्होंने अपने पुत्र के बारे में पूछा और यह जानकर वह हमारे यहाँ सुरक्षित हैं उनकी जान में जान आयी। वे मेरे दोनों मित्रों को अपने साथ ले गए। पूरी रात कभी उस पार नयी चौक से और कभी इस ओर बूचड़खाने की मस्जिद से नारे सुनायी पड़ते रहे। किसी तरह रात कटी। सुबह उठकर जब चुपचाप झांककर देखा तो सड़कें पूरी तरह सुनसान थीं। पुलिस का दूर-दूर तक पता न था।

२३ मार्च का प्रात:काल अत्यन्त भयदायी और अशुभ सूचक था। बाहर से साग-सब्जी लाने का प्रश्न ही न था। जो कुछ घर पर था माँ ने उसे ही बनाकर हमें खिला दिया। मन में एक दहशत भी थी, पर कौतूहल उससे भी अधिक। माँ के लाख मना करने पर भी मैं दुबक कर छज्जे से एक कोने में बैठ गया और जाली से आने-जाने वालों को देखने लगा। दोपहर का समय था। लगभग सवा दो बजा होगा। देखा कि लगभग ५० लोगों के साथ जो देखने में मुसलमान लग रहे थे दो व्यक्ति चले आ रहे थे। ये दोनों आगे-आगे चल रहे थे और बाकी सब उनके पीछे। इनमें से एक छरहरे बदन लम्बे कदम और सांवले रंग वाले चश्मा लगाये हुए सज्जन थे। दूसरे नाटे कद के, क्लीन शेव्ड और कुछ गोरे रंग के उम्र में उनसे छोटे नौजवान थे। दोनों खद्दर का कुर्ता पहने थे। हाँ, चश्मे वाले सज्जन धोती पहने थे और दूसरे पायजामा। मेरे मकान से मुड़ने वाले बूचड़खाने की सड़क पर भीड़ रुक गयी और 'विद्यार्थी जी ज़िन्दाबाद' 'गणेश शंकर विद्यार्थी ज़िंदाबाद' के नारे लगाने लगी। दूसरी ओर मस्जिद के पास की गलियों से मुसलमानों की भीड़ जमा होने लगी। सभी के हाथ में लाठी, बल्लम व तलवारें थीं और सभी जोर-जोर से 'अल्लाह-ओ-अकबर' के नारे लगा रहे थे। बूचड़खाने की भीड़ में से किसी ने कहा, 'मारो-मारो, जाने न दो, क़ाफिर हैं।' दूसरी तरफ सड़क पर खड़े मुसलमान चिल्लाये, 'इन्हें मत मारो। ये हमें बचाकर लाये हैं। खुदा के वास्ते रुको।' इतने में मैंने देखा विद्यार्थी जी ने सर झुकाते हुए कहा -

'अगर मुझे मारकर आप लोगों को संतोष मिल सकता है तो मैं हाज़िर हूँ। पर आप लोग...' वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि किसी मुसलमान की तलवार उनकी गर्दन पर पड़ी और सर धड़ से अलग होकर जा गिरा। उसके बाद 'अल्लाह-ओ-अकबर' की आवाज़ से सारा माहौल गूंज उठा। साथ वाला युवक 'विद्यार्थी जी मारे गए, विद्यार्थी जी मारे गए' चिल्लाता हुआ भागा। थोड़ी ही दूर गया होगा कि एक लाठी के वार से उसे भी सड़क पर गिरा दिया। उसके बाद भगदड़ मच गयी। विद्यार्थी जी के साथ वाले मुसलमान अपने दूसरे भाइयों से झगड़ने लगे और भला-बुरा कहने लगे। पर संख्या में कम होने के कारण खामोश हो गये। यह सब देखकर मेरी माँ तो बेहोश हो गई और मैं संज्ञा - शून्य होकर छज्जे में बैठा ही रह गया। उसके बाद क्या हुआ मुझे याद नहीं। वह चित्र आज भी ६६ वर्ष बाद मेरी आँखों के सामने घूम जाता है।

दंगा समाप्त होने के बाद जब स्कूल फिर खुला तो नसीर ने बतलाया कि २३ मार्च, १९३१ को यह जानकर कि रामनारायण बाजार में कुछ मुसलमान परिवार फँसे हुए हैं, विद्यार्थी जी वहाँ गये और उन्हें निकलवाकर सिविल हॉस्पिटल और रामलीला ग्राउण्ड के सामने वाली सड़क से जाने लगे। काँग्रेस के अनेक कार्यकर्ताओं ने उन्हें ए.बी. रोड से आगे जाने को रोका। जब वे ज़िद करने लगे तो उन लोगों ने भी विद्यार्थी जी के साथ चलने को कहा। पर वे राज़ी न हुए और हमीद ख़ाँ को साथ लेकर यह कहते हुए चल दिये कि 'अभी आधा घंटे में आता हूँ।' जब शाम हो गयी और न वे आये और हमीद खाँ वापस लौटे तो लोगों को शंका हुई। वे चलने को ही थे कि घायल अवस्था में पहुँचकर हमीद खाँ ने विद्यार्थी जी की शहादत की खबर दी। फिर जो मारक़ाट मची उसमें कहा जाता है कि सैकड़ों मुसलमान मारे गए। कितने ही घर जला दिये गए। पर दूसरे ही दिन पुलिस और मिलिटरी लगा दी गयी। अंग्रेजी हुकूमत अपने षड्यंत्र में सफल हो गई अन्यथा कानपुर में भगत सिंह को फांसी लगने के बाद कोई अंग्रेज बच पाता इसमें संदेह है। हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है और आज भी है। अंतर इतना है कि तब विदेशी शासक यह कर रहे थे और अब हमारे राजनैतिक नेतागण और साम्प्रदायिक ताक़तें यह कर रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वागत-1

सुनीता माहेश्वरी

सीख

प्रकृति माँ निज संतानों को हर पल देती यह शिक्षा,
अंतिम साँस तक लड़, विजयी हो, कर तू पर रक्षा।

साँसों की संगत में, जीवन-ज्योति हृदय में जलती।
कठिन पल कट जाते, सुख-आकांक्षा मन में सजती।
परहित की राह नित जीवन में नव खुशियाँ भरती।
शांति-उमंग-आनंद-चाँदनी क्लेशों की तपन हरती।

तपती गर्मी में नदी घबराती, निज अस्तित्व बचाती।
पर बरखा ऋतु के आते ही, लहर-लहर वह लहराती।
पग-पग पर निज जल से जंगल में मंगल कर जाती।
अपने दुखद दिनों को भूल सब जीवों के प्राण बचाती।

सूखे वृक्ष की हरी शाखा से प्रस्फुटित एक नव कोंपल,
कोंपल से कोंपल सजतीं, भरती पत्तियाँ नई कोमल।
सूखा वृक्ष पुनः लहराता विस्मृत कर निज कष्टों को।
हरा-भरा हो देता छाया-फल, देता बसेरा पक्षियों को।

प्रकृति माँ निज संतानों को हर पल देती यह शिक्षा,
अंतिम साँस तक लड़, विजयी हो, कर तू पर रक्षा।

मन की शक्ति

मन की असीम गहराई से अनंत आकाश की उड़ान भर।
नव लक्ष्य की ऊँचाइयाँ छू और आसमान से बात कर।

मन की गहराई में छुपी है, अमित आनंदपूर्ण शांति।
लक्ष्य-द्वार खुलते, मिलती दिशा मिट जाती भ्रान्ति।

मन में अनंत शक्तियाँ समाहित जैसे गागर में सागर।
निज शक्तियों को पहचान, विजय पा ले तू मन पर।

आशा-विश्वास का प्रकाश काट देता निराशा के पाश।
रोग-चिंता मुक्त करता, भर देता खुशियाँ आस-पास।

साहस, दृढ़ता के पंख लगा, निर्भय हो तू भर उड़ान।
जीत का परचम लहरा, जग में पा तू मान-सम्मान।

जागरण

सत्य, अहिंसा, त्याग से प्रस्फुटित, भारतीय संस्कृति।
पर बड़ा दुर्भाग्य! इन गुणों की हो रही है विस्मृति।
आज पुरुषोत्तम राम का, अति आवश्यक है आगमन।
जन-जन को नैतिक पथ दिखा, जरूरी है जागरण।

दुष्ट-भ्रष्टाचारी दानवों की क्रूरता के बढ़ते कदम।
करोड़ों-अरबों के घोटाले, देश को लूटने का चलन।
आज फिर किसी गाँधी महात्मा का, जरूरी आगमन।
आंदोलनों की ज्योति जला, आवश्यक है जागरण।

सफेदपोश लोगों के, बढ़ रहे नित स्याह काले कारनामे।
भ्रष्टाचार-घोटालों को पहनाये जा रहे सच्चाई के जामे।
महंगाई की विष-बेल दिन दूनी, रात चौगुनी पनप रही।
इसकी मार झेल-झेल, लाचार जनता दुःख से तड़प रही।

सम्पूर्ण देश आज राजनीति के कुचक्र से हुआ है बेहाल।
कुर्सी के लालच में चली जा रही है, नित बेढव चाल।
पद लोलुप नेता आपस में लड़, खाली बजा रहे हैं गाल।
जीत के लिए समीकरण बना, लुटा रहे हैं देश का माल।

आतंक रूपी विष-सर्पों के दंशों से, विश्व हुआ आतंकित।
मर-मर कर जी रहा मानव, विनाश के भय से शंकित।
आज धरा पर है आवश्यक, अवतार ले ले कोई मोहन।
आतंक के कालिया नागों का, है जरूरी आज नाथन।

विश्वगुरु, संस्कृति-प्रचारक भारत है, जग की शान।
प्राकृतिक सुन्दरता से शोभित, भारत वसुधा है महान।
प्रत्येक नागरिक में है जरूरी, सत्य, निष्ठा, आत्मशक्ति।
निज स्वार्थ का लोभ त्याग, आवश्यक है देशभक्ति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वागत-2

पांडे जी

●

अखिलेश मिश्रा

महत्वाकांक्षा तो पांडे जी के अंदर बचपन से ही थी। जब पढ़ते थे तो हमेशा प्रथम आने की इच्छा रखते थे। प्रथम आए भी थे, कक्षा पाँच में, छठी में, आठवीं में, नवीं में और ग्यारहवीं में। ग्यारहवीं में पूरे अस्सी प्रतिशत अंक आए थे, उस जमाने में। आसपास के कई इलाक़ों में इतने नंबर पहले कभी किसी ने प्राप्त नहीं किए थे। त्रिलोकीनाथ की आँखों से खुशी के आँसू बरसात के पानी की तरह झरने लगे थे। वह बिल्कुल अनपढ़ थे और बेटा पूरे प्रदेश स्तर का होशियार। यद्यपि बौद्धिक समझ उनके अंदर बहुत थी। बेटे की यह सफलता उनके जीवन की सबसे बड़ी खुशी थी। पूरे मेड़ाउरे में रमेश के साथ-साथ त्रिलोकीनाथ का नाम भी छा गया था। रमेश पांडे का नाम अखबारों में भी आ रहा था। आज की तरह तब बहुत सारे अख़बार नहीं थे। दैनिक भास्कर का अता-पता ही नहीं था। नवभारत ने बहुत बाद में जन्म लिया था। दैनिक जागरण ही जाग रहा था। खैर जितने भी अख़बार थे, रमेश पांडे को सबमें यथोचित जगह मिली थी। पांडे जी की शादी बचपन में हो गई थी। वह अपनी इस सफलता को भला ससुराल वालों के साथ कैसे नहीं बांटते? वह ससुराल अंकसूची लेकर गए और वहाँ अपनी धाक जमाई।

पूरा गाँव दौड़कर दामाद को देखने आया था और गौरवान्वित हुआ था। पांडे जी को इस बार विदाई भी थोड़ा ज्यादा ही मिली थी। स्कूल की तरफ से पांडे जी को एक घड़ी मिली थी। पांडे जी इस घड़ी को हाथ की कलाई में ऐसे बाँधते थे कि यह सबको दिखे। पूरे क्षेत्र में पांडे जी अकेले घड़ी वाले थे। वह बीच-बीच में जब कुछ शब्द अंग्रेजी के बोलते तो गाँव मेड़ाउरे में उनकी अलग धाक जम जाती थी। वैसे अंग्रेजी के शब्द साक्षात सरस्वती के आशीर्वाद की तरह थे। पांडे जी पढ़ाई बड़े संघर्ष से किए थे। एक हाथ में पुस्तक और दूसरे हाथ में भैंस को चराने की लाठी। भैंस की स्थितिप्रज्ञ अवस्था ने पांडे जी के अंदर एक अलग संतोष की भावना पैदा कर दी थी। वह थोड़े में ही संतुष्ट रहते थे। मगर यह संतुष्टि केवल भौतिकता के लिए ही थी। नाम यश की उनके अंदर बहुत ज्यादा भूख थी। पांडे जी चूंकि पूरे क्षेत्र में टापर थे अत: वह अपनी इस उपलब्धि पर न सिर्फ नाज करते थे बल्कि उन्हें इस पर अभिमान भी था। वैसे भी उनके अंदर संतोष की भावना थी अत: उन्हें किसी से कुछ उम्मीद और चाहत नहीं थी। इसीलिए वह कभी-कभी अपने को राजा भोज की तरफ समझते थे।

बात अब कॉलेज की तरफ मुड़ती है। पांडे जी स्कूल से निकलकर कॉलेज जाते हैं। वहाँ पांडे जी के बराबर और कई होशियार थे। पांडे जी की महत्वाकांक्षा उनके काम आती है। उनके अंदर से आवाज आती, पांडे तुम अलग हो! पांडे तुम कुछ खास हो! तुम पीछे हो ही नहीं सकते। प्रयास करो पांडे! पीछे करो सबको!

यही अंदर की आवाज पांडे को प्रोत्साहित करती और पांडे जी की नींद को रात के दो बजे तक छुट्टी दे देती। दिया जलाकर पांडे जी की आँखें हल्की रोशनी से युद्ध करती। किताबों का ज्ञान पांडे जी के अंदर घुसता जाता। पांडे जी कभी-कभी रट्टा भी लगा लेते। रटते भी ऐसे कि वह भी समझने के बराबर ही लगता था। पांडे जी अच्छे नंबर ही पाते थे पर यहाँ वह अपनी महत्वाकांक्षा के अनुसार टापर नहीं बन पाए। यह पांडे जी को एक सदमा की तरह था। वैसे पांडे जी गलत सोच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पकड़ लिए थे। उन्हें यह नहीं पता था कि इंजीनियरिंग में टापर की कोई ज्यादा अहमियत नहीं होती है। खैर पांडे जी को समझाना किसी के वश की बात नहीं थी। वह तो सबको समझाते थे। जो सबको समझाता है, उसे भला किसी की सलाह कैसे अच्छी लगती। इन्फैक्ट पांडे जी को सलाह देने वाला व्यक्ति बिल्कुल पसंद नहीं था। वह उसे अपना विरोधी समझ लेते थे।

साला मुझे सलाह दे रहा है, नालायक! मैं तो सारी दुनिया को समझाता हूँ। शायद इसको यह पता नहीं है।

पांडे जी हर व्यक्ति और विषय के बारे में अपनी एक अलग राय रखते थे। यदि किसी के बारे में कुछ गलत सोच लिए तो भले ही वह कितना भी अच्छा भला काम न कर ले, वह अपनी राय नहीं बदलते थे। उनके साथ एक भड़के साहब थे। पांडे जी भड़के को पढ़ने में कमजोर समझते थे। फाइनल में भड़के ने बहुत अच्छे नंबर लाए पर पांडे जी सबसे यही कहते कि भड़के की किस्मत साथ दे गई। वह जो पढ़ा, वही परीक्षा में आ गया। भड़के को पांडे जी से ज्यादा तनख्वाह की नौकरी मिली थी। इसे भी पांडे जी भाग्य का ही खेल समझते थे। वैसे भाग्य पर पांडे जी को हमेशा से भरोसा था। पांडे जी कभी अपने हाथ की अंगुलियों को सामने फैलाकर, एक किसी अँगुली को पकड़ने के लिए कहते तो कभी अघोरी को पकड़कर उससे भविष्यवाणी करवाते। भविष्य को वह अपने हाथों में कैद कर लेना चाहते थे। वह भविष्य को एकदम नजदीक से देखना चाहते थे। उन्हें वर्तमान के बजाए भूत और भविष्य ज्यादा प्यारे लगते थे। भविष्य की अनिश्चितता उन्हें बड़ा बेचैन कर देती थी। यह महत्वाकांक्षा की अधीरता का परिणाम था।

मैं एक दिन बड़े से बड़े पद तक पहुँचूँगा। आज भले ही मेरी यह दशा है पर हमेशा ऐसा नहीं रहेगा। अभी मेरे खराब दिन चल रहे हैं।

असंतुष्टि की भावना इंसान में कुछ नकारात्मकता भी भर देती है। पांडे जी अपने समय से हमेशा असंतुष्ट रहते थे। इसी कारण पांडे जी अपने अच्छे समय का भी आनंद नहीं ले पाते थे। पांडे जी खुद से प्रेरित थे अत: उन्हें बदल कौन सकता था। नौकरी में भी पांडे जी बिल्कुल अलग थे। सात सौ तनख्वाह मिलती और उसमें से पाँच सौ घर भेज देते। यह बात वह सबको बताते थे। भावना यह होती कि सब ऐसा ही करें। जो अपने घर पैसा नहीं भेजता था, पांडे जी उसे स्वार्थी नालायक कहते थे। पटना के रहने वाले वर्मा जी थे जो अपने घर एक भी पैसा नहीं भेजते थे। वह सबसे पहले स्कूटर खरीदे थे। सोफा तो उनके पास पहले से ही था,और हाँ डाइनिंग टेबल भी नई ही खरीदी थी।

'वर्मा साला सिर्फ अपने लिए ही जीता है।'

पांडे जी ने यह जानने की भी कोशिश नहीं की, कि वर्मा घर पैसा क्यों नहीं भेजता है। वास्तव में वर्मा जी के पिता उस जमाने के लखपति थे अत: वर्मा जी की इतनी औकात ही नहीं थी कि वह अपने बाप को पैसा भेजकर उनकी मदद कर सकें। वैसे कुछ लोग दूसरों को दिखाने के हिसाब से भी घर पैसा भेजते थे। पांडे जी ऐसे ढोंगियों को भी विशेष पसंद नहीं करते थे। पसंद तो पांडे जी उन लोगों को भी नहीं करते हैं जो छुट्टियों में अपने परिवार के साथ घूमने निकल जाते हैं और अपने गाँव शहर नहीं जाते हैं।

साले! अपने माँ, बाप, भाई, भतीजों को बिल्कुल नहीं पसंद करते हैं। नौकरी मिल गई और मस्त हो गए अपनी बीवी और बच्चों के साथ। इन्हें यह भी नहीं पता है कि अपना जीवन तो जानवर भी जी लेता है। इंसान तो वह है कि जो सबके हित के लिए काम करे।

पांडे जी यही बातें अपनी बीवी और बच्चों को सिखाते थे। जब वह उपदेश देना चालू करते तो अपने अंदर का सारा ज्ञान बाहर शब्दों के माध्यम से निकाल देते थे। यह दुनिया एक बाजार की तरह है। तुम जो चाहो तो इसमें से खरीद लो। यह बात वह अपने भतीजे सत्तू को कई बार बताए थे। मैं तो ज्यादा कुछ नहीं कर पाया पर तुम सब लोगों से मुझे बड़ी उम्मीद है। तुम लोग मुझे धोखा नहीं देना। छोटा भतीजा नंदू पूछ पड़ता, 'आप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्यादा कुछ क्यों नहीं कर पाए।'

पांडे जी लगातार चिंतित रहते थे और इस वजह से उनका पेट हमेशा खराब रहता था। उनके पेट में भयंकर गैस बनती थी। वह दिन भर एटम बंब फोड़ते थे। यह बीमारी उनकी माता जी को भी थी। वह तो अक्सर विभिन्न प्रकार की आवाजें अपने पेट से निकालती थीं।

पांडे जी की एक कमजोरी स्वादिष्ट भोजन था। कढ़ी, बगजा, रसाज़, यह नाम पांडे जी को बेचैन कर देते थे। वह अक्सर दूसरों के घर में निमंत्रण खाने के बाद कह पड़ते, 'धन्यवाद! बड़ा ही स्वादिष्ट और दिव्य भोजन था।'

पांडे जी अपने भाइयों से बड़ी उम्मीद लगाए हुए थे पर वह सब किताबी ज्ञान से कोसों दूर चले गए थे। उन्हें इस चीज का बड़ा अफ़सोस भी था। पर किसी तरह उन्होंने अपने आप को समझा लिया था और उम्मीदों का तीर अपने भतीजों और लड़कों की तरफ चला दिया था। लड़के को वह आईएएस बनाना चाहते थे। वह सीधे लक्ष्य पर ही निगाह रखते थे। लक्ष्य प्राप्ति के रास्ते उन्हें थोड़ा बेचैन कर देते थे। लक्ष्य के बारे में वह सब कुछ समझाकर शांत बैठ जाते थे।

मेरा काम इतना ही है और बाकी सब अब तुम्हारे ऊपर है। मेहनत तुम्हें करनी है। जिसको आगे बढ़ना होता है वह किसी भी परिस्थिति से निकलकर आगे चला जाता है। मनुष्य यदि दृढ़ प्रतिज्ञ है तो उसके सामने सारी समस्याएँ झुक जाती हैं। मैं तो समझा-समझा कर थक जाता हूँ, पता नहीं तुम लोग कितना स्वीकार कर पाते हो।

पांडे जी सबको ऐसे ही समझाते रहते। संयोग से उनका पुत्र और भतीजा भी टापर नहीं बन पाए। टापर की महत्वाकांक्षा पांडे जी के अंदर ही दबी रह गई।

लगता है भगवान मुझसे नाराज है। मेरी अगली पीढ़ी भी ज्यादा होशियार नहीं निकल रही है। यद्यपि वह समझते थे कि उनके भतीजे उतने होशियार नहीं हैं पर तब भी वह बड़ी नौकरी और पद की ही उम्मीद करते थे। लेकिन हताशा उनके अंदर घुस गई थी। एक दो भती[illegible] को छोड़ बाकी कोई भी ठीक से नहीं पढ़ पाया। लड़[illegible] भी बहुत होशियार नहीं निकला। आईएएस तो कोसों [illegible] छूट गया।

तुम लोगों ने मुझे बड़ा निराश किया। साला मैं ब[illegible] उम्मीद लगाए हुए था पर तुम सब धोखा दिए। खैर! अ[illegible] आगे देखो।

पांडे जी की महत्वाकांक्षा कमजोर और हताश ह[illegible] लगी थी। उनके भतीजे बेरोजगार थे। अब वह अप[illegible] संतुष्टि के गुण के सहारे शांत रहने की कोशिश करते थ[illegible] उपदेश देना भी कम कर दिए क्योंकि लोग उनकी बा[illegible] को सुनना पसंद नहीं करते थे। कोई-कोई कह भी देत[illegible] 'अपने बच्चों और भतीजों को सुधार नहीं पाए, दूस[illegible] को भाषण देते हैं। यह भी जीवन की एक सच्चाई है[illegible] मनुष्य स्वार्थ के कारण ही एक-दूसरे के आगे पीछे घूम[illegible] है। पांडे जी जैसे निश्छल आदमी इस कलियुग में न[illegible] मिलते हैं। एक समय पांडे जी क्षेत्र की शान थे। वह ती[illegible] साल विदेश में रहकर आए थे। उस जमाने में विदेश दूस[illegible] ग्रह जैसा था। ऐसी उच्च अवस्था से नीचे गिरने [illegible] अहसास ही बड़ा दुखदाई होता है। पांडे जी को भैंस [illegible] संतुष्टि का गुण सब कुछ स्वीकार करने की प्रेरणा दे[illegible] था। हर व्यक्ति का अपना-अपना समय होता है। पांडे [illegible] जिस समय असंतुष्ट होकर और उज्ज्वल भविष्य [illegible] कल्पना करते थे, वह उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय था[illegible]

मैं सदा समाज और परिवार की बात सोचता हूँ प[illegible] आज ऐसी सोच वाले व्यक्ति नहीं दिखते हैं। भगवान [illegible] ऐसा क्यों किया? रामचरित मानस में तो लिखा है कि[illegible] 'परहित बसहि जिन्ह के मन माही, तिन्ह कछु नहिं दुर्ल[illegible] जग महीं।' मैंने तो सदा सबके हित की बात सोची[illegible] संपूर्ण देश और समाज के बारे में सोचा, फिर मे[illegible] महत्वाकांक्षाएँ अधूरी क्यों रह गईं। शायद यह कलियु[illegible] के कारण ऐसा हुआ है। वैसे भौतिकता ही जीवन थो[illegible] है। अच्छे संस्कार, सुख, शांति यह ज्यादा जरूरी है[illegible] भगवान तो वैसे भी माया से दूर रहने की सलाह देते हैं[illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पांडे जी के अंदर से आवाज आती, पांडे तुम अलग हो! पांडे तुम कुछ खास हो! यह सब उन्हें मजबूत बनाता और वह अपनी धुन में वापस आ जाते। पांडे जी ने सबके लिए अच्छी भावनाएँ रखी थी पर अब उनके अपने लोग ही उनसे नाराज रहते थे। भला सिर्फ अच्छी भावनाएँ रखने से सब कुछ हो जाता है क्या? आज की दुनिया में वही प्यारा लगता है जो नोट देता है। इस मामले में पांडे जी कुछ कमजोर पड़ जाते थे। उनके पास बहुत पैसा नहीं था। जितना भी पैसा वह नौकरी में पाते थे, अपनी हैसियत के अनुसार देते भी थे। पर लोगों को सदा और की उम्मीद रहती है। पांडे जी कभी पैसे को महत्व नहीं देते थे पर अब उन्हें भी चाणक्य की सीख याद आती थी कि पैसा जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। आज के युग में वही गुणी है, कुलीन हैं जिसके पास पैसा है।

मैंने इस चीज को बहुत पहले पढ़ा था फिर भूल कैसे गया। मैंने भारी भूल की! शायद मैं किसी की बात नहीं सुनता था इसीलिए ऐसा हुआ। मेरे साथ वाले तो सब पैसे को महत्व देते थे फिर मैं कैसे चूक गया। लेकिन मेरा दोष भी क्या है? मुझे तो ज्यादा पैसे चाहिए नहीं, बच्चे अपने से कमाएँ। कहते भी हैं कि पूत सपूत तो का धन संचय और पूत कपूत तो का धन संचय। मेरी कमाई से एक पीढ़ी का काम चल जाता, फिर आगे तो अपनी मेहनत से ही काम चलता। आखिर टाटा, बिड़ला भी अपनी ही दम पर आगे आए हैं। मैं बिना मतलब का परेशान होता हूँ।

पांडे तुम्हारा कोई दोष नहीं है। आजकल की औलाद खुद कुछ नहीं करती है और दोष माँ-बाप को देती है। पांडे तुम अपने रास्ते पर आगे चलो! बढ़ते चलो ....बढ़ते चलो........। मुझे जीवन में किसी ने समझा नहीं! पांडे जी इस तकिया कलाम को अक्सर कहा करते थे।

वैसे उन्होंने भी कभी किसी को समझने की कोशिश नहीं की थी। वह सामने वाले को अपने तरीके से ही समझते थे। उन्हें लगता कि वह जैसा सोच रहे हैं, वही सत्य है।

हर इंसान में कुछ अच्छाई, बुराई होती है। मेरे अंदर भी हो सकती है। मैं भगवान तो हूँ नहीं!

पांडे जी कभी-कभी ऐसा भी सोचते थे। उनकी महत्वाकांक्षा अब उम्र के साथ ढलान पर थी। अब वह तीसरी पीढ़ी से बहुत उम्मीद नहीं करते थे। वह सिर्फ उनके लिए सुख और शांति की कामना ही करते थे। समय के साथ-साथ इंसान को महसूस होने लगता है कि इस जीवन में सुख और शांति ही सब कुछ है। झूठी प्रतिस्पर्धा के बजाए अपने काम पर ध्यान देना ज्यादा उचित होता है।

पांडे जी मुस्कुराने लगे! प्रसन्न रहना चाहिए और प्रसन्न रहूँगा। आखिर क्यों प्रसन्न नहीं रहूँ? मनुष्य का जन्म सिर्फ रुपया इकट्ठा करने के लिए नहीं हुआ है। और भी कई काम हैं। भगवान का नाम लेना और दूसरों की मदद करना इत्यादि। अभी तक भगवान का नाम ज्यादा नहीं लिया पर अब आगे लूँगा। क्यों चिंता करूँ धन की, यश की। जो है वह कम है क्या? भोलेनाथ भगवान शिव का भी जीवन अपनी तरह का अलग महत्व रखता है। उनके पास कुछ नहीं था पर हर कोई उनसे ही सब कुछ माँगता है।

हर इंसान अकेला आता है और अकेला ही जाएगा। दुनिया एक नाटक है अत: कई पात्र और साथ में जुड़ जाते हैं। सबको भगवान ने बराबर का शरीर इसीलिए दिया है जिससे सब मेहनत करके खा-जी सकें। अंदर से आवाज आई, 'पांडे तुम सही हो! पांडे तुम अलग हो! पांडे आगे बढ़ते रहो ....।'

पर पांडे जी के अंदर महत्वाकांक्षा का दिया अभी तक बुझा नहीं था। वह समझ रहे थे कि यह दबी महत्वाकांक्षा उन्हें पूर्णता का बोध नहीं होने देगी। उन्हें एक चीज पर गर्व हुआ कि उनके किसी भी लड़के और भतीजों में कोई अवगुण नहीं है। उन्होंने अपने गाँव में जाकर उन्नत किस्म की खेती करने की बात सोची। वह बड़ी ही लगन से इस कार्य में जुट गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत जल्द ही उनकी देखादेखी सभी लोग खेती में नए प्रयोग करने लगे।

बढ़ती जनसंख्या को अन्न तो चाहिए ही! एक दिन खेती बहुत बड़ा व्यापार बनेगा। बहुत से पढ़े-लिखे लोग इससे जुड़ेंगे।

पांडे जी को बहुत फायदा होने लगा और सबसे बड़ी बात उनके बेरोजगार भतीजे भी पैसे की सुगंध पाकर काम में मन लगाने लगे। पांडे जी को महसूस होने लगा कि अब उनके घर में भी पैसे की कमी नहीं रहेगी। अब कोई भी आलसी होकर घर में निठल्ला नहीं बैठा रहेगा। भगवान जो करता है, अच्छे के लिए ही करता है।

पांडे जी खुश हो गए। उनके अंदर से आवाज आई.........लगे रहो पांडे.............. आगे बढ़ो पांडे........ तुम अलग थे और अलग रहोगे पांडे.........!

क्वार्टर नंबर २६/१, टाइप ५ बी,
रेल अफसर कालोनी,
बिलासपुर, (छ. ग) पिन-४९५००४

(लेखक वर्तमान में दक्षिण पूर्व मध्य रेल उप मुख्य प्रबन्धक सूप्रो के पद पर कार्यरत, जन्म स्थान-रीवा मध्यप्रदेश, शिक्षा-एम टेक,

मोबाइल-०९७५२४७५८९१)

❖❖❖

युवा मंच

'साहित्य परिक्रमा' की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए एक नया स्तंभ परिसंवाद के रूप में 'युवा मंच' शीर्षक से प्रारंभ किया जा रहा है जिसके अंतर्गत 35 वर्ष की आयुसीमा के लेखक दिये गए विषय पर अपना अभिप्राय अधिकतम 650 शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। चयनित लेख आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे। इस बार का विषय है- **'साहित्य के प्रचार-प्रसार में इंटरनेट की भूमिका'**।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देशाटन-१

महाराष्ट्र दिवस (१ मई) पर विशेष

ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी

•

जयश्री जोशी

भारतभूमि संतों की भूमि मानी जाती है। कई संतों के अवतार कार्य ने इसे पवित्रता प्रदान की है। शायद इसी वजह से, भारतवर्ष में जन्म प्राप्त करना भाग्य का लक्षण माना जाता है। भारत के लगभग हर प्रांत में, किसी न किसी अवतार पुरुष का जन्म हुआ है, जिसके कारण भारतवर्ष की आध्यात्मिक नींव और भी मजबूत बनती गई है।

भारत की इस आध्यात्मिक परंपरा में, महाराष्ट्र का भी अपना अनूठा योगदान रहा है। संत रामदास, तुकाराम, एकनाथ, ज्ञानेश्वर, नामदेव, जनाबाई, बहीणाबाई, चोखा माली, गोरा कुंभार जैसे कई संत महाराष्ट्र ने भारत को दिये हैं। इन्हीं संतों में से एक हैं संत ज्ञानेश्वर।

संत ज्ञानेश्वर महाराज का जन्म सन् ११९३ में आपेगाँव में हुआ। माता का नाम था रुक्मिणी और पिता थे विठ्ठलपंत। ज्ञानदेव के बड़े भाई थे निवृत्तिनाथ, छोटे भाई सोपानदेव और बहन थी मुक्ताबाई। आगे चलकर बड़े भाई निवृत्तिनाथ से उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर महाराज को 'ज्ञानोबा' और 'माउली' के नाम से भी जाना जाता है। 'ज्ञानेश्वर विजय' नामक ग्रंथ में ज्ञानेश्वर महाराज का समग्र जीवन समाविष्ट है।

मराठी भाषा में एक भक्तिगीत लिखा गया है, जिसके शब्द हैं,

'ज्ञानदेव बाळ माझा, सांगे गीता भगवंता,
लक्ष द्या हो विनविते, मराठी मी त्याची माता।''

इसका अर्थ है कि मराठी भाषा स्वयं ईश्वर से प्रार्थना कर रही है कि, ''हे ईश्वर, यह ज्ञानदेव मेरा पुत्र है, मैं उसकी माता होने के नाते आपसे प्रार्थना कर रही हूँ कि, वह जो गीता का गान कर रहा है, उसे आप ध्यानपूर्वक श्रवण करें।

स्वयं मराठी भाषा ने जिन्हें अपना पुत्र समझा है, उन ज्ञानेश्वर महाराज का चरित्र कितना उच्चकोटि का रहा होगा। परमार्थ के क्षेत्र में आदि शंकराचार्य के अलावा इतना अद्‌भुत एवं अलौकिक चरित्र और कोई नहीं है। उनके व्यक्तित्व में अद्वैतानुभूति एवं पराभक्ति का एक अनोखा संगम देखने को मिलता है। 'अभंग', 'अमृतानुभव', 'चांगदेव पासष्टी', एवं 'ज्ञानेश्वरी' यानि कि 'भावार्थ दीपिका' उनकी ग्रंथ संपदा है। जिसमें 'ज्ञानेश्वरी', गीता पर आधारित ग्रंथ है, जो कि अधिक लोकप्रिय है। केवल सोलह वर्ष की छोटी-सी आयु में उन्होंने इतना विराट कार्य कर दिखाया है।

स्वामी विवेकानंद ने जिसे सर्व धर्मों की नींव बताया था, उस गीता का महत्व, भारतीय मानस में अनन्य साधारण माना जाता है, क्योंकि गीता में सभी उपनिषदों का सार है। इसमें कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का सुंदर निरुपण किया गया है। ऐसी गीता को अगर सरल, प्राकृत भाषा में समाज के सामने रखा जाय, तो अधिकाधिक लोग, इसका लाभ ले सकेंगे, यह ज्ञानेश्वर महाराज का उद्देश्य था।

ज्ञानेश्वर महाराज की इच्छा हमेशा से जगतोद्धार की रही है, ''अवघाचि संसार सुखाचा करीन। आनंदे करीन तिन्ही लोक।'' (पूरे विश्व को सुखमय कर दूँ। आनंद से भर दूँ तीनों लोक) यह उनकी प्रतिज्ञा थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्ञानेश्वरी की रचना करते समय अपनी मातृभाषा मराठी का गौरवगान करते हुए उन्होंने कहा है कि,

''माझा मराठाचि बोलू कौतुके।
परी अमृताते ही पैजा जिंके।
ऐसी अक्षरे रसिके। मेळवीन।।

इसका अर्थ यह है कि मेरी मातृभाषा मराठी होने की वजह से, इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम ही है। अगर कभी अमृत ने मधुरता के लिए शर्त रखी, तो मेरे मराठी शब्द अवश्य ही इस शर्त को जीत लेंगे, और ऐसे ही रससभर शब्दों का मैं प्रयोग करुंगा।

ज्ञानेश्वरी को साहित्य सृष्टि का एक बेजोड़ शिल्प माना जाता है। इस ग्रंथ में ज्ञानेश्वर महाराज ने विविध साहित्य प्रकारों का दर्शन करवाया है।

गीता पर आज तक कई भाष्य लिखे गये हैं, लेकिन ज्ञानेश्वर महाराज का दृष्टिकोण कुछ अलग ही है। उन्होंने कुशलता से ज्ञानेश्वरी की रचना की है, जगह-जगह पर उत्तम उदाहरण देकर बात को समझाने का प्रयास किया है। उनके द्वारा रची गई ओवीओं की रचना भी श्रेष्ठ दर्जे की मानी जाती है।

ज्ञानेश्वर महाराज जानते थे कि, तर्क प्रधान साहित्य नीरस और शुष्क होता है, साधारण व्यक्ति इसे ठीक से समझ नहीं पाता, इसलिए माउली ने अपने इस ग्रंथ में भक्ति मार्ग के माध्यम से तत्वज्ञान समझाया है। ज्ञानेश्वरी में शांत रस, अद्‌भुत रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस जैसे रसों का प्रभाव भी देखने को मिलता है, लेकिन इसमें शांत रस की प्रधानता है। शायद ज्ञानेश्वर महाराज स्वयं शांत वृत्ति के होने की वजह से ऐसा हुआ होगा। ज्ञानेश्वरी में अनुप्रास आदि अलंकारों का भी यथार्थ उपयोग किया गया है। उपमा अलंकारों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है।

ज्ञानेश्वरी में कर्म के बारे में बताया गया है लेकिन कर्मकांड नहीं है। भक्ति का निरुपण है, लेकिन बुद्धि का भी अस्तित्व है, यह भक्ति अंधी नहीं है। ज्ञानेश्वरी होने की वजह से इसमें ज्ञान का भी निरुपण किया गया है, लेकिन यह ज्ञान शुष्क नहीं है। ज्ञानेश्वरी के तत्वज्ञान में प्रेम का माधुर्य है, भक्ति में दिव्य दृष्टि है। इसमें दर्शित उदाहरणों के द्वारा ज्ञानेश्वर महाराज का सचराचर के प्रति प्रेमभाव प्रदर्शित होता है।

ज्ञानेश्वरी महाराष्ट्रीयनों के लिए जीवन रस के समान है। ज्ञानेश्वरी को पढ़ते समय, माउली की कोमल भावनाएँ महसूस होती रहती हैं। उदात्त कल्पना शक्ति, मधुर एवं कोमल शब्दों की समृद्धता, सरल ओवी रचना, यह सभी प्रथम श्रेणी की काव्य विशेषताएँ, ज्ञानेश्वरी में पाई जाती हैं। ज्ञानेश्वरी में वेदांत का निरुपण है, लेकिन यह निरुपण रससभर शब्दों में होने की वजह से, यह नीरस विषय भी मधुर बन गया है।

ज्ञानेश्वर महाराज को छप्पन भाषाओं का ज्ञान था, ऐसा कहा जाता है। नामदेव महाराज ने उनके बारे में लिखा है- 'छप्पन भाषेचा केलासे गौरव' (छप्पन भाषाओं का गौरव किया है)। ज्ञानेश्वरी में - छप्पन भाषाओं का प्रयोग किया गया है, यह ज्ञानेश्वर महाराज की, एवं ज्ञानेश्वरी की भी विशेषता कही जा सकती है। ज्ञानेश्वरी में तमिल, तेलुगु, कानड़ी, हिन्दी, गुजराती, कोंकणी इत्यादि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है। ज्ञानेश्वरी का कन्नड, तेलुगु, तमिल, संस्कृत, पंजाबी, हिन्दी, मलयालम, अंग्रेजी, गुजराती, उड़िया इत्यादि भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

ज्ञानेश्वर महाराज ने ज्ञानेश्वरी के माध्यम से एक सुसंवाद प्रस्थापित किया है। गीता के सात सौ श्लोकों का आधार लेकर माउली ने ९०१० ओवीओं के माध्यम से मानो एक अनोखा धर्मकीर्तन किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसे व्याकरण का ज्ञान हो, वह ज्ञानेश्वरी को आसानी से समझ लेगा, यह मानना गलत है। ज्ञानेश्वरी को समझने के लिए, इसमें जिन शास्त्रों का वर्णन किया गया है, उन शास्त्रों की भाषा का ज्ञान आवश्यक है। वैद्यक शास्त्र, वेदांत शास्त्र, न्याय शास्त्र, नीति शास्त्र, समाज शास्त्र जैसे विविध शास्त्र ज्ञानेश्वरी में समाविष्ट हैं। इन सभी शास्त्रों की जो विशिष्ट भाषाएँ है, उन भाषाओं का प्रयोग ज्ञानेश्वर महाराज ने ज्ञानेश्वरी में किया है, इसलिए ज्ञानेश्वरी का अभ्यास करते समय किस शब्द का प्रयोग, किस अर्थ में किया गया है, इसका अभ्यास भी जरुरी है।

ज्ञानेश्वरी का पठन करते समय, ज्ञानेश्वर महाराज की कल्पना शक्ति, स्फूर्ति, भाषा प्रभुत्व का हर पल दर्शन होता रहता है। संत ज्ञानेश्वर केवल आध्यात्मिक संत ही नहीं, लेकिन मराठी भाषा के भाषा प्रभु थे इस बात की भी प्रतीति होती रहती है। ग्रंथ के अंत में लिखा गया पसायदान, विशालता की एक परिसीमा है। केवल नौ ओवीओं का यह पसायदान, श्री ज्ञानेश्वर महाराज का आध्यात्मिक ऊँचाई की सभी सीमाओं को पार कर जाता है।

ज्ञानेश्वरी को समझने के लिए गीता का अध्ययन आवश्यक है। गीता के अध्ययन से, ज्ञानेश्वरी एक स्वतंत्र प्रज्ञा प्रतिष्ठित ग्रंथ है, इस बात की अनुभूति होती है। ज्ञानेश्वरी के अध्ययन से अध्यात्म का तत्वज्ञान सरलता से समझ में आता है। गीता एवं ज्ञानेश्वरी के अध्ययन से वेद एवं उपनिषदों के प्रति आकर्षण निर्माण होता है। यह एक ऊर्ध्वगमन है, यानि कि 'मुक्ति' का मार्ग है, जो कि गीता और ज्ञानेश्वरी का उद्देश्य है।

(ओवी अर्थात मराठी में साढ़े तीन चरण की रचना। माउली-प्रेम से उच्चारा गया 'माँ' का पर्याय।)

७-ए-१ किदवई नगर हाउसिंग सोसायटी
पटेल पार्क के पास, आर.टी.ओ. के पीछे
वारसिया, बड़ौदा-६
मो.-९७२३६३४८७३

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देशाटन -२

गुजरात दिन (१ मई) के उपलक्ष्य पर विशेष

संवाद : शब्दब्रह्म के साथ

निर्झरी मेहता

कुदरत का अजीबोगरीब करिश्मा है इन्सान। इस धरा पर बसे अन्य सभी प्राणवंत अस्तित्व तो जी लेते हैं उनकी सहज, प्राथमिक प्राकृतिक आवश्यकता के वशीभूत। इन्सान ही तो 'एकमेव' जीव है जो सहस्त्राब्दियों से अपनी प्राकृतिक सीमाओं से परे उठने का अथक, अविरत यत्न कर रहा है। इसी कारण इस हरित ग्रह पर सर्जनहार को भी शायद आश्चर्यमुग्ध कर दे इस प्रकार नवीन दुनिया खड़ी हो गई है। हाँ आज के वर्तमान समयखंड में हम इंसान जो जीवन जीते हैं, जिस परिवेश, सुविधा से जी रहे हैं वह इंसान की ही रची हुई है। इसी दौर में इन्सान खुद के अकेले की लड़ाई से, उस परिधि से युगल, परिवार, मोहल्ला, ग्राम, नगर, इलाका, प्रांत और राष्ट्र के एक -एक बृहत् होते वलयों के आवर्तन में क्रमशः विकसित होता चला है। भारतवर्ष की छवि वर्तमान में जो उभरी है उसमें सदियों से भाँति- भाँति के बदलाव आते रहे हैं। पर कई ऐसे तत्व हैं जो काल के बहाव के दौरान भी जैसे के तैसे हैं - अविचल हैं। ये अचल, चिरंतन सत्व ही हमारी भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं । उस परब्रह्म ने जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश - इन पंचमहाभूतों के संयोजन से इस सृष्टि की रचना की। हमारे अस्तित्व को मनुष्यत्व प्रदान करते अहम् तत्वों को भी भारतीय संस्कृति ने ब्रह्म के समकक्ष स्थान प्रदान किया है - अग्निब्रह्म, नादब्रह्म, शब्दब्रह्म......

शब्दब्रह्म की आराधना के यज्ञकार्य से जुड़े सभी सर्जकों के लिए शब्दब्रह्म के जरिये हमारे अस्तित्व का सर्जनात्मक अवतरण - अभिव्यक्ति...उस बारे में सोचना, इससे संवाद रचना अत्यंत आकर्षक अनुभव होता है।

शब्द - वाक की उत्पत्ति मनुष्य जाति की अहम् उपलब्धि है, और शब्दब्रह्म की परिकल्पना हमारी अस्मिता का असाधारण उन्मेष है। इसी संदर्भ में गुजराती कवि श्री मनोज खंडेरिया का नाम एकदम उभर आता है। स्वातंत्र्योत्तर काल के गुजराती काव्यजगत में मनोज खंडेरिया का सृजन लोमहर्षक है। मनोज खंडेरिया साठ साल की आयु (१९४३ - २००३) में इस विश्व को अलविदा करके चले गये। वे गुजराती साहित्य में ग़ज़ल क्षेत्र में अप्रतिम योगदान दे गये हैं। गीत, अतुकांत काव्यविधा में भी उन्होंने सृजन किया है। व्यावहारिक प्रयोजन हेतु उपयोग में जो शब्द हैं उससे अलग प्रकार का शब्द, ऋग्वेद ने जिसे 'शब्द ज्योति- आख्य' कहा है वैसा शब्द जो कि सर्जनसूर्य के रथ का रथी है - मनोज खंडेरिया के काव्यों का प्रधान सूर है, अहम् तान है। शब्दब्रह्म स्वरूप 'शब्द' और शब्दों की अप्रतिम चारु अभिव्यक्ति - काव्य - दोनों मनोज जी के सर्जन के प्रिय उपादान हैं। मनोज खंडेरिया - खंडेरिया का मतलब खंडहर में रहने वाला पर मनोज जी की सर्जक प्रतिभा ने गुर्जर काव्यविश्व में सर्जकत्व का भव्य महल खड़ा कर दिया है। 'शब्द' और 'काव्य' तत्व कवि के सर्जकत्व के अणु- अणु में रसबस गये हैं। वे कहते हैं -

'बसे हैं लहू में नवसौ नब्बे गाँव
बगैर कविता के मुझ में नहीं एक भी ठाँव-'

भारतीय अस्मिता की विजय पताका समान शब्द ब्रह्म विभावना को लहू के लय के साथ जी रहे इस कवि के शब्द - जो कि उनकी सर्जक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का माध्यम है - वही उनके समग्र अस्तित्व का मूलाधार है। देखते हैं इन पंक्तियों में उनकी सर्जन अदा -

'रस्में यहाँ की जुदा, नियम एकदम अलग,
हमारे लिए तो शब्द ही है कुमकुम और अक्षत'

हर भाषा की अपनी आभा होती है - गुजराती काव्य की मूल पंक्ति भी आस्वाद्य होगी-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रसम अहीं जुदी, नियम साव नोखा
अमारे तो शब्दों ज कंकु ने चोखा'

ये पंक्तियाँ शब्द के उपासक हर गुजराती सर्जक के लिए मंत्र समान हो गई हैं। भारतीय अस्मिता के सर्जन में इस प्रकार का विनियोग सचमुच मंत्रमुग्ध कर देता है। पंचमहाभूत के पाँच तत्वों पर लिखा गया पाँच काव्यों का काव्य गुच्छ विशिष्ट है। वे कहते हैं-

'हम तो रिक्त आवासों की सांय -सांय हैं
हम तो बारिश हवा के, या मनुष्य ही हवा है।'
'कहीं किसी में मिल न सका आकाश
अंधकार के साथ मिल गया अपना आकाश'।

'ऊँगली में से अवतरित हुई अग्नि,
अक्षर बन विस्तारित हुई अग्नि'।
'सालों के बाद खुली मुट्ठी,
तो निकली चुटकी भर मिट्टी,
रहस्यों को सुलझाने का अर्थ वही,
मनुष्य माने मिट्टी'।

कहाँ से आये? न पूछो मूल हमारा ,
आखिर में तो पानी में मिलता हुआ पानी हैं हम।

मनुष्य के अस्तित्व ये पाँच मूल तत्वों का मनुष्य से अनगिनत विधाओं में जो संबंध है उसे उनकी सर्जकता ने इस काव्यगुच्छ में अनेकविध कल्पना से बखूबी अभिव्यक्त किया है। सर्जकत्व, काव्य, शब्द के वे मानो परम उपासक हैं, याज्ञिक हैं। सर्जक प्रतिभा के सर्जनकर्म के पुरुषार्थ को वे जमुनाजल के बीच रास्ता पाने वाले टोकरी में लेटे बालकृष्ण के कल्पन से व्यक्त करते हैं-

(टोपलीमां तेज लई नीकली पडो, पाणीनी वच्चे रस्ता थई जशे)

'टोकरी में तेज लेकर निकल पड़ो,
हो जायेंगे पानी के बीच रास्ते' ।

उनकी सृजनात्मकता के तेज का निखार उनकी समग्र रचनाओं में प्रबलता से पाया जाता है, यत्र तत्र सर्वत्र फैला हुआ है-

'शब्द हमारी तक्षशिला,
और कविता को समझा हमने नालंदा'।

वे अपने कविकर्म के बारे में कहते हैं-

'कविता तो है ढाकाई मलमल मुलायम,
ऊँगलियों से चलती रही बुनाई हरपल'।

'कविता तो है कागज पर उतरे नखचित्र,
अनूठी नजाकत से छपा है नख'।

उचित शब्द की प्राप्ति से धन्यता महसूस करता उनका हृदय बोल उठता है-

'सौभाग्य मेरा कि मिले शब्द मुझे पहुँचाने तेरे नगर,
वर्ना चरण ले कर चलता तो लग जाते बरसों बरस'।

एक सर्जक के लिए पूरी जिंदगी के संदर्भ में शब्द क्या मायने रखते हैं इस बारे में देखते हैं उनकी अभिव्यक्ति-

'शब्द को मैंने पंक्ति में ढाल दिया,
एक झंझावात को मैंने टाल दिया'।

उनके एक काव्य 'अंधार शब्दनो' में वे शब्द के इतने सारे पहलू उजागर करते हैं कि कवि की सर्जकता का व्याप हमें संपर्क सभरता का अनुभव अवगत कराता है। शब्द के प्रभाव, सामर्थ्य के बारे में वे कहते हैं कि शब्द का विस्तार हवा के समान है, वायु भी उसके आरपार निकल नहीं पाता। पूरा विश्व शब्द का अवलंबन ले कर खड़ा है। साथ-साथ ही वे कहते हैं - 'जब सात सूरज साथ मिलकर प्रकाशित होंगे तब शब्द बर्फ की भाँति पिघल जाएगा'। अंत में वे कहते हैं।

आज नयन में लगाओ अंजन गेरुए रंगी गगन का
आज हमें शोभा नहीं देगा शृंगार शब्द का।

शब्द के आराधक जब अंदरूनी माँग महसूस करते हैं तब शब्द के पार के मौन प्रदेश, जोकि हर शब्द की अंतिम परिणति है - उसकी अभिलाषा करते हैं। भारतीय अस्मिता की सर्वोच्च परिकल्पना शब्दब्रह्म को अपने सर्जकत्व के तेज निखार से सहलाने वाले इस सर्जक गुजराती साहित्य विश्व का धन्यनाम है।

श्री मनोज खंडेरिया के समकालीन सर्जक श्री माधव रामानुज (१९४३) को भी यहाँ याद करना उपयुक्त होगा। सर्जकत्व की अभिव्यक्ति के पहलू से देखें तो मनोज खंडेरिया ग़ज़ल के चक्रधर हैं, तो माधव रामानुज गीत विधा में अहम् स्तंभ हैं। सृजन का उन्मेष दोनों में प्रचुर मात्रा में है। माधव रामानुज उनके 'अमे तो-' काव्य में मौन और शब्द की जिस कमनीयता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अभिव्यक्ति करते हैं वह प्रशंसनीय है।

'हम तो हैं समंदर मौन के
किनारे शब्द बन कर मिलते रहे' ('तमे', पृष्ठ-३३)

माधव रामानुज के कृष्ण-राधा-गोपी के विविध संवेदना युक्त काव्य , जनपद -आंचलिक माहौल में जी रहे लोगों की संवेदना से जुड़े काव्य अभिव्यक्ति की विशिष्ट मुद्रा लेकर आते हैं। उनके काव्य सदाबहार काव्य हैं। उनकी विरहिणी गोपी कहती है -

'रोते-रोते उमड़ आयें यदि नदियाँ आँसू की
तो, बो देना कदम्ब वृक्ष उसके तट पर' ('तमे', पृ-५७)

एक अन्य कविता में अपने खेत में लहलहाते पौधों को देख उल्हासित किसान अपनी पत्नी को बेटी के गौने के बारे में कहता है। यह काव्य गुजराती बानगी का वैशिष्ट्य प्रकट करते चिरविस्मरणीय हो गया है। उसमें किसान कहता है-

'पानेतर (शादी का जोड़ा) पहने खड़ी कन्या सी
लगती है जी गाँव की यह बाहरी सीमा'

('तमे', पृ-७८)

खेत-खलियानों में साँस लेता आदमी ही इस तरह महसूस कर सकेगा। भारतीय अस्मिता का आंचलिक माहौल और जनपदीय जीवन की सौंधी मिट्टी की सुगंध की अभिव्यक्ति में माधव रामानुज की रचनाओं में लोकगीतों का लयमाधुर्य अनुभव कर सकते हैं। 'आपणुं गीत' रचना में कवि खुद के बारे में बताते हैं कि घूमती हवा समान घुमक्कड़ वे हैं।

'हम तो हैं जी रमताराम
बहती हवा तो आये और जाये
नहीं बनाये उसने कहीं गाँव'

('तमे', पृ-९६)

मध्यकाल में गुजरात प्रांत में छोटे- छोटे ग्राम युद्ध (धींगाणा-गुजराती शब्द) में मर मिटने वालों के नाम के खास प्रकार के पत्थर गाड़े जाते थे। सिंदूर चढ़ा कर उनका पूजन होता था। ऐसे स्मारक को 'पाळिया' कहते हैं। इस पर लिखी गई कविता 'पादरमां' (सिवान पर) गुजराती साहित्य की यादगार रचना है।

'एक बार झरा था खून गर्म-गर्म
अब बहता है सिंदूर वहाँ
हम तो सिवान पर हुए वार से
गिर कर बिखरे थे जमीं पर!'

यहाँ कवि ने गुजराती में पत्ते-फल पौधे से अपने आप गिरते हैं उसके लिए प्रायोजित शब्द 'खरी गया' शब्द का प्रयोग किया है। वीर योद्धा तलवार से वार होने पर भी फूल की तरह सहजता से अपने प्राण निछावर कर गए।

शब्दब्रह्म के साथ संवाद करने वाले और संवाद रचने वाले सर्जकों के सर्जन का आस्वादन हमें प्रतीति करवाता है कि यह 'शब्द' शाश्वत है। कवि श्री मनोज खंडेरिया की एक सूत्र समान काव्य पंक्ति यहाँ याद आ रही है-

'न कट पायेगा, न जल सकेगा,
न होगा गीला, न होगा पुराना
यह तो है शब्द कवि का
नहीं है इस 'शब्द' का कोई भी विकल्प'

सर्जक का शब्द अपने आप में स्वयं पर्याप्त है। उसका कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। भारतीय अस्मिता का शब्द स्वरूप के माध्यम से अवतरण हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी उपलब्धि है। बीत चुकी अनेक सदियों का आने वाली अनगिनत सदियों के साथ शब्दब्रह्म के माध्यम से संवाद होता रहेगा, संवाद रचता भी रहेगा...परम मौन की प्रतीक्षा में!

B-२०१/२०२, SHIKHAR - I,
Nr. Arunachal Char Nr. Gorwa Work Shop,
Subhanpura, Vadodara-३९००२३. Mob.:
९३७७१ ७१९९१/९३७७६९०९१०

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'रसम अहीं जुदी, नियम साव नोखा
अमारे तो शब्दों ज कंकु ने चोखा'

ये पंक्तियाँ शब्द के उपासक हर गुजराती सर्जक के लिए मंत्र समान हो गई हैं। भारतीय अस्मिता के सर्जन में इस प्रकार का विनियोग सचमुच मंत्रमुग्ध कर देता है। पंचमहाभूत के पाँच तत्वों पर लिखा गया पाँच काव्यों का काव्य गुच्छ विशिष्ट है। वे कहते हैं-

'हम तो रिक्त आवासों की सांय -सांय हैं
हम तो बारिश हवा के, या मनुष्य ही हवा है।'
'कहीं किसी में मिल न सका आकाश
अंधकार के साथ मिल गया अपना आकाश'।
'ऊँगली में से अवतरित हुई अग्नि,
अक्षर बन विस्तारित हुई अग्नि'।
'सालों के बाद खुली मुट्ठी,
तो निकली चुटकी भर मिट्टी,
रहस्यों को सुलझाने का अर्थ वही,
मनुष्य माने मिट्टी'।
कहाँ से आये? न पूछो मूल हमारा ,
आखिर में तो पानी में मिलता हुआ पानी हैं हम।

मनुष्य के अस्तित्व ये पाँच मूल तत्वों का मनुष्य से अनगिनत विधाओं में जो संबंध है उसे उनकी सर्जकता ने इस काव्यगुच्छ में अनेकविध कल्पना से बखूबी अभिव्यक्त किया है। सर्जकत्व, काव्य, शब्द के वे मानो परम उपासक हैं, याज्ञिक हैं। सर्जक प्रतिभा के सर्जनकर्म के पुरुषार्थ को वे जमुनाजल के बीच रास्ता पाने वाले टोकरी में लेटे बालकृष्ण के कल्पन से व्यक्त करते हैं-

(टोपलीमां तेज लई नीकली पडो, पाणीनी वच्चे रस्ता थई जशे)

'टोकरी में तेज लेकर निकल पड़ो,
हो जायेंगे पानी के बीच रास्ते' ।

उनकी सृजनात्मकता के तेज का निखार उनकी समग्र रचनाओं में प्रबलता से पाया जाता है, यत्र तत्र सर्वत्र फैला हुआ है-

'शब्द हमारी तक्षशिला,
और कविता को समझा हमने नालंदा'।

वे अपने कविकर्म के बारे में कहते हैं-

'कविता तो है ढाकाई मलमल मुलायम,
ऊँगलियों से चलती रही बुनाई हरपल'।
'कविता तो है कागज पर उतरे नखचित्र,
अनूठी नजाकत से छपा है नख'।

उचित शब्द की प्राप्ति से धन्यता महसूस करता उनका हृदय बोल उठता है-

'सौभाग्य मेरा कि मिले शब्द मुझे पहुँचाने तेरे नगर,
वर्ना चरण ले कर चलता तो लग जाते बरसों बरस'।

एक सर्जक के लिए पूरी जिंदगी के संदर्भ में शब्द क्या मायने रखते हैं इस बारे में देखते हैं उनकी अभिव्यक्ति-

'शब्द को मैंने पंक्ति में ढाल दिया,
एक झंझावात को मैंने टाल दिया'।

उनके एक काव्य 'अंधार शब्दनो' में वे शब्द के इतने सारे पहलू उजागर करते हैं कि कवि की सर्जकता का व्याप हमें संपर्क सभरता का अनुभव अवगत कराता है। शब्द के प्रभाव, सामर्थ्य के बारे में वे कहते हैं कि शब्द का विस्तार हवा के समान है, वायु भी उसके आरपार निकल नहीं पाता। पूरा विश्व शब्द का अवलंबन ले कर खड़ा है। साथ-साथ ही वे कहते हैं - 'जब सात सूरज साथ मिलकर प्रकाशित होंगे तब शब्द बर्फ की भाँति पिघल जाएगा'। अंत में वे कहते हैं।

आज नयन में लगाओ अंजन गेरुए रंगी गगन का
आज हमें शोभा नहीं देगा शृंगार शब्द का।

शब्द के आराधक जब अंदरूनी माँग महसूस करते हैं तब शब्द के पार के मौन प्रदेश, जोकि हर शब्द की अंतिम परिणति है - उसकी अभिलाषा करते हैं। भारतीय अस्मिता की सर्वोच्च परिकल्पना शब्दब्रह्म को अपने सर्जकत्व के तेज निखार से सहलाने वाले इस सर्जक गुजराती साहित्य विश्व का धन्यनाम है।

श्री मनोज खंडेरिया के समकालीन सर्जक श्री माधव रामानुज (१९४३) को भी यहाँ याद करना उपयुक्त होगा। सर्जकत्व की अभिव्यक्ति के पहलू से देखें तो मनोज खंडेरिया गज़ल के चक्रधर हैं, तो माधव रामानुज गीत विधा में अहम् स्तंभ हैं। सृजन का उन्मेष दोनों में प्रचुर मात्रा में है। माधव रामानुज उनके 'अमे तो-' काव्य में मौन और शब्द की जिस कमनीयता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अभिव्यक्ति करते हैं वह प्रशंसनीय है।

'हम तो हैं समंदर मौन के
किनारे शब्द बन कर मिलते रहे' ('तमे', पृष्ठ-३३)

माधव रामानुज के कृष्ण-राधा-गोपी के विविध संवेदना युक्त काव्य , जनपद -आंचलिक माहौल में जी रहे लोगों की संवेदना से जुड़े काव्य अभिव्यक्ति की विशिष्ट मुद्रा लेकर आते हैं। उनके काव्य सदाबहार काव्य हैं। उनकी विरहिणी गोपी कहती है -

'रोते-रोते उमड़ आयें यदि नदियाँ आँसू की
तो, बो देना कदम्ब वृक्ष उसके तट पर' ('तमे', पृ-५७)

एक अन्य कविता में अपने खेत में लहलहाते पौधों को देख उल्हासित किसान अपनी पत्नी को बेटी के गौने के बारे में कहता है। यह काव्य गुजराती बानगी का वैशिष्ट्य प्रकट करते चिरविस्मरणीय हो गया है। उसमें किसान कहता है-

'पानेतर (शादी का जोड़ा) पहने खड़ी कन्या सी
लगती है जी गाँव की यह बाहरी सीमा'

('तमे', पृ-७८)

खेत-खलियानों में साँस लेता आदमी ही इस तरह महसूस कर सकेगा। भारतीय अस्मिता का आंचलिक माहौल और जनपदीय जीवन की सौंधी मिट्टी की सुगंध की अभिव्यक्ति में माधव रामानुज की रचनाओं में लोकगीतों का लयमाधुर्य अनुभव कर सकते हैं। 'आपणुं गीत' रचना में कवि खुद के बारे में बताते हैं कि घूमती हवा समान घुमक्कड़ वे हैं।

'हम तो हैं जी रमताराम
बहती हवा तो आये और जाये
नहीं बनाये उसने कहीं गाँव'

('तमे', पृ-९६)

मध्यकाल में गुजरात प्रांत में छोटे- छोटे ग्राम युद्ध (धींगाणा-गुजराती शब्द) में मर मिटने वालों के नाम के खास प्रकार के पत्थर गाड़े जाते थे। सिंदूर चढ़ा कर उनका पूजन होता था। ऐसे स्मारक को 'पाळिया' कहते हैं। इस पर लिखी गई कविता 'पादरमां' (सिवान पर) गुजराती साहित्य की यादगार रचना है।

'एक बार झरा था खून गर्म-गर्म
अब बहता है सिंदूर वहाँ
हम तो सिवान पर हुए वार से
गिर कर बिखरे थे जमीं पर!'

यहाँ कवि ने गुजराती में पत्ते-फल पौधे से अपने आप गिरते हैं उसके लिए प्रायोजित शब्द 'खरी गया' शब्द का प्रयोग किया है। वीर योद्धा तलवार से वार होने पर भी फूल की तरह सहजता से अपने प्राण निछावर कर गए।

शब्दब्रह्म के साथ संवाद करने वाले और संवाद रचने वाले सर्जकों के सर्जन का आस्वादन हमें प्रतीति करवाता है कि यह 'शब्द' शाश्वत है। कवि श्री मनोज खंडेरिया की एक सूत्र समान काव्य पंक्ति यहाँ याद आ रही है-

'न कट पायेगा, न जल सकेगा,
न होगा गीला, न होगा पुराना
यह तो है शब्द कवि का
नहीं है इस 'शब्द' का कोई भी विकल्प'

सर्जक का शब्द अपने आप में स्वयं पर्याप्त है। उसका कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। भारतीय अस्मिता का शब्द स्वरूप के माध्यम से अवतरण हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी उपलब्धि है। बीत चुकी अनेक सदियों का आने वाली अनगिनत सदियों के साथ शब्दब्रह्म के माध्यम से संवाद होता रहेगा, संवाद रचता भी रहेगा...परम मौन की प्रतीक्षा में!

B-२०१/२०२, SHIKHAR - I,
Nr. Arunachal Char Nr. Gorwa Work Shop,
Subhanpura, Vadodara-३९००२३. Mob.:
९३७७१ ७१९९१/९३७७६९०९१०

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नव वर्ष के दोहे

•

प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

अंधकार सब ढल गया, बिखरा है आलोक।
नवल वर्ष की नव सुबह, निखरा सारा लोक।।

जोश हृदय में भर गया, खिला-खिला हर भाव।
करना है कुछ अब नवल, यही पल रहा ताव।।

देना है दुर्भाग्य को, निज करनी से मात।
उजला होगा हर दिवस, दूर भगेगी रात।।

नगमा होगा अब नया, और नया सुर-ताल।
शुभ-मंगल, पावन रहे, आ पहुंचा जो साल।।

स्वर्णिम-हियकर लग रही, खिली-खिली यह भोर।
शुभ भावों का हर तरफ, गूँज रहा है शोर।।

अंतर्मन प्रमुदित हुआ, खुशियों का आवेग।
अधर-अधर को दे रहे, नये वर्ष का नेग।।

बीता कल अब है विगत, अब आगत की बात।
अब मिलना तय हो गया, असफलता को मात।।

मायूसी अब और ना, मुस्कानों का काल।
खुशहाली से हो गया, हर जन माला-माल।।

प्रगति का आसार है, नया रचेंगे पाँव।
उजले अब हो जाएंगे, नगर और हर गाँव।।

नये साल पर आपको, खुशियों की सौगात।
कष्ट और दुख दूर हों, मंगल की बरसात।।

➤ विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.) -४८१६६१

नववर्ष से

•

कुलभूषण कालड़ा

काल के आँगन में
पदार्पण करने वाले
ए नव वर्ष!
तुम
तनावग्रस्त
बाधाओं से त्रस्त
तथा
अतृप्तियों से पीड़ित
लोगों की
पूरी कर देना
सभी अभिलाषाएँ।
तुम्हारे स्वागत की
वेला में
लोग विचर रहे हैं
अपने आकांक्षाओं भरे
आकाश में
देखना
उनकी हर उड़ान
उपलब्धियों को छूती हुई
नए आयाम संजोए
तुम भटक रही मानवता को भी
दे देना सही दिशा
और
मुट्ठी भर आकाश
चाहने वालों को
दे देना
उनके हिस्से का आकाश।
तुम सब का
कड़वा अतीत भुलाना
और अपने युग को
सभी के
साकार सपनों का
स्वर्ण युग बनाना।

➤ २७, मजरेठिया एनक्लेव
फेज २, पटियाला (पंजाब)-१४७००५
मोबाइल- ९८१४२४५१७४

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लो बसंत आ गया

डॉ. सीताराम गुप्ता 'दिनेश'

लो बसंत आ गया, आम्र कुंजों
से कोयल रानी बोली।
मंजरियों की मधुर गंध पर
मतवाली मधुपों को टोली।

फूली सरसों के खेतों में
मुस्काती अलसी की कलियाँ।
खड़ी घेरकर के कान्हा को
मानो राधा संग गोपियाँ।

स्वर्ण चूड़ियाँ कंगन पहिने
नव कुसमित कदंब की डालें।
चना प्रफुल्लित है खेतों में
झूम रहीं गेहूँ की बालें।

धरती के हरिताम्बर पर
सुन्दर पलाश के फूल खिले हैं।
बासंती वैभव बिखरा
भू को अनुपम उपहार मिले हैं।

फसलें हुईं जवान, वनस्पतियाँ
अब फूली नहीं समातीं।
किसलय शिशुओं को गोदी ले
तरुओं की डालें हरसातीं।

शरदी से भयमुक्त, हुए
अमरुद बेर अब मीठे गोरे
समरस हैं निशि-दिवस, धूप
अब आ जाती है बड़े सवेरे।

मृदुल धूप के आलिंगन से
पुलकित पवन सुखद हो जाता।
वन उपवन में घूम-घूमकर
फल-फूलों की खुशबू लाता।

मन के उपवन में मन सिजने
मधु ऋतु के संग डेरा डाला।
रंभा सी है प्रकृति मोहिनी
मनमोहक मौसम मतवाला।

पुलकित प्रणय प्रमोद चाहता
मधुरालिंगन में बाहों में।
प्रकृति चाहती दो दिल मिलकर
साथ चलें जीवन-राहों में।

शर्ब्द स्पर्श रस रूप गंध
सबमें उमंग आह्लाद भरा है।
समरसता सर्वत्र महकती
स्वस्थ सुखी संपन्न धरा है।

✍ डॉ. सीताराम गुप्त 'दिनेश'
एम.ए. विद्या वाचस्पति (पी.एच.डी.)
मढ़ी परिसर आलमपुर, जिला भिण्ड (म.प्र.)
पिन- ४७७४४९

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत

कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

खुशबू की पगडंडी पर काँटे भी होते हैं,
देने वाला खूब दे रहा फिर क्यों रोते हैं।
सदियों से मन के गुलाम हम बनते ही आए
मान और सम्मानों को पा तनते ही आए,
इस अनन्त भव सागर में गोते ही गोते हैं।
कर्मों का बन्धन तो अच्छा बुरा सभी होता
बीज अंकुरित निश्चित होगा जो जैसा बोता
सब कुछ जान बने अनजाने रहते थोते हैं,
मानुष की यह आखिर सीढ़ी चढ़ना जान सको
हर घर का जो कहते वासी उसको जान सको
कदम-कदम जगती ऊपर लाखों समझौते हैं।
वेद पुराण दया करते जब याद करें इनको
कितने जन्म बिताते आए समझाते मन को
समय अचूक मिला जगने का क्यों अब सोते हैं
देने वाला खूब दे रहा फिर क्यों रोते हैं।

ग़ज़ल

कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

कतरा-कतरा उम्र का गलने लगा,
आदमी बे-होश सा चलने लगा।
खिलखिलाता है यहाँ बस बाहरी,
सूर्य के मानिंद यह ढलने लगा।
आज तक जो कुछ सुना समझा किया,
असलियत को देख, जल भुनने लगा।
साथ सपनों के उजालों में फिरे,
लाल-पीले रंग में घुलने लगा।
अब कहाँ आँसू निकलते आँख से,
शेष पानी जो बचा जलने लगा।
मौसमों का हाल, खबरें देश की,
छोड़ रोटी, आजकल पलने लगा।
भेद सोने का 'अचूक' न जानता-
इसलिए हाथों को अब मलने लगा।

कवि गीतकार समालोचक पत्रकार एवं समीक्षक, मो. ०९९८३८११५०६

मन

कुलतार कौर कक्कर

मन सरोवर में हैं विकसित
प्रीत के मधुमीत शतदल,
मन के अम्बर पर विहँसते
कामना के दीप अविचल।
साधना का सारथी यह,
मुक्ति मन्दिर द्वार खोले।
उस अधीश्वर तक ले जाये,
शान्त स्थिर हौले-हौले।
स्वच्छ दर्पण सा दिखाये
चंचला द्युति लहर संबल:
मन सरोवर में हैं विकसित
प्रीत के मधुमीत शतदल।।
आकाश और पाताल कितने,
मन मँजूषा में समाये।
कितनी धरा, कितने धरातल,
मन के वश में होते आए।
धीर है पर मन की गति है,
सिन्धु लहरों से भी चंचल
मन सरोवर में हैं विकसित,
प्रीत के मधुमीत शतदल।।
मन अकेला कब कहाँ है
संग हैं कितनी व्यथायें
मन बनाता है वियोगी
प्रेम की अभिनव कथायें।।
वेदना के साथ सुरभित,
नेह का नवनीत कोमल।
मन सरोवर में हैं विकसित
प्रीत के मधुमीत शतदल।।
मन सजल है, मन सजग है,
विश्व वन्दित चेतना है।
शीत और ऋतुराज लाना,
मन की ही तो कल्पना है।
नयन की कामाक्षी भाषा,
दृष्टि में समहित है केवल।
मन सरोवर में हैं विकसित
प्रीत के मधुमीत शतदल।।

२१४, पुराना अशोका गार्ड
भोपाल
फोन: २५९१७५८

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

•

केशव शरण

लहर-लहर थमी रही,
उदास-सी नदी रही।
न रंग-रूप-रस रहा,
न गंध ही बची रही।
अंजोरिया न चार पल,
सदी अमावसी रही।
बजा बुलन्द बैण्ड था,
खमोश बांसुरी रही।
जहान में न हो परी,
निगाह में वही रही।
रहस्य प्रेम का अगम,
बहस गली-गली रही।
विलास-भाव जिन्दगी,
विषाद से भरी रही।

हमने ही न चाहत की मौसम की इजाज़त थी,
ऐ यार मुहब्बत की मौसम की इजाज़त थी।
कीचड़ ही जरा लगता बारिश के मजे लेते,
हमने ही नफासत की मौसम की इजाज़त थी।
जो आग लगायी थी बरसात ने तन-मन में,
उस आग से राहत की मौसम की इजाज़त थी।
जो लुत्फ बरसता था उस लुत्फ में मरना था,
थी शाम कयामत की मौसम की इजाज़त थी।
संकोच, शराफत की ये हमको पड़ी थी क्या,
हर एक शरारत की मौसम की इजाज़त थी।
निकलो न कहीं बाहर घूमो न घटाओं में,
रस्मों से बगावत की मौसम की इजाज़त थी।
दुनिया की हुकूमत है कुदरत की न सुनती है,
हर दिल ने शिकायत की मौसम की इजाज़त थी।

एस २/५६४ सिकरौल, वाराणसी २२१००२, मो.-०९४१५२९५१३७

गजल

डॉ. 'दरवेश' भारती

वो दोस्त ही दिखे हमें जब सामने रहे,
लेकिन दिलों में दोनों परस्पर ठने रहे।
जब इस जहाँ को ठीक-से समझे तो ये लगा,
चेहरों की भीड़ का यूँ ही हिस्सा बने रहे।
हिम्मत तो देखें आप जरा इन दरख्तों की,
थी भुरभुरी जमीन मगर ये तने रहे।
सुनाया जिसे था जुल्म का किस्सा, वो बहरा था,
जो कुछ था कहना उसके न कुछ मायने रहे।
वो पाको-साफ खुद को बताने लगा है आज,
ताउम्र जिसके हाथ लहू से सने रहे।
जिनके हवाले की थी हिफाजत की बागडोर,
इन्सानियत के कत्ल में वो सरगने रहे।
आया जब इम्तिहान का मौका तो चुप रहा,
कहने को यूँ तो रिश्ते हमारे घने रहे।
हालत रही अवाम की क्या लोकतन्त्र में,
दुष्यन्त की जुबान में सब झुनझने रहे।
सुख, दुख, खुशी, मलाल सभी एक हैं तो फिर,
'दरवेश' हो के भी कहो क्यों अनमने रहे।

जो जीने-मरने का जज्बा दिलों में रखते हैं,
वो मुश्किलों से कहाँ हार मान सकते हैं।
निखरते हैं वही कुन्दन की तरह जीवन में,
जो जिद्दो-जहद की भट्टी में तपते रहते हैं।
सियासी रंगमहल है अजीब रंगमहल,
यहाँ अवाम को सपने सलोने छलते हैं।
गजल पे ऐसे अरूजी भी मेहरबान हैं आज,
जो हाथ सर पे न रखकर गले पे रखते हैं।
खुलूस और मोहब्बत से क्या गरज उनको,
जो सोते-जागते नफरत के ख्वाब बुनते हैं।
तू जिनकी आस लगाये हुए है वो तो खुद,
पराये पंखों के दम पर उड़ान भरते हैं।
अदब में भी हैं कुछ ऐसे अदीब ऐ 'दरवेश',
जो अपना काम निकलते ही चल निकलते हैं।

संपादक, गजल के बहाने
५४५१ शिव मार्केट न्यू चन्द्रावल
जवाहर नगर, दिल्ली-७ मो. ९२६८७९८९३०

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवितायें

•

साहिल

होली

होली के रंग अंग महक उठे खिलकर
अबीर की सुवास कैसी अंग में समाई है।
पावन पुनीत प्रेम पाणि भर बाँटती,
खुशी की रंगीली होली आज फिर आई है।
बालक-जवान, बूढ़े एक नजर आते,
सबके लबों पें एक मीठी सी ठिठाई है।
काकी-ताई-चाची की न होती है परख अब,
ऐसों लगें लागें सब-सब क़ी भौजाई हैं।
धर्मवाद-जातिवाद भूल सब गले मिलें,
हंसा के मिलन की मधु ऋतु आई है।।

बसन्त

झौर-झौर बौर से भरे हैं रसाल सब,
बसन्त बहार कैसी छाय रही बागन में।
कोयल कों कौन सानी बोलत मधुर बानी,
भरत खुशी सब मादक मनन में।।
लुक-छिप हवा के संग क्रीड़ा जो करत है,
गीतों का गुंजार अब होता है वनन में।
जूँही औ गुलाब सब भामरी दे नाचत हैं
गेंदान की क्यारी जो मन उरझात हैं।
बासन्ती बयार से मन पुलकित होय,
नये-नये रंग लिए सजे सब गात हैं।
टोली-टोली घूमत हैं होरी के हुरियारे,
प्रेम-रस गागर सी भरे रहें बातन में।
पायल के राग-रंग करते विभोर मन,
भाभी की हँसी मन खींचती है डोर बन।
आते जाते राह में लुगाई जो नजर आये,
ताकत है मन बस चाँद सा चकोर बन।
रंग औ गुलाल अब उड़त है गली-गली,
बूढ़े भी जबान लगें आते ही फागन में।।

होली

डॉ. जगदीश चन्द्र वर्मा 'अनंत'

सबके मन में प्यार की फुहार आई है।
जन-जन में जीवन का नया रंग लाई है।
बसंत ऋतु आज अपने यौवन पर छाई हैं।
रंगों का त्यौहार लेकर होली आई है।।
ईर्ष्या-द्वेष को कर दो इस बार, तुम होली में दहन।
अबीर-गुलाल प्रेम से लगाओ, सद्‌भावना भरा हो जहन।
सत्य-अंहिसा का जश्न मनाओ, कोई कुछ न पाये कहन।
तभी वास्तव में कहलायेगा, यह यादगार होली का दहन।।
इस बार ऐसा रंग जमाओ, घर-घर फैले उमंग।
मन के मैल धो ले तुम, ना करो किसी से जंग।
एकता-अखण्डता की पिचकारी चलाओ, खेलो सभी के संग।
उत्सव को ऐसे उत्साह से मनाओ, सब रह जायें दंग।।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, सबको गले लगाओ।
हर वर्ग-धर्म के लोगों को, खुशी-खुशी अपनाओ।
सहिष्णुता- समानता का, तुम घर-घर दीप जलाओ।
देश के हर आँगन में तुम, समरसता का रस बरसाओ।।

(राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कृत शिक्षक)
सैनिक स्कूल घोड़ाखाल
जिला -नैनीताल (उ.ख.)
मो. ०९७६१७०९३६१

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वसन्ती चलवै मन्द्र वयार

●

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

वसंती चलवै मन्द्र वयार, सुहावन सोभन सब संसार।
कोकिल कौकल सबको भावै, धरती सरस धान्य उपजावै।
आम्र बौर परिमल वरसावै, गदगद हो गोरइया गावै।
जल थल क्षितिज स्वच्छ सरवर कौ जलज करै शृंगार।
सर्व दिशि सौन्दर्य साकार, वसंती चलवै मन्द्र वयार।।

निम्ब आम्र की सुरभि सुहाई, फूलत फलत सकल अमराई।
महुअन ने सुगंध मैहकाई, कलिकायें सबके मन भाई।
मान गुमान छोड़ सब प्राणिन कौ मधुरिम व्यवहार।
सरस सौहर्द बनौ आचार, वसंती चलवै मन्द्र वयार।।

कान्त कुमुदिनी शशि को भावै, रवि को लख जलजा खिल जावै।
प्रिय सँग हिरणी मोद मनावै, सबके हिये हुलास जगावै।
कर कलिका-कपोल आलिङ्गन भ्रमर करै गुञ्जार।
योगिजन छिपकें रहे निहार, वसंती चलवै मन्द्र वयार।।

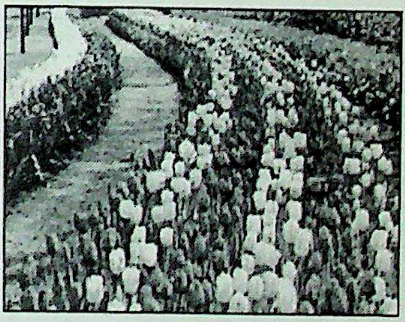

पंच वाण कंदर्प सँभारे, सावधान हो धनु संधारे।
तक तक तीर सबन्ह को मारे, संयम के खुल गये सब द्वारे।
तेल तूल ताम्बूल, तरणि तरुणी मन-भावन हार,
भरे यौवन-हित यह उपहार, वसंती चलवै मन्द्र वयार।।

फगुआरे फगुआ खों गारये, काम्य कुसुम चारउ दिशि छारये,
यौवन अँखियन सौ बतयारये, नई नवेलिन के मन भार ये।
बड़े जतन सौ कछुक सँभारें, निज छाती कौ भार।
करैयां का है अब जौ मार, बसंती चलवै मन्द्र वयार।।

जौ वसंत है बड़ौ सुहावन, सबको प्रिय सबको मन-भावन।
प्रिय यह पुण्य प्रकृति कौ पावन, सुखद शस्य सुषमा कौ नर्तन।
पीत वसन पहनें सरसों गावै सुमंगलाचार।
सजे हैं घर-घर बंदनवार बसंती चलवै मंद्र वयार।।

सेवानिवृत्त प्राध्यापक (संस्कृत)
सिविल लाइन्स, दतिया (म.प्र.)
संपर्क : ९८२६२४९४४८

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लघुकथाएँ

जन्मदिन

* दादा जी, यहां आकर बैठो।

मैं भौंचक 18 वर्षीय नातिन रानू को देखता ही रहा। अन्दर के कमरे में तेज कदमों से जाकर उसने एक प्लेट में सजा हुआ केक लाकर मेरे सामने टेबल पर रख दिया।

* अरे, यह क्या?

* आज आपका जन्मदिन है न?

* ओह, मैं तो भूल ही गया था।

* पर मुझे तो याद था, इसलिए आपको यहाँ बुलाया।

उसके अधरों पर मधुर मुस्कान की स्नेहिल किरणें बिखर गई। एक थाल में आरती सजाई। मेरे माथे पर अक्षत और सिन्दूर का तिलक लगाया और आरती उतारी।

मुझे लगा आज मैं 75 वर्ष के स्थान पर एक नन्हा सा बालक बन गया हूँ। मेरे अग्रज मेरा जन्म दिन बड़े उत्साह और उल्लास से मना रहे हैं।

उसने केक काटने का चाकू मुझे थमाया। मेरे केक काटते ही उसने बड़े उल्लास से उछल कर हैप्पी बर्थ डे टू यू! हैपी बर्थ डे टू दादाजी! बोलते-बोलते खूब तालियां बजाई। साथ ही पांच वर्षीय आंचल और 16 वर्षीय भाई अक्षत ने मुझे घेर कर बधाइयों का ताता लगा दिया। अतिशय आनन्द से मेरी आँखे में बरबस आंसू छलछला गये।

रोम-रोम रोमांचित ही उठा और हृदय की कली-कली खिल उठी।

कैसे-कैसे लोग?

टिकिट चैकर के कम्पार्टमेंट में आते ही लोगों ने टिकिट खोजना शुरू किये। मुरारी ने पाकेट में हाथ डाला तो, आर पार चला गया। चेहरा फक, माथे पर अनगिन सलवटों का घिराव आया।

रायपुर स्टेशन पर बच्चों के लिये नाश्ता लाने उतरा था। गेट पर सैलाबी भीड़ की रेल-पेल में किसी ने करिश्मा दिखा दिया।

सामने वर्थ पर बैठे ढीला कुर्ता पजामा वाले सज्जन ने मुरारी की थरथराहट पहचान ली।

* क्यों क्या बात है?

* किसी ने मेरा पाकेट काट लिया।

* और टिकिट?

* टिकिट पर्स में था वह भी चला गया।

* ऊपर कुछ है?

* नहीं, एक पैसा भी नहीं?

* ओह, बहुत बुरा हुआ? और ये देखो चैकर भी इधर चला आ रहा है। उसने सौ रूपये निकाल मुरारी को थमाए।

* अभी इससे काम चलाओ?

वह क्षण भर भौंचक्क, अपलक देखता ही रहा। जैसा उसे सहसा विश्वास ही नहीं हुआ? न कोई पूर्व परिचय? और ये रूपये थमा दिये?

टिकिट चैकर ने उससे टिकिट मांगा। उसने सच्चाई उगल दी। कम्पार्टमेंट के सभी लोगों ने उसकी बात का समर्थन किया। चैकर ने क्षण भर उसे, उसकी पत्नी और नन्हें बच्चों को देखा और आश्वस्त हो गया।

सहानुभूति भींगे स्वर में बोला- कहां जाना है?

''चांपा''

बिलासपुर तक ही मेरी ड्यूटी है। तुम्हें बिलासपुर से चांपा तक का पेनाल्टी सहित टिकिट बना देता हूँ। बस इतनी ही मदद कर सकूंगा।

वह गद्‌गद हो उठा। ''ठीक है साहब। बड़ी मेहरबानी'' कहते हुये सौ का पत्ता बढ़ा दिया। वह सोचने लगा अभी मानवता शेष है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि सामने वर्थ वाला मुसलमान परिवार का बिलासपुर निवासी लोहा व्यापारी है। उसका पता नोट कर लिया।

* मैं घर पहुंचते ही मनीआर्डर कर दूंगा।

* कोई बात नहीं। अधरों पर मुस्कान खिल गई।

वह महाशय और मुरारी, दोनों ने साथ-साथ हाथ जोड़ विदा ली। मुरारी सोचता रहा। एक यह व्यक्ति है, जिसने अनजाने ही मदद का हाथ बढ़ाया और दूसरा वह भी था जिसने मेरा पर्स ही उड़ा दिया। कैसे-कैसे लोग हैं यहां?

लेखराम मृदुल साहित्यकार ट्रस्ट
साहित्य धाम- बरघाट
जिला-सिवनी (म.प्र.) ४८०६६७

रिटायरमेंट

सीमा के पति को रिटायर हुए पांच वर्ष हो गये। अब वे पैंसठ के हो गये हैं। सीमा भी साठ की हो गई। उन दोनों की बेटी अपने पति के साथ नौकरी वाले शहर में सुखी जीवन व्यतीत कर रही है। उनके दोनों बेटे अपनी-अपनी पत्नी के साथ नौकरी वाले स्थान पर मौज मस्ती से जीवन निर्वहन कर रहे हैं। पति के रिटायरमेन्ट के बाद सीमा का काम और बढ़ गया है। पतिदेव अब प्रातः टहलने जाते हैं। टहलकर आते ही उन्हें चाय चाहिए। चाय की चुस्कियों के साथ अखबार का आनंद टेलीविजन के साथ लेते हैं। इत्मीनान से स्नान एवं उसके बाद नाश्ता। घर में रहने के कारण दिनभर किसी ना किसी का आना-जाना जिसके चलते आमजनों का चाय बिस्कुट के साथ आवभगत करना।

कई दिनों से सीमा सोच रही है पतिदेव तो अपने काम से निवृत्ति पा गये और स्वतंत्र जीवन बिना किसी जिम्मेवारी के पांच साल से व्यतीत कर रहे हैं। उसे भी इस घर में आये हुए पैंतीस साल हो गये उसे अपने काम से कब रिटायरमेंट मिलेगा? आज टहलकर आते हैं तब मैं अपनी समस्या उनके सामने रखूंगी।

आज पतिदेव के टहलकर आते ही टेबल पर चाय रखते सीमा ने कहा-

''एक बात पूछूं?''

''हाँ पूछो।''- चाय और अखबार दोनों को अपने निकट लाते पतिदेव ने कहा।

''मैं अब साठ की हो गई। आप साठ के हुए थे तो आपको अपने काम से मुक्ति मिल गई थी। मुझे अपने काम से कब मुक्ति मिलेगी?''

''कौन सा काम?''- पतिदेव अप्रत्याशित सवाल पर चौंक गये।

''यही घरेलू काम भोजन बनाना आदि।''

''ओह! मैंने तो सोचा ही नहीं था। ऐसा करते हैं, आया से बात करते हैं यदि वह भोजन वगैरह बना दें तो उसका वेतन बढ़ाकर उसे यह काम दिया जा सकता है। नहीं तो भोजन के लिए एक दूसरी आया रख लिया जाय। लेकिन, इसके बाद पेंशन की मांग नहीं रखियेगा।''- पतिदेव ने समस्या का समाधान निकालते हुए कहा।

''किन्तु, इस उम्र में आया का बनाया हुआ भोजन? कैसा लगेगा? मुझे नहीं चाहिए रिटायरमेन्ट!''- सीमा पुनः अपना काम आरंभ करते बोली।

अतुल मोहन प्रसाद
डी.के. धर्मशाला मार्ग,
बंगाली टोला, बक्सर (बिहार) ८०२१०१
मो. ०८२३५०५९३५७

बैक डोर

घंटी की आवाज पर दरवाजा खोलते ही मुझे श्रीमती शर्मा एवं श्रीमती सक्सेना से दो-चार होना पड़ा, उनका आना मेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, शाम के समय तो नित्य चार से पाँच बजे तो मिसेज शर्मा को आना ही आना होता था, किसी ऑफिस में हाजिरी देने की मानिन्द। कारण, तीन बजे सायं उनकी बाई काम करके चली जाती, बच्चे पढ़ने बैठ जाते और शर्मा जी साढ़े पाँच बजे से छः के बीच आते। इस बीच वे क्या करें? कैसे टाइम पास करें? और उनके ऐसे अवसर के लिए मुझ जैसा बेवकूफ है कौन?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे आ गई। मैंने अपने अन्दर उठते ज्वार-भाटा सदृश्य झुंझलाहट को संयत किया। उनसे रूबरू होते ही मेरा मन काँप गया। कारण यह कोई सहज स्नेह मिलन तो था नहीं। यह तो चाटुकारिता होड़, स्पर्धात्मक 'अप-डाउन' के संग-संग अमुक-अमुक के घर का 'आज तक' की खबरों का जीता-जागता विवरण पेश करने वाली थी, और मुझे उसी धीरज और तनम्यता से यह सब सुनना था।

मेरी आशा के विपरीत आज उनका चेहरा अत्यधिक मेकअप के बाद भी उदास और मुरझाया हुआ सा था। मैं कारण जानने एवं वातावरण को हल्का फुल्का बनाने के लिहाज से तनिक विनोदी लहजे में पूछ बैठी:- ''कहिये मिसेज शर्मा। आज आपका यह कमल मुख मुरझाया हुआ क्यों है? कुछ नहीं बहन जी! बस ऐसे ही, और वे चुप हो गयीं। मेरे बार-बार आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि आजकल में पी.ई.टी. का रिजल्ट निकलने वाला है। यदि इस बार भी नितिन का सिलेक्शन न हुआ तो-'वे गहरी साँस ले शून्य में, ताकने लगी पुनः बुदबुदा कर कुछ अस्फुट शब्द होंठों से निकले ''इतना पैसा कोचिंग में, ट्यूशन में किताबों में खर्च कर दिया, दो साल से ढंग की एक साड़ी भी न खरीद सकी। इस बार भी अगर वह...... और वे चुपचाप सामने दीवार को ताकने लगी। इस बीच नीतू क्रमशः पानी फिर चाय नाश्ता रख गयी।''

श्रीमती सक्सेना जले पर नमक छिड़कने का ऐसा सुअवसर कैसे गँवा देती, ''बहन जी! एक बार इंसान डॉक्टर या इंजीनियर बन जाये तो फिर उसके पौ बारह? दिन सुनहरे और रातें रूपहली। मेरा छोटा भाई अविनाश जैसे-तैसे सिविल इंजीनियर बन गया, सोना चाँदी तो क्या अब तो हीरे जवाहरात से खेल रहा है। मकान क्या है मानो मिनी पैलेस- या फाइव स्टार होटल का कोई संक्षिप्तिकरण। एक तरफ स्वीमिंग पूल तो दूसरी तरफ लम्बा चौड़ा उद्यान। वाल टू वाल कारपेट, बेशकीमती सामान और वे अपने एक मात्र भाई के वैभव संपन्नता के न जाने कितनी देर तक गुणगान करती रही। 'आये दिन पार्टियाँ- कभी किस ऑफिसर का डिनर कभी किस मिनिस्टर का लंच,' ऊपर से नीचे तक सभी को खुश करना होता है कहीं कोई अवरोध नहीं, हाँ! अगर किसी ने अवरोध उत्पन्न करने का दुस्साहस किया तो बस या तो उसका ट्रांसफर अथवा सस्पेंड, उसकी जब शादी का रिश्ता तय करने गये थे उसके होने वाले श्वसुर ने उसकी तनख्वाह पूछी। बड़े भैया तनिक सकुचाए इतनी बड़ी करोड़पति पार्टी को कैसे दस हजार बता दें। उनको असमंजस में देख कर उन्होंने दुबारा आँख दबा तनिक दबी जुबान में पूछा 'अरे! मैं तो असली तनख्वाह यानि की ऊपर की आमदनी के विषय में पूछ रहा हूँ। इस पर तो भैया के अन्दर शत-शत हनुमान जी जितना बल और आत्मविश्वास जाग उठा। वे उसकी ऊपरी आमदनी का वर्णन करते, उसके पहले उसके श्वसुर जी ने खो-खो हंसते हुये, अपनी थुल-थुल काया को पूरी तरह झकझोरते हुये अति आनन्द से भर, भैया से हाथ मिलाते हुये कहा 'अजी साहब' हम तो पहली तारीख को मिलने वाली तनख्वाह को तनख्वाह कहते नहीं उसे तो पॉकेट खर्च कहते हैं अभी आप हमारी शब्दावली से परिचित नहीं हैं इसलिए भ्रम में पड़ गये, अब आपसे रिश्ता पक्का समझो, हम दोनों तो एक ही थाली के चट्टे बट्टे निकले और बहन जी रिश्ता पक्का हुआ सो हुआ 'बैक डोर' से कितना लेन-देन हुआ उसका सही आंकड़ा तो आज तक ईश्वर के फरिश्ते भी न लगा सके।

श्रीमती शर्मा ने घड़ी देखी बातों ही बातों में टाइम कब ओवर हो गया पता ही न चला।

इतनी देर के बहस मुबाहसे से मेरा सिर भन्नाने लगा था, टी.वी. खोल कर बैठ गयी।

मंजुला गुप्ता
९ बी.एस. रोड
बाईस गोदाम सर्किल
जयपुर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी

बुआ

बलविन्दर 'बालम'

महकमे के किसी अनिवार्य काम के लिए मुझे सीमावर्ती एक गाँव में जाना था। यह गाँव मेरे शहर से लगभग पचास किलोमीटर दूर था। मैंने स्कूटर स्टार्ट किया और अपनी मंजिल की ओर चल दिया। लगभग एक घंटे के बाद मैं उस गाँव से कोई पांच कि.मी. इधर ही था कि सामने बुआ का गाँव नजर में आया। स्कूटर जैसे स्वयं ही रूक गया हो मेरी आत्मा की स्वीकृति के लिए। मैंने स्कूटर खड़ा कर दिया तथा मेरे बचपन के वे दिन चींटियों की यात्रा की भांति मस्तिष्क में दौड़ने लगे। आज 30 वर्ष के बाद बुआ के गाँव से एक किलोमीटर दूर खड़ा था। जैसे मैं मन ही मन कहने जा रहा हूँ...... बुआ मैं आ गया हूँ तुझे मिलने। बुआ, देख, तेरा बिंद वीर आया है। तुझे कोई नहीं मिलता, मैं मिलूंगा तेरा वीर बिंद। जिसको तूने बचपन में लोरियां देकर पाला तथा लाड-प्यार किया। याद हैं न वे दिन बुआ। मेरे मस्तिष्क में महफूज हैं पवित्र प्यार की तरह वे दिन। क्या कुछ स्वयं ही बोलता चला गया तथा फिर चुप हो गया। चारों ओर नजर दौड़ा कर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा......। क्यों टूटते हैं रिश्ते... नहीं..... रिश्ते नहीं टूटते.. दूरियाँ पड़ जाती हैं.. परन्तु दूरियां भी क्यों पड़ जाती हैं.... रिश्ते न टूटते हैं और न ही दूरियां पड़ती हैं...... मजबूरियां... स्वार्थ तथा नफरत से यह रिश्ते खोखले हो जाते हैं, परन्तु इन की बुनियाद नहीं मरती। बुआ का रिश्ता तो भगवान से भी महान होता है शायद। मैं तो बुआ के पवित्र रिश्ते को भगवान की तरह ही मानता हूं। मनुष्य अपने स्वार्थों के लिए रिश्तों को क्यों तिलांजलि दे देता है? स्वार्थ की कोई बुनियाद नहीं होती। रिश्तों की बुनियाद पक्की तथा पवित्र होती है। एक रिश्ता जब बनता है तो उस के ऊपर मोह के सूर्य की लकीर (रेखा) फूट पड़ती है, जिस की रोशनी फिर कभी नहीं मरती। स्वार्थ, नफरत, मजबूरी तो मौके पर फूटी मौसमी घास की तरह होता है जो समय के साथ स्वयं ही बर्बाद हो जाती है। परन्तु रिश्ते नहीं मरते। जिस्मों की जड़ों से, मोह की नाजुक शाखाओं पर रिश्तों के जो भव्य सुमन खिलते हैं उन की सुरभि कभी नहीं मिटती।

बस दूर से ही बुआ के गाँव को देख रहा था और स्कूटर पर बैठा सोच रहा था। मुझे याद आ गए वे दिन..... मनुष्य की जिन्दगी से बचपन कभी मनफी नहीं होता। आदमी सब कुछ भूल सकता है, परन्तु बचपन की यादें कभी नहीं भूलता। मृत्यु के समय भी इन्सान को सबसे पहले अपने बचपन एवं जवानी की यादें ही आती हैं। मुझे.... याद है आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व जब बुआ का विवाह हुआ था। मैं बहुत छोटा था, परन्तु मुझे होश जरूर थी। बुआ मुझे साथ लेकर आया करती थी अपने ससुर गाँव। बुआ मुझे लाड़-प्यार करती, सारा-सारा दिन मेरे साथ खेलती रहती और घर का काम भी साथ-साथ करती रहती। बुआ एक विशाल संयुक्त परिवार में ब्याही गई थी। फूफा स्वास्थ्य विभाग में मुलाजिम थे तथा उनके शेष भाई व्यापार करते थे। खाता-पीता अच्छा घर था। खुला आंगन, कई कमरे। भैंसें, गाएं रखी हुई थीं। बुआ मुझे चोरी-चोरी काढ़नी (मिट्टी का बर्तन) का गर्म-गर्म बादामी रंग का दूध मलाई डालकर, कड़े के ग्लास में भरकर देती तथा कहती, 'पी ले, मेरे वीर जल्दी-जल्दी।' तो मैं डीक लगाकर पी लेता। बुआ खुश हो जाती। मेरा माथा चूमती और कहती, 'मेरा प्यारा वीर बिंद।' मुझे उसका ऐसा कहना बहुत अच्छा लगता। मोह का संपूर्ण अहसास।

30 वर्ष पहले का गाँव अब बदला-बदला सा नजर आता था। पक्की सड़कें, नहर जो बुआ के गाँव के समीप से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजरती थी, अब पक्की कर दी गई थी। इस नहर पर अब छोटा-सा पुल भी बन चुका था। सारे घर पक्के नजर आ रहे थे, परन्तु दूर से बुआ के घर के सामने वाला बरगद वैसे का वैसा ही नजर आ रहा था। मुझे याद है..... फूफा शहर से ड्यूटी देकर लगभग रात देर से ही आते थे, परन्तु वह जब भी आते मेरे लिए कोई न कोई चीज खाने के लिए जरूर लाते थे। इसी के लालच में मैं बुआ के साथ देर रात तक फूफा का रास्ता देखता रहता। गाँव में बिजली नहीं थी। लैम्पें होती थी। कच्ची नहर थी। पानी कम होता तो लोग नहर पार करके आ जाते। जब फूफा को रात को नहर पार करके आना होता तो वह दूर से ही आवाज दे देते। नहर गाँव के बिल्कुल नजदीक थी। बुआ और मैं लैम्प लेकर नहर से फूफा को साथ लेकर आते। वह मुझे उठा लेते, प्यार करते और मेरी चीज मुझे दे देते। मैं खुशी में वहां ही उस चीज को देखने की कोशिश करता। घर आकर मैं वह चीज पाकर प्रसन्न होता और स्वाद लगाकर खाता। रात को सोने के समय बुआ सिर पलोसती तथा लोरियों से मुझे सुला देती। इस तरह मैं कई-कई दिन बुआ के पास रहता। जब मुझे कोई घर से लेने आता तो मैं रोता हुआ बुआ से चिपक जाता। बस रो-रो कर बेहाल हो जाता तथा बुआ की आंखों में भी आंसू आ जाते और वह कहती, अच्छा बिंद, अब तू चल मैं जल्दी-जल्दी फिर तुझे लेने आऊंगी।' और ऐसे कहती हुई वह मुझे बार-बार लाड़-प्यार करती।

मैं सोच रहा था कि रिश्तों में स्वार्थ, मजबूरियों की दीवार खड़ी हो जाती है, परन्तु मनुष्य को छोटी-छोटी बातों के पीछे रिश्तों को तिलांजलि नहीं देनी चाहिए। समाज में रहते हुए उन्नीस-इक्कीस होती रहती है। दुःख-मुसीबतें आती रहती हैं, परन्तु रिश्तों को, मोह को बिल्कुल ही त्यागना नहीं चाहिए। मानवता स्वार्थ से भी परे है। स्वार्थ समय के साथ फूटता है, और समय के साथ ही झड़ जाता है, अगर स्वार्थ तथा आवश्यकताओं को रिश्तों के साथ सुचारू ढंग से निभाते जाएं, जिससे रिश्तों के माधुर्य में खटास न पड़े तो जिन्दगी में मोह-प्यार के सुगंधित फूल खिले रहते हैं, जिनकी सुगंध केवल अपने मन को ही नहीं, गैरों को भी सुरभित करके जीने का एक संदेश देती है।

बुआ को मेरे पिता जी मिलते नहीं थे। जिस बहन को चाव भरी उमंगों से ब्याहा हो उसे बिल्कुल छोड़ ही दिया जाए यह कैसी विडम्बना है? घर में बातों से पता चलता रहता था। पिता जी तथा चाचा जी में कुछ वैमनस्य पैदा हो गया था। उच्च न्यायालय तक केस लड़ते रहे। ये दोनों भाई अच्छी खासी सरकारी नौकरियों पर थे। परन्तु कुछ स्वार्थी लोगों एवं ईर्ष्यालु रिश्तेदारों ने दोनों भाइयों में जमीन जायदाद तथा घरेलू बातों की लड़ाई लगवा दी जो बढ़कर बहुत दूर तक गई। इसी दरम्यान बुआ दोनों भाइयों की मदद भी करती रहती। परन्तु पिता जी ने बुआ को कह दिया था, कुड़िए या तो छोटे को मिलाकर या मुझे।'' बुआ अब द्वंद्व में फंस गई थी और आखिर उसको अपने पति की माननी पड़ी और बेचारी क्या कर सकती थी? वैसे भी चाचा का अपनी बहनों पर दब-दबा और पूरा प्रभाव था। बुआ मजबूर हो गई और वह दिन-त्यौहार एवं दुःख-सुख में चाचा के साथ ही मेल-मिलाप रखती। पिता जी ने बुआ को बिल्कुल ही मिलना छोड़ दिया था। हम छोटे थे। हमारा भी आना-जाना बंद हो गया। दूसरे पढ़ाई में तल्लीन हो गए। नौकरी लग गई, विवाह हो गये। बच्चे हो गए, आज बुआ को देखे 30 वर्ष हो गए थे। मैंने आज मन बना लिया था कि बुआ को मिल के ही आना है। बुआ कैसी होगी? वह मुझे पहचानेगी या नहीं? उनके बच्चे क्या करते हैं इत्यादि कई प्रश्न मस्तिष्क में कौंध रहे थे।

आखिर मैंने स्कूटर स्टार्ट किया तथा सामने नजर आ रहे बुआ के गाँव की ओर मोड़ लिया। नहर का पुल पार करके मैंने उसी पुराने बरगद के नीचे कुएं के पास स्कूटर खड़ा कर दिया। इसके सामने ही बुआ का घर था जो अब पक्का और बढिया नजर आ रहा था। मैंने अंदाजा लगा लिया कि अब वह ससुराल वालों से अलग रहती है। अंदाजे से आगे बढ़ा तो देखा कि एक प्रौढ़ आयु की महिला आंगन में चावल छांट रही है। मैं पहचान गया कि बुआ ही है क्योंकि उसके चेहरे का काला तिल वैसे का वैसा नजर आ रहा था। बेशक अब बुआ का शरीर थुलथुल-सा हो गया था। चेहरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर झुर्रियों ने रेखाएं खींच ली थी। समय ने करवट लेकर आयु को हालात से जर्बे-तकसीमें दे दी थीं।

मैं बुआ के बिल्कुल समीप जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। वह देखकर हैरान-सी हो गई तथा कहने लगी, ''देखता क्या है? वह है दरवाजे के पीछे मीटर, मुंह में चने डाल रखे हैं क्या? कैसे सीधा भागता आ रहा है, दरवाजा नहीं खटखटाया जाता। वह है मीटर देख ले जा कर.... जाह-जाह मेरे मुंह की तरफ क्या ताक रहा है बिटर-बिटर।'' ....मेरी आंखों में आंसू आ गए, परन्तु मैंने आंखों से टपकने नहीं दिए। बहुत मुश्किल से आँसू रोके बुआ को समीप से देखकर। उसने फिर कहा, पागल है क्या? सुनता नहीं? वह है मीटर।'' बुआ ने मुझे मीटर रीडर समझा था।

मैंने बुआ को नजरें टिकाकर देखा और उसका कंधा पकड़ते हुए कहा, मैं बिंद हूं।' मेरा नाम सुनते ही बुआ की चीख निकल गई। उसने स्नेह के साथ मुझे गले लगा लिया। उसका छाज कहीं, चावल कहीं तथा चुन्नी (आंचल) कहीं जा पड़ी। रमली-कमली.. बुआ ने सारे गाँव में शोर मचा दिया, ...लोको मेरे मायके आए जे...... लोको मेरे मायके आए जे..... मेरा वीर बिंद आया लोको मेरे मायके आए।' बुआ की ऊँची आवाज सुन कर उसकी देवरानियाँ-जेठानियाँ, जिस हाल, में भी थीं दौड़ी आईं। ....मेरे मायके आए लोको।'' बुआ खुशी में जैसे पागल हो गई हो। मेरी आँखों से आंसुओं की झड़ी लग गई और बुआ के आँसू भी बह गए। मुझे बुआ ने बैठक (कमरे) में बिठा दिया। उसके घर के सब लोग इकट्ठे हो गए। गाँव की अन्य महिलाएं भी आ गईं। बुआ सबको कह रही थी कि मेरा वीर बिंद आया ए.... लोको मेरे मायके आए। बुआ ने तेल की कड़ाही रख दी, पकौड़ों के लिए। एक औरत को बाजार भेज दिया। बुआ का चाव जैसे सात आसमानों को चीर गया हो तथा उसने प्रमाणित कर दिया कि रिश्तों की महक कभी नहीं मरती।

खाने के अनेक पदार्थ बुआ ने मेरे आगे रख दिए। वह मेरे पास बैठ गई। सब का हाल-चाल पूछा। मेरे बारे में पूछा, तू क्या करता है? बच्चे कितने हैं? क्या करते हैं? भाभी जी का क्या हाल है? कई सवाल दाग दिए उसने। आखिर उसने अपनी जिज्ञासा शांत करके ही साँस ली। मैंने भी बुआ से कई सवाल पूछे। बच्चों के प्रति, परिवार के प्रति, दुःख-सुख संबंधी। बुआ घर में अकेली थी। उसके दोनों लड़के पढ़-लिख कर नौकरी करते थे। दोनों लड़कियाँ विवाहित थीं। फूफा नौकरी पर गए हुए थे।

मैंने बुआ को कहा, ''बुआ, हमारी कभी याद नहीं आई।'' वह डुस्क-डुस्क कर रोने लगी। डुस्कती हुई, आंचल से आंसू पोंछती हुई बुआ ने कहा, ''बिंद, मायके की किस बेटी को याद नहीं आती। याद कर करके रो लेती थी। रिश्तेदारों से कुशल-क्षेम पूछ लेती थी। बेटियाँ जब बेगाने घर चली जाती हैं न, बिंद तो वहाँ फिर उनकी मर्जी नहीं चलती। मैं मजबूर थी, क्या कर सकती थी? याद तो सब की बहुत आती थी। भाभी ने तो माँ से ज्यादा प्यार दिया है, कैसे भूल सकती है कोई बेटी अपने मायके को बिंद।''

मुझे जल्दी भी थी। मैंने बुआ को कहा कि मैं अब फिर आऊंगा। लेट हो रहा हूं। सीमावर्ती एक गाँव में जरूरी काम से महकमे की ओर से आया हूँ। उसने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'बिंद, तू तो अब मिलाकर। पत्नी को लेकर आना, बच्चों को लाना। भरजाई (भाभी) जी तथा भाई साहिब को मेरी सत् श्री अकाल कहना और वह फूट-फूट कर रोने लगी और मेरे भी आंसू निकल आए। मैंने बुआ के पांव छुए। उसको मोह भरी गलवकड़ी में लिया। उसने मेरा माथा चूमकर कई आशीशें दीं।

मैंने स्कूटर स्टार्ट कर नहर पार करके जब मुड़कर पीछे देखा तो बुआ दरवाजे में, मेरी ओर नजरें गाड़े खड़ी थी। वह अभी भी दरवाजे में खड़ी थी। रिश्तों की मजबूत दहलीज पर, जिनकी सुरभि कभी नहीं मरती..... कभी नहीं मरती।

ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)
मो. ९८१५६-२५४०९

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतिम संस्कार

●

लोकेन्द्र सिंह

'यार अखिल तेरे पास मैसेज आया क्या? समाजसेवी रूपेन्द्र गुप्ता की माँ का निधन हो गया है। कल सुबह १० बजे शवयात्रा है।' सुनील शर्मा ने अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन के भीतर झांकते हुए कहा।

सब स्तब्ध रह गए। टीवी सेट के सीमित वोल्यूम के बावजूद न्यूज चैनल का वो दाढ़ी और चोटी वाला एंकर जरूर चीख-चीखकर लोगों को चड्डी-बनियान चोर गिरोह से सावधान कर रहा था। वरना तो दफ्तर के जिन कर्मचारियों के कानों तक सुनील की आवाज पहुंची, उनके सिर खामोशी से सुनील की ओर मुड़ गए। तमाम चेहरों ने प्रश्नवाचक चिह्न का आकार धारण कर लिया था। समाजसेवी रूपेन्द्र गुप्ता की माँ की मृत्यु के समाचार पर जो सन्नाटा खिंच गया था, अमूमन ऐसा न्यू मीडिया चैनल के दफ्तर में दिखता नहीं था। कई लोगों को कुछ सूझ नहीं रहा था तो कई लोग कब, कैसे और कहां हुई रूपेन्द्र गुप्ता की माँ की मौत, यह जानने के लिए सवाल उछालने ही वाले थे कि चार और साथियों के मोबाइल फोन पर मैसेज ट्यून की आवाज सुनाई दी। फिर चार-पांच और लोगों के मोबाइल फोन पर भी एसएमएस आया। थोड़ी ही देर में सभी के मोबाइल फोन के मैसेज इनबॉक्स में यही पहला संदेश था- रूपेन्द्र गुप्ता की माँ की लंबी बीमारी की वजह से मृत्यु हो गई है। वे 70 वर्ष की थीं। कल सुबह 10 बजे गुप्ता सदन से गोराघाट स्थित मुक्तिधाम के लिए शवयात्रा जाएगी। अब पूछने के लिए किसी के पास कोई सवाल नहीं था। हां, सब रूपेन्द्र गुप्ता के संबंध में अपनी-अपनी जानकारी एक-दूसरे से साझा करने की प्रक्रिया में लग गए। रूपेन्द्र गुप्ता शहर के बड़े व्यवसायी हैं। शहर के लगभग सभी पत्रकारों के साथ उनका उठना-बैठना है। शहर में समाजसेवी के रूप में भी उनकी पहचान है। उनका एनजीओ वरिष्ठ लोगों के हित में अच्छा काम कर रहा है। घर में पुरानी चीजों की तरह उपेक्षा के शिकार बुजुर्गों के मनोरंजन तक की चिंता भी उनका एनजीओ करता है। बुजुर्गों के सम्मेलन, हारी-बीमारी में मदद-देखभाल, शहर के आस-पास धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व के स्थल के भ्रमण के लिए भी वरिष्ठ लोगों को ले जाने का उपक्रम उनका एनजीओ कर रहा है। अपनी बढ़ती लोकप्रियता के कारण वे पिछले काफी दिनों से राजनीति में भी खूब रुचि दिखा रहे हैं। कई लोग कहते हैं कि उपेन्द्र गुप्ता पंजा पार्टी से विधायक का चुनाव लड़ने की जुगाड़ लगा रहे हैं।

सीनियर कॉपी एडिटर अजय सिन्हा ने कहा - 'एक बार रूपेन्द्र गुप्ताजी से उनकी काफी लंबी बातचीत हुई थी। वे बेहद सुलझे हुए आदमी लगे। उन्हें बुजुर्गों की बेहद चिंता रहती है। वे कहते हैं, भौतिक जीवन का लुत्फ लेने के फेर में आजकल के बच्चे बुजुर्गों को बेसहारा छोड़कर अपनी अलग दुनिया बसा लेते हैं। नालायकों को इतना भी समझ नहीं आता कि बुजुर्गों का आश्रय कितना जरूरी है। अगर माता-पिता भी स्वकेंद्रित हो जाते तो क्या बच्चे आज जिस मुकाम पर हैं, वहां पहुंच सकते थे। अब मुझे ही लो। हम चार भाई हैं। चारों वेलसेटल्ड हैं। सबसे बड़ा यानी मैं, अच्छा खासा व्यापार है। मुझसे छोटे की प्रिंटिंग प्रेस बढ़िया चल रही है। तीसरे नंबर का भाई सरकारी इंजीनियर हो गया है और सबसे छोटा भाई का तो प्राइवेट हॉस्पिटल है। उसकी पत्नी भी शहर की नामी डॉक्टर है। हमारे इस मुकाम के पीछे माता-पिता की मेहनत और त्याग है। तुमने देखा होगा, नए-नए माता-पिता बने महिला-पुरुष यह कहते हुए अक्सर पाए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाते हैं कि देखो, अपने बच्चे के लिए अभी कितना कुछ करना पड़ रहा है हमें। अपने नन्हें के चक्कर में रातभर जागना पड़ता है। वह दिन में सो लेता है और रात को कई बार जागता है। इतना ही नहीं अभी तो सू-सू भी बिस्तर पर ही करता है। कितना ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं नन्हा गीले में न सो रहा हो। लेकिन, बड़ा होकर सब भूल जाएगा। अब अजय तुम ही बताओ, वो भला क्यों नहीं भूलेगा इन निपट गंवार लोगों को। इन्होंने कौन-से अपने माता-पिता को याद रखा है। आजकल के ज्यादातर युवा शादी के तत्काल बाद ही माता-पिता से अलग रहने लगते हैं। क्या है कि बेपरवाह सेक्स लाइफ में खलल पड़ता है, यदि घर में बुजुर्ग हों तो। फिजूलखर्जी और अनियमित दिनचर्या पर भी बुजुर्ग सलाह देते हैं, जो इन्हें महज टोका-टाकी लगता है। बुजुर्ग तो संयमित जीवन जीते हैं। सुबह पांच बजे ब्रह्म मुहूर्त में जाग जाते हैं। टहल भी आते हैं लेकिन तब तक भी हाईलाइफ की एडिक्ट हमारी युवा पीढ़ी बिस्तर में ही घुसी रहती है। बुजुर्गों का जल्दी जागना भी इन्हें रास नहीं आता।

'अब तो राजनीति में जाने का मन बना रहे हैं। उनके साथ लोग भी काफी आ गए हैं। चलो, अच्छा है कोई तो भला आदमी राजनीति में पहुंचे। वरना तो संसद और तमाम विधानसभाएं दुष्ट और बदमाश नेताओं से भरी पड़ी हैं।' अजय गुप्ता के संस्मरण पर कोई टिप्पणी आती इससे पहले ही क्राइम रिपोर्टर सुरेन्द्र ने सहज भाव में अपनी राय जाहिर की।

'पिछले दिनों एक बुजुर्ग दंपति को सारी रात घर के बाहर काटनी पड़ी। हुआ यूं था कि यहीं विवेक विहार में विनोद चोपड़ा रहते हैं। उनकी उम्र होगी, यही कोई 65 साल। स्टेट बैंक की नौकरी से रिटायर हैं। उनके पास बढ़िया बंगला है। उनके इकलौते लड़के राहुल की हाल ही में धूमधाम से शादी हुई। श्रीमान चोपड़ा की पत्नी मंगला चोपड़ा ने अपनी खूबसूरत बहू का बड़े दुलार से घर में स्वागत किया। मेरा उनके घर आना-जाना है। मैंने हकीकत देखी है। मंगला जी और चोपड़ा जी कितना ही प्यार करते हों अपने बच्चों को लेकिन बच्चे बहुत ही नालायक हैं दोस्तो। ठीक से बात तक नहीं करते। बहू बाहर से जितनी गोरी है भीतर से उतनी की कलूटी। लड़का भी लल्लू है। एक दिन बहू और सास में किसी बात पर विवाद हो गया। उस दिन बहू और बेटे ने विनोद चोपड़ा जी और उनकी पत्नी को घर से बाहर निकाल दिया। कहा- जाओ किसी वृद्धाश्रम में जाकर बस जाओ, ताकि हम चैन से जी सकें। ठण्ड में रातभर बेचारे बूढ़े माता-पिता इधर-उधर भटकते रहे। थक-हार कर वापस लौटे। दरवाजा खट-खटाया लेकिन बहू-बेटे ने अनसुनी कर दी। बेचारे चोपड़ा दंपति रातभर दरवाजे के बाहर बैठे रहे। एक-दूसरे से टिककर थोड़ी-बहुत देर के लिए पलकें झपका लीं। सुबह दरवाजा खुला तो बहुत-सी हिदायतें देते हुए बहू ने दोनों को घर में घुसने दिया।'

सुरेन्द्र ने मार्मिक घटना का वर्णन जारी रखने से पहले एक क्षण के लिए सभी साथियों के चेहरों पर सरसरी नजरें दौड़ाई और बोला- जैसे ही मुझे यह बात मालूम हुई, मैंने रूपेन्द्र गुप्ता जी को सब हाल सुना दिया। रूपेन्द्र जी काफी संवेदनशील हो गए थे। उन्होंने तत्काल अपने एनजीओ के एक युवा को निर्देश दिए कि मेरी टीम को फोन और मैसेज करो, बुलाओ सबको यहां। जरा देखे इस नालायक राहुल को। इसके बाद वे बीस-पच्चीस वरिष्ठ नागरिकों को लेकर विनोद चोपड़ा जी के घर पहुंच गए। रविवार था तो सब घर पर ही मिल गए। राहुल, उसकी खूबसूरत पत्नी भी। चोपड़ा जी ने वरिष्ठ नागरिक मंडली का स्वागत किया। स्वयं फ्रिज से पानी की दो बॉटल और कुछ गिलास लेकर आए। सबको पानी पिलाया और पूछा कैसे आना हुआ आज। कहीं चलने का कार्यक्रम है क्या? मंडली के एक सदस्य ने कहा नहीं ऐसा कुछ नहीं है, बस आपका हाल-चाल जानने के लिए चले आए। रूपेन्द्र गुप्ता जी ने राहुल की तरफ इशारा किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कड़क आवाज में उससे बोले- बच्चे घर से बाहर निकल लो। ये घर तुम्हारे बाप का है तुम्हारा नहीं। इसमें रहने का पहला हक विनोद चोपड़ा जी का है, तुम्हारा नहीं। शर्म नहीं आती तुम्हें अपने माँ-बाप को घर से बाहर निकालने में।

मेरे माता-पिता हैं। तुम क्यों आधी रोटी पर दाल लेने चले आए। हमारा परिवार कैसे भी रहे। रूपेन्द्र जी की बातों से राहुल तिलमिला गया था। उसके बात करने के तरीके से यह साफ झलक रहा था।

अदब से बात किया करो राहुल। घर में तो मेरी रोज बेइज्जती करते हो। कम से कम सबके सामने तो मुझे जलील न करो। चोपड़ा जी ने न जाने कितने दिन बाद राहुल को लताड़ लगाई होगी। रूपेन्द्र जी से राहुल का इस तरह बात करना चोपड़ा जी को रास नहीं आया।

इसके बाद सभी वरिष्ठ नागरिकों ने राहुल और उसकी पत्नी को समझाइश दी। समझाइश क्या चेतावनी दी कि आगे कभी अपने माता-पिता को परेशान किया तो हम सब कोर्ट जाएंगे और तुम लोग घर से बाहर तो जाओगे ही, जेल में भी जा सकते हो।

सभी पत्रकार साथी बातचीत कर ही रहे थे कि इतने में सुनील शर्मा ने अपने स्मार्टफोन पर अंगुलियां घुमाते हुए उन्हें बताया - 'भाई लोगो फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग और गूगल प्लस सहित और दूसरे सोशल नेटवर्किंग साइट पर रूपेन्द्र जी की माँ की मृत्यु का समाचार प्रसारित हो गया है। अभी पंचायत स्थगित कर सब अपने-अपने काम में जुट जाएं। सुबह 10 बजे चलेंगे मुक्तिधाम।'

सुबह 10:30 बजे। गुप्ता सदन। बेहद ज्यादा भीड़। सुनील शर्मा और अखिल सिंह दोनों को लगा था कि उन्हें पहुंचने में देर हो गई। लेकिन, यहां तो अभी ठठरी बांधी जा रही है। शवयात्रा शुरू होने में कुछ वक्त बाकी है। सुनील और अखिल पत्रकार साथियों की मंडली की ओर बढ़ रहे थे कि तभी सामने से रूपेन्द्र जी के बहनोई साहब संजय माहेश्वरी चले आए। संजय माहेश्वरी से दोनों की अच्छी जान-पहचान थी। माहेश्वरी शहर ही नहीं प्रदेश के बड़े साहित्यकारों में शुमार होते हैं। बड़े मुंह फट हैं। सच उनके दिमाग और पेट में टिकता ही नहीं। जब तक बाहर न आ जाए, खदबदाता रहता है। सुनील और अखिल ने नमस्कार किया और रूपेन्द्र गुप्ताजी की माँ के निधन पर संवेदना प्रकट की।

'बड़े दुःख की बात है, शहर के बुजुर्गों की चिंता करने वाले रूपेन्द्र जी के सिर से माँ का साया हट गया।'

'अरे, दुःख काहे का साहेब। यहां तो माँ की मौत का भी अपनी पॉपुलरिटी बढ़ाने में इस्तेमाल किया जा रहा है। और आप हैं कि शोक संवेदना प्रकट कर रहे हो।' संजय जी ने तुनकते हुए कहा।

'मतलब! क्या मतलब है आपका?' संजय जी के चेहरे के भाव और उनको इस तरह बात करते देख दोनों ने चौंककर एक साथ यह कहा।

'मेरा मतलब तो कुछ नहीं है। मतलबी तो दुनिया हो गई है। सच जानो दोस्तो आज रूपेन्द्र की माँ का अंतिम संस्कार नहीं होगा बल्कि रिश्तों का अंतिम संस्कार होगा। तुम समझोगे नहीं। पूरी कहानी नहीं पता ना तुम लोगों को। समाज में तो रूपेन्द्र का अच्छा-अच्छा चेहरा ही दिखता है न।'

'आप कहना क्या चाहते हैं? सब साफ-साफ बताइए। तब तो कुछ समझ में आए।' सुनील ने मामले को समझने के लिए सीधे-सीधे संजय जी से पूछा।

'दुनिया को सीख देते हैं कि माता-पिता की सेवा करो। खुद क्या करते हैं, जानते हो तुम। चार भाई हैं। चारों खूब कमाते हैं। चारों के पास बड़े घर हैं। लेकिन, माँ-बाबूजी के लिए किसी भी घर में थोड़ी सी जगह नहीं है। चारों भाइयों ने माता-पिता को पुस्तैनी मकान में अकेले छोड़ रखा है। बुढ़िया तो चल बसी। उसका जीवन तो सुधर गया। रोज का दुःख था, बच्चे अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ नहीं रखते। बेचारे बाबूजी का अब क्या होगा, मुझे तो यही चिंता सताए जा रही है। अकेले रह गए। अब पहाड़-से दिन और लम्बी रातें क्या दीवारों से बात करके काटेंगे? कौन सुनेगा उनका सुख-दु:ख? रूपेन्द्र की समाजसेवा भी दिखावे की है। सब ढकोसला है। लेकिन, मैंने जानबूझकर कभी इस मामले पर रूपेन्द्र की निंदा नहीं की। क्योंकि समाज को नहीं पता कि वह अपने माता-पिता को कैसे रखता है। समाज तो वृद्धों के लिए चलाए गए उसके अभियान से प्रेरणा पा रहा है। अच्छा है यह पहलू उजागर न हो, वरना समाज का विश्वास टूटेगा। भले ही वह स्वार्थवश यह अभियान चला रहा है लेकिन उसके कारण समाज का तो भला हो रहा है।'

'लेकिन, दोस्तो रूपेन्द्र ने अब जो किया है उससे मेरा मन भर गया है। तुम दिखे तो लगा, मन को हल्का कर लिया जाए। रूपेन्द्र से घृणा करने लगोगे आप, जब मैं आपको बताऊंगा कि दोपहर में दो बजे माँ का निधन होने के बाद भी कल क्यों अंतिम संस्कार नहीं किया गया। सिर्फ इसलिए कि कम समय में ज्यादा लोगों तक सूचना नहीं पहुंच सकेगी और अंतिम यात्रा में कम लोग आएंगे। लोग क्या कहेंगे, रूपेन्द्र की माँ का अंतिम संस्कार है और श्मशान खाली दिख रहा है। दूसरे दिन शवयात्रा ले जाएंगे तो अखबार में खबर पढ़कर शहर के ज्यादा से ज्यादा लोग आएंगे। फेसबुक, ट्विटर और सोशल मीडिया पर भी तो सूचनाएं भेजी गईं। सब रूपेन्द्र का आइडिया था ताकि शवयात्रा और श्मशान में लोगों का हुजूम दिखे।'

'ये भीड़ देख रहे हो तुम। इसी भीड़ के लिए रूपेन्द्र ने अंतिम संस्कार एक दिन टाल दिया।' घर के बाहर, गली में और मुख्य मार्ग तक तितरी-बितरी खड़ी भीड़ की ओर हाथ लहराते हुए संजय माहेश्वरी ने कहा।

'माँ के अंतिम संस्कार के बहाने रूपेन्द्र पार्टी के आलाकमान को अपनी लोकप्रियता दिखाना चाहता है। ताकि आने वाले विधानसभा चुनाव में टिकट मिल सके। घटिया है यह राजनीति। घटिया है यह सोच। संस्कारों का अंतिम संस्कार है।' इतना कहकर संजय खामोश हो गया। उधर, चार लोगों ने शव को कांधे पर उठा लिया। रूपेन्द्र जी हांडी थामे आगे-आगे चले जा रहे हैं। श्मशान घाट की ओर, अंतिम संस्कार के लिए।

किरार कॉलोनी, कम्पू,
लश्कर ग्वालियर (म.प्र.)- ४७४००१
मो.-०९८९३०७२९३०

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में पदस्थ हैं। देशभर के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक विषयों पर आलेख, कहानी, कविता और यात्रा वृत्तांत प्रकाशित।)

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधूरा सपना

●

रश्मिशील

जगत और तेज-तेज पैर चलाने लगा। हालांकि शरीर थक चुका था और मन के उत्साह से कोसों पीछे चल रहा था। मन और शरीर दोनों विपरीत दिशा में चल रहे थे। शरीर निढाल था और कहीं भी दो क्षण विश्राम चाह रहा था। जबकि मन का पंछी उड़कर पलभर में लाली के पास पहुँचना चाह रहा था।

लाली की याद आते ही उसकी बड़ी-बड़ी आँखें जगत की छाती में चिपक के रह गयीं। आँखों के नीचे थोड़ी चपटी गोल सी नाक से निकली सुगन्ध से जगत सराबोर होने लगा तो उसने थोड़ा और जोर लगाया और गोल-गोल घूमते पैरों के साथ गाने लगा-तोरे कजरारे नैना मा मोरा जियरा गोता खाय।

बड़ी देर तक वह यही एक लाइन दोहराता रहा। जब उसे लगा कि पीछे बैठी सवारी उस पर हँस रही है तो झेंप कर चुप हो गया। उसको चुप देखकर सवारी ने सवाल किया-का भवा भैया! चुप काहे हो गये तो जगत शरमाकर सिकुड़ सा गया। मगर सवारी बात का सिलसिला आगे बढ़ाने के मूड में थी। उसने अगला प्रश्न किया का, हो भैया! नवा नवा विहाव भवा हय? इस प्रश्न पर जगत ने पीछे मुड़कर सवारी को देखा। कोई अधेड़ उम्र होगी। बातचीत के आधार पर जगत को यह समझते देर न लगी कि सवारी किसी गाँव से तशरीफ लायी है।

सवारी के लिये जगत के मन में आदर भाव उपजा। उसने विनम्रता से जवाब दिया 'नाहीं, दद्दा। विहाव भये तो चार साल होइगे हय, हाँ गौना भये थोड़े ही दिन भै हय।' सवारी 'अच्छा अच्छा! कौने गाँव के रहवइया आहियु।' जगत-दद्दा, यहि उन्नाव जिला के मंगतपुर गाँव के है। गाँव का नाम लेते ही जगत के मुख का स्वाद कसैला हो गया। शहर में भले ही प्रजातंत्र आ गया हो, मगर गाँव में तो प्रजातंत्र बस कहने के लिए है। यहाँ शहर में लोग जाति कुजाति का विचार नहीं करते है। मगर गाँवों का दिल अभी इतना बड़ा नहीं हुआ है।

पहले के जमींदार अब प्रधान का चोला धारण कर काबिज हैं। उसके गाँव में भी तो ठाकुर प्रताप सिंह ही सर्वेसर्वा हैं। गाँव के विधायक, नेता या कोई दूसरा बड़ा आदमी गाँव आता है तो ठाकुर के दरवाजे ही आता है। वहीं पर खा-पीकर मौज मस्ती कर वापस चला जाता है, वहीं से गाँव की सारी प्रगति रिपोर्ट तैयार हो जाती है। आत्मा सन्तुष्ट तो परमात्मा सन्तुष्ट। गाँव का केन्द्र बिन्दु वही है। उसके मन से एक गाली ठाकुर के लिए निकली साला हराम....। उसी की बदौलत तो आज वह रिक्शा चला रहा है, नहीं तो पढ़ लिखकर और कुछ नहीं तो कहीं बाबू तो हो ही जाता। उसके जेहन में वह घटना कौंध गयी जब जगत ठाकुर की हमजोली बिटिया रमा के साथ बाग में चला गया था और पेड़ से आम तोड़ कर रमा को दिया था। तब ठाकुर ने उसके बाप को बुलाकर कितनी फटकार लगाई थी। उसने जगत के बाप से कहा था कि हरिया। अपै लरिका का ऊंच नीच समझाव, पैर केरि धूरि माथे नहीं चढ़ाई जात हय। पढ़वे पठवत हो तो दुनियादारी केर पाठ पढ़ाव न भूलौ। औ तब हरिया ने उसको बहुत मारा था और मारने के बाद उसी के साथ रोने लगे थे।

मगर रमा दूसरे दिन फिर आ गई थी उसके साथ खेलने के लिए। वह जगत के लिए खट्टी मीठी गोलियाँ भी लायी थी। जिससे कि वह नाराज न रहे। रमा उसको बड़ा मान देती थी। अब तो रमा भी कितनी बड़ी हो गई होगी। सोचा कि अबकी जाऊँगा तो ठाकुर के घर भी जाऊँगा, शायद रमा से मुलाकात हो जाये। वरना तो उस घटना के बाद जगत ठाकुर के दरवाजे न गया और बाप से मार खाने के बाद ही नाराज होकर वह दो- चार दिन बाद एक रात चुपके से यहाँ लखनऊ भाग आया था। इधर-उधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुकान और होटल, ढाबे में काम करते हुए अब रिक्शा चालक बन गया है।

उसकी सोच को ब्रेक लगा, उसने सुना पीछे बैठी सवारी कह रही थी कि अरे भाई ,तब तो तुम हमरे पड़ोसी हव। मंगतपुर ते करीब दस कोस दूर बरसाइतपुर हमार गाँव हय। जगत को याद आया कि उस गाँव में उसके दूर के रिश्ते की बहिन व्याही है। जगत को पीछे बैठी सवारी के प्रति बड़ा अपनापन उमड़ा। अब से पहले वह सोच रहा था कि ठीहे पर पहुँच कर तय पैसे से कम से कम दस रुपये अधिक माँगेगा। मगर अब सोचा कि यह ठीक नहीं होगा। आखिरकार गाँव का हेत व्यवहार भी तो कोई चीज हय। सवारी भी सोच रही थी कि ये तो हमारे ही पड़ोसी गाँव का है, इसे हम दस रुपये ज्यादा दे देंगे। कह देंगे कि बहुरिया का दे दियौ। मगर सोच को दोनों ने ही जाहिर न होने दिया। इधर उधर की, खेती पाती गाँव-घर की बातों के बीच चारबाग से मवैंया पुल की चढ़ाई पार हो गई। पुल से उतरने में तो वैसे ही मेहनत कम लगती है। मवैया पुल के नीचे उतरकर दाहिनी ओर सड़क पर मुड़कर थोड़ा आगे ही सवारी को उतरना था।

सवारी उतार कर जगत वापस चल पड़ा। दस रुपये ज्यादा मिलने पर पहले जगत ने वापस किया लेकिन बाद में सवारी के कहने पर उसने रख लिया। अब उसने तय किया कि वह सीधा घर पहुँचेगा। वह लाली के पास जल्द से जल्द पहुँचना चाहता था। आज वह खुश था क्योंकि अच्छी सवारी मिली थी। इसलिए उसकी कमाई ठीक-ठाक हो गई थी। रिक्शा मालिक को देने वाले पचास रुपये हटाकर भी उसके पास करीब दो सौ अस्सी रुपये थे। उसने सोचा कि इन्हीं रुपयों से वह लाली के लिए एक सलवार सूट खरीदेगा। अभी राजाजीपुरम् की बाजार लगी होगी। बाजार से खरीदने पर सस्ता मिल जाता हैं। वरना दुकान के अन्दर से खरीदना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि दुकान में दाम दुगने तिगुने हो जाते हैं। पिछली बाजार में उसने एक का दाम भी पूछा था। तीन सौ बता रहा था, मोल तोल करने पर ढाई सौ का देने को तैयार हो गया था। जगत ने सोचा कि अगर बिका नहीं होगा तो उसी को ले लेगा। लाल सुर्ख रंग पर पीले रंग के फूल टके थे। उसे वह कपड़ा बड़ा पसन्द आया था।

जगत अभी थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा कि किसी ने उसे पीछे से आवाज दी-ए रिक्शा खाली है?

जगत ने नहीं कहा और आगे बढ़ने ही वाला था कि उसने फिर कहा-चारबाग तक चलना है, अधिक पैसे ले लो मगर चलो। साथ में बूढ़ी माँ है, इनसे पैदल चला नहीं जा रहा है। हम वैष्णव माता के दर्शन के लिए जा रहे हैं। उसका पुण्य तुम्हें भी मिलेगा।

जगत को पाप-पुण्य से कुछ लेना देना नहीं था। वह कर्म वादी था। दिन भर हाड़ तोड़ मेहनत के बाद सुख से सूखी रोटी खाकर जमीन पर सोकर उसके सख्त शरीर का निर्माण हुआ है। मगर बूढ़ी माँ की हालत और अधिक पैसे के लालच में वह तैयार हो गया। सोचा आज का दिन अच्छा है। अबकी जो पैसे मिलेंगे उससे चारबाग के ही किसी रेस्टोरेन्ट से दो डोसा पैक करा लेंगे। फिर घर में दीपक की रोशनी करके खायेंगे। लाली से कहेगा कि रानी खाओ, ये कैण्डिल लाइट डिनर है। लाली तो समझ भी न पाएगी वह बेचारी इस शहर के तौर तरीका क्या जाने। अभी उसे ही कहाँ पता है? हाँ मगर वह खुश जरूर होगी। लाली एक बार फिर मुस्कुराती इठलाती सी उसके सामने खड़ी हो गई, लाली को मुस्कराता देख वह भी मुस्कुरा उठा। पहले तो वह विवाह को ही राजी न था। मगर अब तो लगता है कि लाली के बिना वह कभी रहा ही नहीं। भला हो अम्मा का, जिन्होंने अपने बेटे की खाने-पीने की परेशानी को देखकर बहू को साथ भेज दिया। हालांकि लाली के आने से खर्च काफी बढ़ गये हैं। पहले तो वह एक छोटी थाली, भगोना और लोटा अपने रिक्शे के नीचे की सीट पर रखे हुए था। जहाँ मौका लगा, वहीं कभी रोटी तरकारी, कभी रोटी दाल तो कभी दाल भात बना कर खा लेता था। रहने का ठिकाना भी उसने अपने रिक्शा मालिक के घर के बाहर चबूतरे पर ही बना लिया था। मालिक को इसलिए एतराज न था क्योंकि उसके घर की चौकीदारी फ्री में हो जाती थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाली को लाने के बाद तुरन्त ही रहने का इंतजाम करना पड़ा। राजाजीपुरम से आगे जाने वाले सड़क पर रघु दादा ने अवैध कब्जा कर रेलवे लाइन के किनारे टीन की छत बनवा कर छोटी-छोटी कोठरी तैयार करवाई थी। उसी में एक कोठरी जगत ने दो सौ रुपये महीना किराये पर ले ली थी। कुछ बर्तन भाड़े का इंतजाम भी करना पड़ा। मगर घर में रहने का सुकून मिला। सच में लाली बड़ी सुघड़ है। उसने पूरे घर को करीने से व्यवस्थित कर दिया है। कोठरी के एक कोने में फोल्डिंग चारपाई पड़ी है दिन में लाली चारपाई खड़ी करके दो कुर्सी डाल देती है। रात में कुर्सी किनारे करके चारपाई डाल लेती है। एक तरफ पुरानी धोती का परदा करके उसने रसोई बना रखी है। बड़ी-बड़ी कीलें ठोक कर उस पर लकड़ी के पटरे रख दिये हैं। उसी पर पुराने अखबार बिछा कर घर गृहस्थी का जरूरी सामान सजा दिया है। दरवाजे पर भी धोती का टुकड़ा डाल कर परदा कर दिया है। यह सब सोचते-सोचते लाली की याद तीव्रतर होती गई। मन जब यादों के सागर में गोता खाने लगा तो शरीर उसी भावसागर के किनारे विश्राम करने लगा। अभी कुछ ही देर पहले वह इसी पुल को पार करके गया था और अब फिर से चढ़ाई चढ़ने से उसका दम फूलने लगा। साँस तेज चलने लगी। बीच-बीच में आँखें मुँद जातीं। मगर लाली उसके आगे-आगे चलकर उसे रास्ता दिखा रही थी। दिल से आवाज आने लगी-बस थोड़ी देर, बस थोड़ा सा रुको। लाली ने अपनी बड़ी-बड़ी पलकें झुका लीं, जगत ने भी आँखें बन्द कर लीं।

ए रिक्शा, थोड़ा जल्दी जल्दी चलो, ट्रेन छूट जायेगी। समय पर पहुँचा दो, इसीलिए ज्यादा पैसे दे रहा हूँ। फटकार सुनकर जगत फिर पैडल पर पैर मारने लगा। पुल उतरते समय ज्यादा मेहनत नहीं लगती है। मगर हैण्डिल संभालने में जगत को खासी मशक्कत करनी पड़ी। मवैया पुल से उतर कर जगत बायीं ओर मुड़ा। पीछे बैठी सवारी लगातार जल्दी-जल्दी की रट लगाये थी। जगत ने स्टेशन के बाहर रिक्शा लाकर खड़ा किया। ट्रेन प्लेटफार्म पर लग चुकी थी। सवारी ने पचास का नोट दिया और शेष पैसे वापस लिये बिना ही जल्दी-जल्दी स्टेशन के अन्दर चली गयी। जगत पैसे वापस करने के लिए लपका, तभी पुलिस वाले ने उसको डपटा-अबे, कहाँ खड़ा है। यह कोई तेरे बाप की जगह है। जगत बिना कुछ कहे चुपचाप रिक्शा लेकर शिथिल हो चुके कदमों से लौट पड़ा। मगर उसकी चुप्पी उस पुलिस वाले को खटकी। उसने तुरन्त भद्दी सी गाली निकाली......साला। अबे, कहाँ जाता है और पीछे से सर पर डण्डा से वार किया जगत संभल न सका लड़खड़ा गया। सिपाही ने उसका गिरेबान पकड़ लिया-ओये, पीकर चलाता है। चल अभी अन्दर करता हूँ। तेरी सारी हेकड़ी निकालता हूँ। और जोर से झटका दिया। जगत धप्प करके सामने आती कार से टकरा कर गिर गया। ब्रेक लगाते-लगाते कार का पहिया उसके ऊपर आ गया। सिपाही अब जगत को छोड़ कर कार वाले से भिड़ गया।

जगत जमीन पर औंधा पड़ा था। दुकान पर टँगा लाल सूट उसके शरीर से चिपट गया था। उसका लाल दुपट्टा उसके स्वप्न से मिलकर एक हो गये। लाली का स्पर्श उसे बहुत समीप से महसूस हुआ और उसके शरीर की सुगन्ध उसकी साँसों के साथ उड़ चली। दूर.........बहुत दूर।

सम्पर्क : ३/१ टिकैत राय तालाब कॉलोनी, लखनऊ

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक परिचय

क्रांति-गाथा

समीक्षक
नीलमेन्दु सागर

कृति	:	**क्रांति-गाथा**
कवि	:	डॉ. जी. पी. शर्मा
प्रथम संस्करण	:	२०१२
मूल्य	:	३००/-
प्रकाशक	:	कविता कोसी, कटिहार, गाजियाबाद।

'क्रांति-गाथा' सहरसा (बिहार) निवासी ६८ वर्षीय डॉ. जी. पी. शर्मा (डॉ. गोविंद प्रसाद शर्मा) की सार्थक शीर्षक एवं ३२४ पृष्ठों वाली बहुत ही श्रम साध्य ऐतिहासिक काव्य-कृति है। 'गाथा' का प्रासंगिक अर्थ है छोटे-छोटे प्रसंगों पर बने हुए पद्य और उनका संग्रह, यथा- 'गाथा सप्तशती' । क्रांति-गाथा में १८५७ से १९४७ तक की अवधि में अंग्रेजों की अधीनता से देश को मुक्त करने के लिए क्रांतिकारियों द्वारा किए गए शौर्यपूर्ण प्रयासों, संघर्षों और निःस्वार्थ बलिदानों का जीवंत पद्यात्मक वर्णन हुआ है। ध्यातव्य है कि २०वीं सदी आते-आते भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दो धाराएँ बन गई-गरमदलीय और नरमदलीय। गरम दल वालों ने १८५७ के सशस्त्र संग्राम को अपना उत्स मानते हुए देश की आजादी के लिए क्रांति और बलिदान का मार्ग चुना, जबकि नरम दल ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसा और असहयोग की राह पकड़ी। दोनों दलों का उद्देश्य समान होने के बावजूद आजादी का अधिकांश श्रेय और संपूर्ण सुख-सुविधा का लाभ नरम दल वालों ने लिया, जबकि क्रांतिकारियों को अकूत त्याग और बलिदान के बदले दुःख-असुविधा और जिल्लतें झेलनी पड़ीं। उन्हीं ऐतिहासिक क्रांतिकारी एवं बलिदानी चरित्रों और उनसे सम्बद्ध राष्ट्रीय घटनाओं की अविकल सच्चाई को ईमानदारी के साथ काव्यात्मक सौन्दर्य और सुरभि से मंडित करने का जोखिम भरा श्रमसाध्य सराहनीय प्रयास है -'क्रांति-गाथा'।

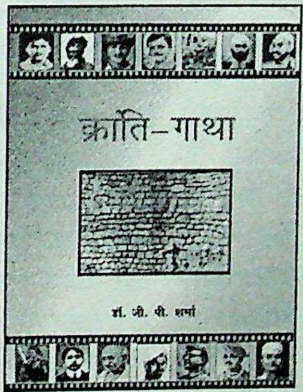

समीक्ष्य पुस्तक कुल १३ सर्गों में विभाजित एवं सुनियोजित है, जिससे कृति के महाकाव्यत्व का आभास मिलता है। इसके भूमिका लेखक डॉ. रमेशचन्द्र वर्मा ने 'क्रांति-गाथा' को 'एक ऐतिहासिक महाकाव्यात्मक कृति' मानते हुए भी स्पष्ट कहा कि इस काव्य में कथा का स्वरूप अन्य कथा-प्रकारों से भिन्न है। 'महाकाव्य के लिए महान् कथा-वस्तु। महान् चरित्र और महती काव्य शैली की अनिवार्य आवश्यकता मानी गई है, जो इस ग्रंथ को प्रकारान्तर से उपलब्ध है। जहाँ परम्परागत अथवा रूढ़ अर्थ में महाकाव्य के कथानक और चरित्र अतिरंजनाग्रस्त होकर ऐतिहासिक सत्य का शीलहरण ही नहीं करते बल्कि उसे अविश्वसनीय बना देते हैं, वहीं समीक्ष्य महाकाव्यात्मक कृति में ऐतिहासिक घटनाओं की सत्यशीलता प्रमाणिक, विश्वसनीय और सहज सुंदर होकर अभिव्यक्त हुई है। समान लक्ष्यीय आन्तरिक नैरन्तर्य वाले ९० वर्षों की लम्बी अवधि के कथासूत्र में मंगल पांडेय से लेकर सुभाषचन्द्र बोस तक देश की स्वतंत्रता के लिए प्राणोत्सर्ग कर देने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले एक से बढ़कर एक अनेक महान क्रांतिधर्मी चरित्र के मनके पिरोये गए हैं। साथ ही, सहज सरल भाषा में भावानुकूल विविध छंदों के सफल प्रयोग की शैलीगत महत्ता भी ध्यातव्य है इस कृति में। अत: प्रस्तुत कृति की महाकाव्यात्मकता असंदिग्ध है। इसमें भारत की स्वतंत्रता के निमित्त हुई क्रांति का समग्र इतिहास है, उसके कारण-परिवेश, परिवेश और परिणाम वर्णन है, क्रांतिकारियों का प्रामाणिक जीवन-वृत्तांत है। साथ ही, स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक विसंगतियाँ, राजनीतिज्ञों का मानसिक बंजरपन, वैचारिक दारिद्रय और चारित्रिक पाखंड का निष्पक्ष-निर्भीक वर्णन है और राष्ट्र कल्याण की शुभेच्छा भी। अत: 'क्रांति-गाथा' गाथा काव्य की परम्परा में एक पठनीय, विचारणीय और संग्रहणीय महाकाव्य है। लेकिन महाकाव्य और महान काव्य में तात्विक भिन्नता है। महाकाव्य सायास प्रायोजित वर्णनात्मक प्रबंध रचना है। वस्तुत: महाकाव्य के विदित लक्षण अपने-आप में काव्य की महानता के विधायक नहीं हैं। काव्य रचनाकार की आत्मानुभूति की सुखद-सुंदर-सहज-स्फूर्त शाब्दिक अभिव्यक्ति है जिसका संबंध वर्णन, विश्लेषण या पठित-अर्जित ज्ञान की अपेक्षा प्रेरणा से अधिक है। कोई भी पद्यात्मक रचना तब तक कविता नहीं बन पाती जब तक वह प्रेरणा के दबाव में न लिखी गई हो और विडम्बना है कि प्रेरणा बड़ी अल्पजीवी होती है। इतनी अल्पजीवी कि महाकाव्य लिखने तक तो क्या एक लम्बी कविता लिखने तक भी वह नहीं टिक पाती। अत: महाकाव्य का काव्यत्व इसमें है कि उसकी कितनी पंक्तियाँ प्रेरणा-प्रसूत हैं। प्रसन्नता की बात है कि समीक्ष्य कृति में ऐसी पंक्तियाँ भी हैं, यथा-काकोरी कोष हरण काण्ड एवं सुभाषचन्द्र बोस के संदर्भ में क्रमश: लिखी गई ये पंक्तियाँ -

'अर्थकोष ले सकल वीरवर, जंगल की ओर चले थे।
लुकते-छिपते वे मस्ताने, निज रक्षित ठौर चले थे।।
साहस देख हिन्द सपूत का, किया गगन गर्जन भारी।
दामिनी दमक उठी दनादन, ज्योतित कर पथ हितकारी।।
काले-काले घन कजरारे, अंबर में घूम रहे थे।
हर्षित हो दृग बिन्दु गिराकर, वीरों को चूम रहे थे।।
शीतल मन्द हवा पावस की, तन-मन को सहलाती थी।
जुगनू विहँस-विहँस वीरों को, वन में राह दिखाती थी।।'

(पृष्ठ : १२५-१२६)

*****

'मन में क्रांति अनल की ज्वाला औ मधुऋतु की मादकता
राह कंटीली उधर सजी थी और न वहाँ अराजकता।
मलय पवन की शीतलता जो थके चरण को सहलाती।
आज कोकिला उच्च स्वरों में राग क्रांति के थी गाती।'

(पृष्ठ : १८२)

कवि के अध्ययन और मनन के लिए जितना व्यापक और उपयोगी क्षेत्र जीवन और प्रकृति है, उतना पुस्तक और पुस्तकालय नहीं। शुष्क किताबी ज्ञान पर निर्भरता कवि की मौलिकता को दुष्प्रभावित करती है।

'क्रांति-गाथा' जैसी कालजयी कृति अकूत श्रम-साधना का ही पुण्यफल होती है। अत: इस गुण-दोष मय संसार में भी इसकी गुणवत्ता इसे अनिवार्य रूप से पठनीय और संग्रहणीय बनाती है, जैसा तुलसीदास जी कहते हैं-

जड़ चेतन गुन दोष मय, विश्व कीन्ह करतार।
संत हस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ।।

बेगुसराय (बिहार)
मो. : ०९९३१९४८७१४

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

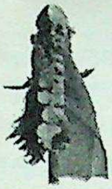

राष्ट्रीय अस्मिता की जड़ों को सुरक्षित रखने का संदेश देती एक कृति : 'राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य'

•

समीक्षक : आनन्द प्रकाश 'आर्टिस्ट'

पुस्तक	:	राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य (शोध-पत्र संकलन)
सम्पादक	:	**क्रांति कनाटे,**
प्रकाशक	:	अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास, बाबा साहब आपटे भवन, केशव कुंज, झण्डेवालां, नई दिल्ली-११०००५५
पृष्ठ	:	१६४
मूल्य	:	२०० रुपए

सद्य प्रकाशित पुस्तक 'राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य' अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एक ऐसी शोध कृति है, जिसमें इसी विषय को केन्द्र में रखते हुए प्रस्तुत किए गए ४४ शोध-पत्र संकलित हैं। विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत इन शोध-पत्रों के संकलन रूप में प्रकाशित विवेच्य कृति का सम्पादन क्रांति कनाटे ने किया है। अपने सम्पादकीय वक्तव्य में सुश्री क्रांति कनाटे ने कहा है- ''राष्ट्रीय अस्मिता का सीधा सम्बंध हमारी संस्कृति तथा सभ्यता से है। एतद् संस्कृति एवं सभ्यता पर हुआ हर आघात हमारी अस्मिता पर सीधे-सीधे प्रहार करता है। साहित्य समाज से प्रभावित होता भी है और वह समाज को प्रभावित करता भी है, तभी तो राष्ट्रीय अस्मिता के संदर्भ में वर्तमान साहित्य की चर्चा होना अत्यन्त आवश्यक है।''

वस्तुतः कहा जा सकता है कि विवेच्य पुस्तक में संकलित प्रत्येक लेख अथवा शोध-पत्र केन्द्रीय विषय पर प्रकाश डालता है और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के संदर्भ में आज के साहित्यकार को अपने दायित्व का बोध कराता है। जैसे कि श्रीधर पराडकर ने अपने लेख 'राष्ट्रीय अस्मिता और वर्तमान साहित्य' में कहा है कि-''हमारी लेखनी में, हमारे तथ्य और कथ्य में दम होगा तो सतह पर तैरने वाली गाद स्वतः छट जाएगी।'' इसी संदर्भ में डॉ. बलवंत जानी ने अपने लेख 'राष्ट्रीय अस्मिता-प्रबोधन और परिणाम' में कहा है-''राष्ट्रीयता या नागरिकता केवल किसी राष्ट्र या नगर में निवास करने से प्राप्त नहीं होती। वह हमें हमारे व्यक्तित्व में से, व्यवहार और भाषा अथवा बर्ताव द्वारा दर्शानी है।...हमें राष्ट्रीय अस्मिता को प्रकट करने वाले साहित्य का सर्जन करना है।'' हिन्दी साहित्य अकादमी भोपाल के निदेशक प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने अपने शोध-पत्र 'राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य' में विभिन्न उदाहरणों एवं उद्धरणों द्वारा राष्ट्रीय अस्मिता का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट किया है और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के संदर्भ में साहित्य और साहित्यकार की भूमिका पर प्रकाश डाला है। इसी विषय पर डॉ. नन्दलाल मेहता 'वागीश' ने कहा है कि, ''राष्ट्रपुत्रों के द्वारा भावित भारत-भाव के ऐसे संतुलित-सजग बोध से ही 'राष्ट्रीय अस्मिता' का रक्षण और संरक्षण सम्भव है।'' उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री साहित्यकार रविन्द्र शुक्ल 'रवि' का कहना है कि, ''हम राष्ट्रीय भाव से अनुप्रेरित साहित्यकार संकल्प के साथ उठें और लक्ष्य प्राप्ति तक अनवरत गतिशील रहें, तभी सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे।'' सुविख्यात साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली ने अपने लेख- 'मैं भारतीय क्यों हूँ' के माध्यम से राष्ट्रीय अस्मिता की अवधारणा एवं महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि-''मैं भारतीय हूँ, क्योंकि मैं अपनी जड़ों से प्रेम करता हूँ, अपने अतीत से प्रेम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता हूँ, अपनी संस्कृति से प्रेम करता हूँ, अपनी भाषाओं से प्रेम करता हूँ। इन सबके बिना मैं अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर पाता।'' 'राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य' को लेकर कुछ इसी तरह के विचार अन्य विद्वानों ने भी अपने-अपने शोध-पत्र अथवा लेख में व्यक्त किए हैं। किसी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं को दृष्टिगत रखते हुए अपना मत स्पष्ट किया है तो किसी ने किसी साहित्यकार अथवा किसी साहित्यकार की किसी कृति विशेष को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा की आवश्यकता के संदर्भ में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट किया है। बात हम लोक साहित्य अथवा लोक भाषा में रचे गए साहित्य की करें या फिर किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रचे गए साहित्य अथवा साहित्यिक कृतियों की, निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि साहित्यकार अथवा व्यक्ति विशेष का परिवेश और युगीन परिस्थितियाँ उसकी रचनाओं अथवा कृतियों के माध्यम से साहित्य में स्थान पाती हैं। सम्भवत: इसी को दृष्टिगत रखते हुए डॉ. सम्राट सुधा ने अपने शोधपरक आलेख 'राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्य' में साहित्य के संदर्भ में कहा है कि-''साहित्य अपने युग की देन होने के साथ-साथ सुभविष्य का शाब्दिक 'प्रबंधन' एवं आह्वान भी है।'' मतलब साफ है कि साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि से एक राष्ट्र के रूप में 'हम क्या थे-क्या हो गए' के साथ-साथ हमें इस बात पर भी आज ही विचार करना होगा कि 'यही हाल रहा तो हम क्या होंगे?' इसी प्रश्न का एक सटीक उत्तर प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास किया है डॉ. सम्राट सुधा जी ने अपने प्रस्तुत शोध-पत्र में। इन्होंने साहित्य इतिहास के विभिन्न कालखण्डों का अध्ययन-विवेचन कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया है कि राष्ट्रीय अस्मिता के संरक्षण में साहित्य की भूमिका साहित्यकार के युगबोध अथवा उसकी सामाजिक चेतना के रूप में पूरी तरह से स्पष्ट होकर सामने आती है। इसी तरह से डॉ. ज्वाला प्रसाद कौशिक साधक ने अपने शोध आलेख 'राष्ट्रीय अस्मिता की तात्विक मीमांसा और वर्तमान परिदृश्य' में साहित्य के स्वरूप को पूरी तरह से स्पष्ट करने के साथ-साथ राष्ट्रीय अस्मिता के प्रमुख घटकों, मूल सद्वृत्तियों, राष्ट्रीय तथा सामाजिक चुनौतियों आदि का भी विस्तार से विवेचन किया है। वस्तुत: कहा जा सकता है कि प्रत्येक युग अपने समय के साहित्यकारों से न केवल अपने यथार्थ स्वरूप के चित्रण की मांग करता है, बल्कि समाज में वैयक्तिक चेतना जगाने की भी मांग करता है।

राष्ट्रीय अस्मिता के संदर्भ में यदि हम साहित्यकार के दायित्व की बात करें तो कह सकते हैं कि जहां किसी युग विशेष की चेतना हमें उस युगीन साहित्य में मिलती है, उसी प्रकार किसी साहित्यकार विशेष की अपनी चेतना अथवा उसके युगबोध की अभिव्यक्ति हम उसकी रचनाओं अथवा कृतियों में देख सकते हैं। इस दृष्टि से डॉ. ला सुमंत ने अपने आलेख 'भारतेन्दु के साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता के स्वर', डॉ. विप्लवेन्द्र कुमार वर्मा ने 'राष्ट्रीयता और प्रेमचन्द', प्रो. अन्नपूर्णा भदौरिया ने 'प्रसाद के कथा साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता के आयाम', डॉ.राजकुमार उपाध्याय मणि ने 'सांस्कृतिक चेतना और मूल्य के कवि : मैथिलीशरण गुप्त', अखिलेश कुमार शर्मा ने 'दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय अस्मिता' और सुश्री क्रांति कनाटे ने 'अज्ञेय का आलोचनात्मक साहित्य' आदि आलेख में राष्ट्रीय अस्मिता के संरक्षण के प्रति अपने विवेच्य साहित्यकार की चेतना अथवा युगबोध को स्पष्ट करने के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रेरक पहलुओं अथवा तथ्यों को भी रेखांकित किया है। सुश्री क्रांति कनाटे ने राष्ट्रीय अस्मिता के विभिन्न उपादानों के उल्लेख करने के साथ-साथ अज्ञेय जी के सत्य कहने अर्थात लिखने के स्वभाव को भी स्पष्ट किया है। क्रांति जी का कहना है कि ''अज्ञेय अपने समकालीन लेखकों आलोचकों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की तीखी और कटु प्रतिक्रियाओं का शिकार होते रहे, परन्तु यह उनके सत्य का नैतिक बल था कि वे अपनी बात कहने से न तो कभी घबराये, न ही हिचकिचाये।'' मतलब साफ है कि यदि राष्ट्रीय अस्मिता के संरक्षण के संदर्भ में साहित्यकार अपने दायित्व के प्रति सचेत एवं निष्ठावान हो तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे राष्ट्र व समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने से नहीं रोक सकती। विवेच्य पुस्तक में संकलित सभी आलेख समग्र रूप में कुछ इसी तरह का प्रभाव छोड़ते हैं और अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के प्रयासों को सार्थक करते हैं। वस्तुतः विवेच्य पुस्तक विषय के अध्येताओं के लिए ही नहीं बल्कि सभी साहित्यकार बंधुओं के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय है। पुस्तक की छपाई शुद्ध एवं स्पष्ट है। आवरण प्रतीकात्मक है, किन्तु जटिल नहीं है। इसे देखते ही आम पाठक भी बड़ी आसानी से पुस्तक के इस मूल संदेश को समझ जाता है कि यदि राष्ट्र एक पेड़ है तो साहित्य उसकी अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए जड़ों को सींचने में खाद-पानी का काम करता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा परिवेश अथवा राष्ट्रीय जीवन सुख-समृद्धि से हरा-भरा रहे, तो हमें साहित्य के माध्यम से समाज को वैचारिक पोषण देकर राष्ट्रीय अस्मिता की जड़ों को सुरक्षित रखना होगा। वस्तुतः हम कह सकते हैं कि पुस्तक में शामिल सभी शोध-पत्रों के लेखक और पुस्तक की सम्पादक सुश्री क्रांति कनाटे निश्चित रूप से बधाई की पात्र हैं।

अध्यक्ष
आनन्द कला मंच एवं शोध संस्थान,
सर्वेश सदन, आनन्द मार्ग, कोंट रोड
भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)

❖❖❖

हमें खेद है कि इस पुस्तक में सुश्री अजित गुप्ता का लेख 'संस्कृति का संवाहक साहित्य' डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के नाम से भी प्रकाशित हो गया और पंचोली जी का राष्ट्रीय अस्मिता विषयक लेख प्रकाशित होने से रह गया।

'राष्ट्रीय अधिवेशन विशेषांक' (जन.-मार्च) पर पाठकों की प्रसन्नतापूर्ण प्रतिक्रियाएँ निरंतर प्राप्त हो रही हैं। हम आभारी हैं सर्वश्री राघव, भोपाल से डॉ. माया दुबे तथा नवल जायसवाल, रुड़की से डॉ. सम्राट सुधा, जयपुर से अखिलेश शर्मा, कुसुम शर्मा, नाशिक से डॉ. विद्या चिटको, सनावद से संजय येवतीकर, कुल्लू से डॉ. रीता सिंह, इंदौर से सुभाष गौरव, गुवाहाटी से डॉ. देवेंदचंद दास 'सुदामा' तथा निंबाहेड़ा से डॉ. रवींद्र उपाध्याय के जिन्होंने दूरध्वनि के माध्यम से इस अंक हेतु हमारा अभिवादन किया।

■ संपादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्य समाचार

स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकारों का रचना संसार

ग्वालियर। साहित्य परिषद् से सम्बद्ध संस्था मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा ने १ एवं २ मार्च को 'स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकारों का रचना संसार' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में विभिन्न प्रान्त तथा भाषाओं के ४८ साहित्यकारों ने सहभागिता की।

संगोष्ठी का शुभारंभ परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ.यतीन्द्र तिवारी ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में ग्वालियर की महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता तथा मुख्य वक्ता के रूप में परिषद् के संगठन मंत्री श्री श्रीधर पराडकर विराजमान थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता शिक्षण संस्था वी.आई.एस.एम. ग्रुप के चेयरमैन डॉ.सुनील सिंह राठौर ने की।

श्री श्रीधर पराडकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता पश्चात के साहित्य की दिशा में अन्तर स्पष्ट दिखायी देता है। जहां स्वतंत्रता पूर्व का साहित्य देशभक्ति, धर्म, राष्ट्र, संस्कृति जैसे विषयों से परिपूर्ण था, वहीं स्वतंत्रता के पश्चात के साहित्य में इन विषयों को प्रयत्नपूर्वक तिलांजलि देने का प्रयास किया गया। परिणाम भी हमारे सामने है। स्वतंत्रता पूर्व के साहित्य ने लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागी बनाने का महत्कार्य किया। स्वतंत्रता के पश्चात के साहित्य ने लोगों में असंतोष, संघर्ष, विभेद उत्पन्न किया। समाज में स्थापित वर्जनाओं को तोड़ने का आह्वान कर स्वच्छंदता को बढ़ावा दिया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सामाजिक मान्यताओं और स्वाभिमान पर आघात कर समाज में आत्महीनता के भाव भरे।

यह करते समय शाश्वत जीवनमूल्यों की पूरी तरह उपेक्षा की गयी। जड़ों से कटे साहित्यकार व साहित्य को शासन व प्रशासन के सहयोग से जबरन स्थापित कर साहित्यिक वातावरण को बदला गया है। साहित्यकार स्थापित व सम्मानित होते रहे, पर वे समाज का दिल नहीं जीत सके। नये साहित्य की भरमार है, पर ऐसे साहित्य के प्रति समाज की साहित्यकार व साहित्य से दूरी व उपेक्षा साहित्य के लिये घातक है।

जड़ों से जुड़े साहित्यकारों ने भी हार नहीं मानी है। लाख विरोधों और उपेक्षा के बावजूद उन्होंने श्रेष्ठ साहित्य की रचना का कार्य निरन्तर जारी रखा है। कन्नड साहित्यकार डॉ. एव.एल. भैरप्पा, डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. नीरजा माधव, डॉ.मृदुला सिन्हा, डॉ.शत्रुघ्नप्रसाद, डॉ. क्षमा कौल के द्वारा रचित साहित्य को समाज का भरपूर प्रतिसाद मिलता है। समाज इन्हें मान-सम्मान प्रदान कर रहा है। यह सबके लिये प्रेरणास्पद है।

श्री पराडकर ने आह्वान किया कि ऐसे साहित्यकारों के साहित्य का अध्ययन, चर्चा, समीक्षा तथा प्रचार प्रसार कर आछन्न तिमिर को दूर किया जाना चाहिये।

पांच चर्चा सत्रों में डॉ. भूपेन्द्रराय चौधरी-गुवाहाटी असम, डॉ.संजय पंकज मुजफ्फरपुर-बिहार, डॉ.भरत ठाकोर सूरत-गुजरात, श्री ब्रम्हे रत्नागिरी महाराष्ट्र, श्री एम.के.नायी अहमदाबाद-गुजरात, श्री देवेन्द्रचन्द्र दास-गुवाहाटी, श्री रविन्द्र शुक्ल झांसी-उ.प्र., श्री ऋषिकुमार मिश्र मुंबई, श्री जगन्नाथ रेड्डी चिदम्बरम-तमिलनाडु, डॉ.रवीन्द्र उपाध्याय चित्तौड़गढ़-राजस्थान के विशेष वक्तव्य हुए।

सिंहल सेवा सम्मान समारोह

शिवपुरी। स्वाधीनता संग्राम सेनानी रामकिशन सिंघल जी के ९१ वें जन्मदिवस पर श्री रामकिशन सिंहल फाउण्डेशन द्वारा आयोजित सिंहल सेवा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि मध्यांचल ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक एस सी गुप्ता ने स्थानीय दुर्गामठ में,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्यकार डॉ. नाथूराम शर्मा पदमेश, आदर्श शिक्षक एमएस चौबे, अभिभाषक केबी लाल, यूसुफ अहमद कुरेंशी तथा चिकित्सक डॉ. डीके बंसल का उनके कार्यक्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए शॉल, श्रीफल तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया। इस अवसर पर नई गजल के चर्चित हस्ताक्षर डॉ. महेन्द्र अग्रवाल की ११वीं पुस्तक व्यंग्य का ककहरा का लोकार्पण मुख्य अतिथि एस.सी. गुप्ता, अध्यक्ष डॉ. परशुराम शुक्ल विरही, विशिष्ट अतिथि द्वय प्रो. विद्यानंदन राजीव एवं डॉ. लखनलाल खरे द्वारा किया गया। प्रारंभ में पुस्तक पर बोलते हुए डॉ. खरे ने व्यंग्य संसार में इस पुस्तक को अनूठा प्रयोग बताया। उन्होंने अनेक व्यंग्यकारों का उल्लेख करते हुए ककहरे के वर्णो पर आधारित शब्दों को इस्तेमाल करते हुए सशक्त व्यंग्य रचना करने को अभूतपूर्व प्रयास निरूपित किया। उन्होंने डॉ. महेन्द्र अग्रवाल को गद्य लेखन और वह भी व्यंग्य विधा में लेखन हेतु साधुवाद दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात साहित्यकार तथा समालोचक डॉ. परशुराम शुक्ल विरही ने स्व. सिंहल के जीवन के कुछ प्रसंगों का उल्लेख करते हुए, सम्मानित होने वाले गणमान्य नागरिकों को बधाई दी तथा उनके सुखद जीवन की कामना की।

प्रा.मनोहर एवं डॉ.विजया को हिन्दी सेवी सम्मान

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् से सम्बद्ध सांस्कृतिक प्रतिष्ठान 'शब्द-सृष्टि' के संस्थापक प्रा.मनोहर एवं डॉ.विजया को हिन्दी एवं मराठी भाषा के बीच संबंध सुदृढ़ करने के लिये महात्मा गांधी विश्वविद्यालय वर्धा की ओर से 'हिन्दी सेवी सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री रवीन्द्र कालिया, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ.कैलाश खामरे एवं अन्य मान्यवर उपस्थित थे। इस अवसर पर कुलगुरु श्री विभूति नारायण राय ने बताया कि यह इस प्रकार का पहला सम्मान है। इससे विश्वविद्यालय से अन्य भाषा-भाषी जुड़ेंगे जिससे हिन्दी को अधिक व्यापकता प्राप्त होगी।

राजभाषा छत्तीसगढ़ी दिवस मनाया गया

रायपुर। छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री निवास में राजभाषा छत्तीसगढ़ी दिवस मनाया गया। ज्ञात हो कि २८ नवम्बर के दिन छत्तीसगढ़ विधानसभा में छत्तीसगढ़ी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजभाषा बनाने संबंधी विधेयक पारित हुआ था। और इस विषय को लेकर साहित्य परिषद ने सर्वप्रथम राज्य में पहल कर शासन से मांग की थी कि इस दिवस को छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस घोषित किया जाए। शासन ने इसे स्वीकार करते हुए राजभाषा दिवस मनाने की घोषणा की। इस दिवस को यादगार बनाए रखने की दिशा में अखिल भारतीय साहित्य परिषद, रायपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में स्मारिका का विमोचन किया गया। राजभाषा छत्तीसगढ़ी दिवस के मौके पर स्मारिका २०१२ का प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह ने अपने निवास में संस्था के सदस्यों के साथ विमोचन किया। डा. सिंह ने राजभाषा दिवस के मौके पर सभी को बधाइयां दीं वहीं संस्था के सदस्यों ने मुख्यमंत्री का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। इस अवसर पर संस्था के स्वतंत्रता सेनानी एवं पद्मश्री महादेव प्रसाद पांडे, रमेश नैय्यर, साहित्यकार डा. श्यामसुन्दर त्रिपाठी, अजय अवस्थी, जितेन्द्र शुक्ला और संपादक मंडल के सदस्य एवं परिषद के प्रदेश संयोजक प्रभात मिश्र, आशीष सिंह, मनीष शर्मा उपस्थित थे।

रचना गौड़ 'भारती' की 'मन की लघुकथाएं' लोकार्पित

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के तत्वावधान में भारतेन्दु समिति सभागार के मंच पर लेखिका रचना गौड़ 'भारती' की पुस्तक 'मन की लघुकथाएं' का विमोचन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री भगवती प्रसाद गौतम ने की। मुख्य अतिथि आगरा से पधारीं डॉ० सुषमा सिंह, विशिष्ट अतिथि कथाकार अन्नपूर्णा श्रीवास्तव थीं, कृति परिचय कहानीकार मीनू त्रिपाठी ने दिया। पूज्य महामण्डलेश्वर हेमा सरस्वती जी ने आशीर्वाद प्रदान किया। मंच संचालन प्रख्यात साहित्यकार रामेश्वर शर्मा उर्फ़ 'रामू भैया' ने अपने अंदाज़ में किया। श्रीमती मीनू त्रिपाठी ने कृति परिचय करते हुए कहा-"रचना जी की 'मन की लघुकथाएं' पुस्तक में पूर्ण संवेदनशीलता है जो सामाजिक सरोकार से जुड़ी है और सभी रचनाएं समाज में एक रोशनी की ओर इंगित करती हैं।" डॉ. सुषमा सिंह ने कहा-आजकल लघुकथाओं के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है और कथाएं जीवन से जुड़ी होने के कारण मन को हर प्रकार से प्रभावित करती हैं। डॉ. अन्नपूर्णा ने कहा-लघुकथाओं में आपने जो किया है वह मन को मोहने वाला और सामाजिक सरोकारों से प्रकृति के साथ एक सामन्जस्य के साथ लेखन किया है।

खुद से आगे बढ़ कर सोचे साहित्यकार-श्रीधर पराडकर

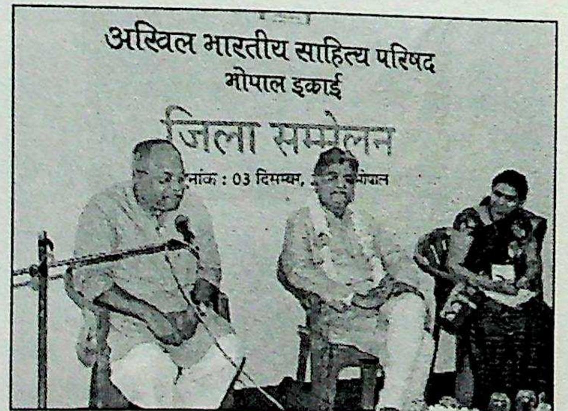

साहित्यकार स्वयं से उठकर राष्ट्र के लिये सोचे। यह उसका दायित्व भी है। अखिल भारतीय साहित्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिषद् एक ऐसी संस्था है जो साहित्यकार को यह अवसर देती है। यह उद्गार साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री श्रीधर पराडकर ने भोपाल के जिला सम्मेलन के अवसर पर प्रकट किये।

परिषद् की भोपाल इकाई द्वारा आयोजित जिला सम्मेलन की अध्यक्षता साहित्यकार श्री श्यामबिहारी सक्सेना ने की। प्रास्ताविक वक्तव्य श्री राजेन्द्र शर्मा अक्षर ने दिया। एक दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न सत्रों में साहित्य पर एकाग्र सत्र हुए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती साधना बलवटे ने किया।

श्री पराडकर ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज साहित्यकार प्रश्न पूछते हैं कि हम साहित्य परिषद् से क्यों जुड़े, हमें क्या मिलेगा। लेकिन साहित्य कुछ मिलने का विषय नहीं है। मिल जाता है यह अलग बात है। साहित्य परिषद् राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली संस्था है। इससे जुड़ने पर साहित्यकार का दायरा विस्तृत होता है। उसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलती है। वह अन्य भाषा के साहित्य से परिचित होता है। परिषद् सब भाषा के साहित्य व साहित्यकारों के कार्य करने वाली विशिष्ट संस्था है। श्री श्यामबिहारी सक्सेना ने कहा कि साहित्यकारों से अपेक्षा है कि वे समाज और राष्ट्र के बारे में सोचें। यह समय की जरूरत भी है।

दूसरे सत्र में 'हमारा समय - साहित्यकार की भूमिका' विषय पर डॉ.देवेन्द्र दीपक की अध्यक्षता में वक्तव्य हुए। मुख्य वक्ता थे होशंगाबाद के साहित्यकार श्री अशो जमनानी और मुख्य अतिथि थे निराला सृजन पीठ के निदेशक श्री दिवाकर वर्मा। अन्य वक्ताओं में आशा शर्मा, ऊषा जायसवाल, उमेश नेमा ने विचार रखे। अंतिम सत्र में डॉ. बिनय राजाराम की अध्यक्षता में कविता पाठ हुआ।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को अभिनन्दन पत्र

सिवनी। दिनांक १ फरवरी २०१४ को परिषद् के सिवनी के कार्यकर्ता साहिबलाल दशरिये ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के नाम के प्रत्येक वर्ण से प्रत्येक पंक्ति का निर्माण करते हुये ३२ पंक्तियों की कविता अभिनंदन स्वरुप मुख्यमंत्री को एक कार्यक्रम में भेंट की। कविता का शीर्षक है 'आओ बनायें अपना मध्यप्रदेश'।

निराला जयंती का आयोजन

हिसार। वसंत पंचमी की पूर्व संध्या पर परिषद् की स्थानीय इकाई ने निराला जयन्ती समारोह का आयोजन डॉ.राधेश्याम शुक्ल की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य डॉ.भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के पुरोधा निराला के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने बताया कि निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में प्राचीन उज्ज्वल परम्परा के प्रति श्रद्धाभावना के साथ-साथ नये युग की संचेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। वस्तुतः निराला की काव्यधारा में हिन्दू नवोत्थान का शंखनाद, परतन्त्रता से मुक्ति का आह्वान, प्राचीन भारत का गौरव गान, नूतन क्रान्ति का निनाद, वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ, मातृभूमि की वन्दना एवं स्वर्णिम भविष्य की मंगल कामना के भाव तरंगित होते दिखते हैं।

संभागी के रूप में सर्वश्री सत्यपाल शर्मा, सतीश कौशिक, मेहरचन्द मनचंदा तथा सुशील बुडाकोटी का योगदान सराहनीय रहा।

द्वि-दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न

बालाघाट। बालाघाट में परिषद् की प्रान्तीय इकाई का द्वि-दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विभिन्न सत्रों में चर्चा के लिये विषय 'भारतीय संस्कार और आधुनिक विज्ञान', 'साहित्यिक विधाओं पर कार्यशाला' तथा 'राष्ट्र निर्माण और साहित्य' रखे गये थे।

प्रथम दिवस रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा दूसरे दिन रात्रि में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योजना की गयी थी। परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री श्रीधर पराडकर ने प्रान्तीय सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए भारतीय संस्कृति के महत्व तथा उसके संगोपन में साहित्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुए साहित्यकारों को श्रेष्ठ साहित्य रचने का आह्वान किया।

सत्रों में राष्ट्रीय मंत्री श्री रवीन्द्र शुक्ल-झांसी, प्रान्तीय संगठन मंत्री श्री जगदीश गुप्त, डॉ.कान्ता शर्मा, मंडी-हिमाचल प्रदेश, डॉ.राजाराम सोनी-जबलपुर, श्री विजय तिवारी किसलय, डॉ. आशारानी तथा अन्य साहित्यकारों ने चर्चित विषयों पर अपने विचार रखे।

साहित्यिक आयोजन की संयोजक श्रीमती मौसम बिसेन ने बाहर से पधारे साहित्यकार एवं कवियों का शॉल, स्मृति चिन्ह एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। नगर के विशाल प्रांगण में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में प्रो.ओमपाल सिंह निडर, पूर्व सांसद फिरोजाबाद-उ.प्र. श्री रवीन्द्र शुक्ल झांसी-उ.प्र., डॉ.कान्ता शर्मा मंडी-हिमाचल प्रदेश, श्री अर्जुनसिंह चांद -झांसी, श्री रमेशचंद धुआंधार बुरहानपुर, श्री दिनेश याज्ञिक रायसेन, श्री रवि चतुवेदी - सतना ने कविता पाठ किया।

सहरसा में होली मिलन समारोह

अखिल भारतीय साहित्य परिषद सहरसा बिहार द्वारा 13 मार्च को शंकर चौक मंदिर परिसर में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इसमें उपस्थित साहित्यकारों ने वसंत के उमंग में झूमते हुए होली व चुनावी रंग में अपनी कविता का पाठ किया। डॉ. जे. पी. शर्मा की अध्यक्षता व महेन्द्र बंधु के मंच संचालन में संपन्न कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने डॉ. शर्मा रचित 'क्रांतिगाथा' महाकाव्य के लिए हिन्दी भाषा साहित्य परिषद खगडिया द्वारा आरसी प्रसाद सिंह पुरस्कार प्राप्त होने तथा २३ मार्च को साहित्य अकादमी प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश से सम्मानित किये जाने की घोषणा पर हर्ष व्यक्त किया। कविता पाठ पश्चात उपस्थित कवियों ने एक-दूसरे को अबीर -गुलाल लगाकर होली की मुबारकबाद दी। कार्यक्रम में गया प्र० कर्ण, अवधेश झा अवध, आचार्य उमेश चंद, श्यामानंद लाल दास, अमर कुमार गुप्ता, सुमनशेखर आजाद, रामेश्वर ठाकुर, मुरलीधर रमण, केदारनाथ गुप्ता, सागर राम, चन्दशेखर पौद्धार, निखिल राही, मुर्तजा नरियावी, अरविन्द नीरज, चन्द्रशेखर झा आदि ने अपनी-अपनी कविताओं का सस्वर पाठ किया।

❖❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक परिक्रमा

साभार प्राप्ति

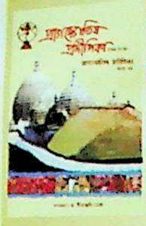

प्रागज्योतिष प्रदीपिका
(असमी)

अखिल भारतीय साहित्य परिषद

रात्रिकालीन संसद
लेखक-नीरजा माधव

प्रभात प्रकाशन
नई दिल्ली

मूल्य - रुपये ९५

यज्ञ से होगा सुनहरा कल
लेखक-डॉ. रोचना भारती

श्रीरंग प्रकाशन प्रा.लि.

मूल्य - रुपये ५००

कहाँ गए घर?
लेखक-मालती शर्मा

क्षितिज प्रकाशन पुणे

मूल्य - रुपये ८०

तुलसीदास का चिंतन
लेखक-डॉ. परशुराम शुक्ल विरही

अनुभव प्रकाशन

मूल्य - रुपये १५०/-

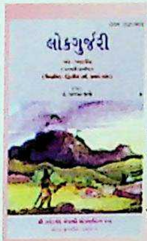

लोक गुर्जरी
(गुजराती)
लेखक-बलवन्त जानी

झवेरचंद मेघानी लोक साहित्य केन्द्र

मूल्य - रुपये १००/-

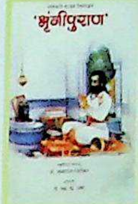

भृंगीपुराण
संपादक-डॉ. अम्बादान रोहड़िया
अनुवादक-डॉ. एस.पी. शर्मा

डिंगळ साहित्य शोध संस्थान, न्यू दिल्ली

मूल्य - रुपये १५०

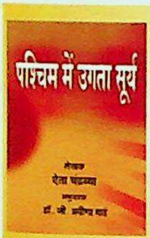

पश्चिम में उगता सूर्य
लेखक-ऐता चंद्रय्या

अनुवादक-डॉ. जी. प्रवीणा बाई
मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद

मूल्य - रुपये २५०

वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ
लेखक-सुधा ओम ढींगरा

शिवना प्रकाशन, सीहोर

मूल्य - रुपये २५०

पाकिस्तान
सेक्युलर राज्य ते धर्मांध राज्य
(मराठी)
लेखक - रमेश पतंगे

हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था
(सा. विवेक)
मूल्य - रुपये १४०

घन आनन्द कवित्त
लेखक-डॉ. राजकुमार उपाध्याय (मणि)

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य - रुपये ५०

स्वामी विवेकानन्द की इतिहास-दृष्टि
लेखक : डॉ. सतीश चन्द्र मित्तल
अखिल भारतीय इतिहास-संकलन योजना

आकाँक्षाएँ
लेखक - डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

सेवा सौरभ संस्थान, निम्बाहेड़ा

मूल्य - रुपये ३००

चीखती टिटहरी हाँफता अलाव
लेखक - डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर'

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

मूल्य - १८० रुपये

जेता
लेखक : क्रांति

पश्चिमांचल प्रकाशन, अहमदाबाद

मूल्य - रुपये ५०

राष्ट्रहित और राजनीति
लेखक - रामनिवास गुप्त

लोकहित भारती समिति, फिरोजाबाद

मूल्य - रुपये [illegible]

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आर एन आई नं. : डी ई एल एच आई एन/२०००/३०६१

स्वामी - अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास, प्रकाशक, मुद्रक - श्रीधर पराड़कर के लिए जैन प्रिंटिंग प्रेस, साबुजी का बाड़ा, दाल बाज़ार, लश्कर ग्वालियर, मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं राष्ट्रोत्थान भवन, माधव महाविद्यालय, नई सड़क, ग्वालियर से प्रकाशित। सम्पादक-क्रांति कनाटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant